अनतोन च्येख़फ़
इश्क़
कामगार प्रकाशन

सर्वोत्तम रूसी साहित्य पुस्तकमाला

अनतोन च्येख़फ़

इश्क़

संपादन

अनिल जनविजय

कामगार प्रकाशन

प्रथम संस्करण, नवम्बर, 2023

अनुवादक : कृष्ण कुमार,
चित्रकार : द० बिस्ती

प्रकाशक की ओर से
यह प्रकाशन **कुत्ते वाली महिला कहानियाँ,** अनतोन च्येख़फ़, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्को, द्वारा प्रकाशित पुस्तक का पुनर्मुद्रण है। इस पुस्तक का नाम बदलकर **इश्क़** कर दिया गया है
साभार : विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्को

ISBN:978-81-966353-5-0

मूल्य: रूपये 150/-

प्रकाशक:
बलराम शर्मा
कामगार प्रकाशन
बी-4838, गली नम्बर-112, संतनगर, बुराड़ी,
दिल्ली-110084, मो. 9212504960

बेबसाइट - www.kamgarprakashan.com
फेसबुक - कामगार प्रकाशन
ई-मेल - kamgarprakashan@gmail.com

मुद्रक:
Comservices, A-73, Group Industrial Area,
Wazirpur, Delhi-110052

अनुक्रम

भूमिका

अनतोन च्येख़फ़ की तीन प्रेम कहानियाँ

अनतोन च्येख़फ़ ने उन्नीसवीं सदी के आठवें दशक के एकदम शुरू में अनतोशा चिख़ोन्ते के नाम से व्यंग्य और हास्य कहानियाँ लिखना शुरू किया था और 1904 के जुलाई महीने के अन्तिम दिनों में जर्मनी में उनका देहान्त हो गया। इस तरह च्येख़फ़ को लेखन के लिए सिर्फ़ 23-24 साल का समय मिला। इस दौरान ही च्येख़फ़ ने इतना ढेर सारा साहित्य रचा कि रूसी भाषा में उनकी रचनावली कुल 28 खण्डों में छपी है, जिनमें से 14 खण्ड उनके द्वारा लिखे गए पत्रों के हैं।

च्येख़फ़ ने व्यंग्य और हास्य कहानियों से अपने लेखन की शुरूआत की थी, लेकिन पाँच-छह साल बाद ही उनकी रचनाओं का चरित्र पूरी तरह से बदल गया। वे गम्भीर मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखने लगे। उनकी कहानियों के पात्र अब हास्यजनक नहीं रहे थे। वे पात्र अब गम्भीर और परस्पर विरोधी विचार व्यक्त करने लगे थे। 1887 में प्रकाशित हुए अनतोन च्येख़फ़ के पहले कहानी-संग्रह का शीर्षक था – गोधूलि बेला में। तब तक च्येख़फ़ की गिनती रूस के साधारण लेखकों में भी नहीं होती थी। उनकी कहानियाँ और व्यंग्य रचनाएँ कुछ ही अख़बारों में छपा करती थीं। लेकिन इस संग्रह में उन्होंने चुन-चुनकर इधर-उधर बिखरी अपनी उन प्रभावशाली कहानियों को प्रस्तुत किया था, जिन्हें पढ़कर पाठक के मन में एक होनहार लेखक की छवि उभर आती थी। आलोचकों और समीक्षकों ने भी उनकी इस किताब की तरफ़ ध्यान दिया और बड़ी अच्छी समीक्षाएँ लिखीं। बस, फिर क्या था। इस संग्रह के प्रकाशन के बाद च्येख़फ़ को रूस के प्रमुख युवा लेखकों में शामिल किया

जाने लगा। उन्हें विशेष प्रसिद्धि 1890 से मिलनी शुरू हुई, जब 'रूस्सकए व्रेमया' (रूसी समय) और 'सिवेरनि वेस्तनिक' (उत्तरी पत्रक) जैसी मोटी साहित्यिक पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ छपनी शुरू हो गईं। पाठकों के बीच लोकप्रिय हो जाने वाली उनकी कहानियों को बार-बार छापा जाने लगा। हर पत्र-पत्रिका में उनकी रचनाएँ दिखाई देने लगीं।

उन्हीं दिनों 'पाठकों से लेखक की एक मुलाक़ात' के दौरान जब एक पाठक ने उनसे पूछा कि समकालीन देसी-विदेशी लेखकों में उन्हें कौन-कौन से लेखक पसन्द हैं तो उन्होंने रूसी लेखकों में ल्येफ़ तलस्तोय और फ़्योदर दसतायेव्स्की को अपना प्रिय लेखक बताया और विदेशी लेखकों में शेक्सपियर और मोपांसा का नाम लिया। उनका कहना था कि इन चारों ही लेखकों ने उनपर भारी प्रभाव डाला है। इन लेखकों से ही उन्होंने यह सीखा है कि केसे जीवन के विभिन्न पक्षों को विभिन्न नज़रियों से देखा जाना चाहिए।

च्येख़फ़ का कहना था — मानव तभी बेहतर हो सकता है, जब मनुष्य के सामने उसकी नैतिकता और मन का दर्पण खोलकर रख दिया जाए। जब मानव आत्मा की गन्दगी, उसके अहम् और उसके स्वभाव की अश्लीलता को मनुष्य के सामने स्पष्ट कर दिया जाए तो वह खुद को सुधारने की कोशिश करेगा। अनतोन च्येख़फ़ ने अपनी कहानियों में मानव स्वभाव की इसी अश्लीलता को साफ़-साफ़ प्रस्तुत किया है। आम तौर पर च्येख़फ़ अपनी कहानियों में किसी एक व्यक्ति को ही नायक बनाकर उसकी मनःस्थिति का विस्तार से वर्णन करते हैं। वह दिखाते हैं कि मानव समाज केसा चितकबरा है और समाज के अनुकूल ही खुद को ढालने के लिए व्यक्ति केसे गिरगिट की तरह बार-बार रंग बदलता है। च्येख़फ़ की कहानियों के नायक-नायिकाएँ अलग-अलग सामाजिक वर्गों के प्रतिनिधि हैं। किसी कहानी में कोई भिखारी नायक है तो किसी कहानी में कोई छात्रा, व्यापारी, क्लर्क, अध्यापक या जमींदार। चेख़फ़ की कहानियों के पात्र पद और पैसे के प्रति भी अलग-अलग रवैया अपनाते हैं। पैसा और पद किस तरह आदमी की नैतिकता और आत्मा पर प्रहार करता है, केसे कुछ लोग कंजूस और हद दरजे के लालची होते हैं और केसे पैसा मानव-स्वभाव की कमज़ोरी बन जाता है, इसका भी च्येख़फ़ ने अपनी कहानियों में सूक्ष्मता से वर्णन किया है। च्येख़फ़ की कहानियों में नाटकीयता तब पैदा होती है, जब व्यक्ति अपने जीवन के ध्येय और आदर्श

को समझने में पूरी तरह से असफल रहता है। मनुष्य के निराशाजनक जीवन को च्येख़फ़ ने बड़ी बारीकी से अपनी कहानियों में उकेरा है।

च्येख़फ़ की सभी कहानियों का मूल तत्त्व है — मानवीयता। उनकी हर कहानी में मनुष्यता ही प्रमुख है। इस दुनिया में, इस समाज में एक अकेले मनुष्य के जीवन की त्रासदी और उसके जीवन के सुखद पक्ष का चित्रण ही किसी भी रचना को कहानी बनाता है। मनुष्य से ही समाज और दुनिया का निर्माण होता है। च्येख़फ़ ने विश्व साहित्य में पहली बार मनुष्य को खुद अपने मन यानी अपनी आत्मा से बातचीत करते हुए दिखाया है। च्येख़फ़ ने ही पहली बार अपनी कहानियों में यह दर्शाया कि मनुष्य का मन ही उसके सभी कृत्यों को संचालित करता है। मनुष्य का मन ही मनुष्य की नैतिकता, लोकाचार और उसके आचार-व्यवहार को संचालित करता है। यह मन ही है, जो समाज को विभिन्न रूप देता है और मनुष्य को कृतघ्न बनाता है या उसे परमार्थी बना देता है।

अनतोन च्येख़फ़ रूसी साहित्य में अपने योगदान का मूल्यांकन बेहद संकोच के साथ करते थे। न सिर्फ़ रूसी पाठकों के बीच बल्कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक पहचान मिलने के बाद भी उनका मानना था कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा है, उसे बहुत जल्द ही भुला दिया जाएगा। हालाँकि, उनके ही समकालीन लेखकों का नज़रिया उनके लेखन को लेकर बिलकुल दूसरा ही था। मकसीम गोरिकी ने 1899 में ही च्येख़फ़ की रचनाओं पर टिप्पणी करते हुए लिखा था — मैं च्येख़फ़ को वास्तव में प्रतिभाशाली और ऐसा बड़ा लेखक मानता हूँ जो न केवल साहित्य के इतिहास में याद किए जाते हैं, बल्कि जो अपने समाज का नज़रिया भी पूरी तरह से उभारकर सामने रख देते हैं।

च्येख़फ़ के ही समकालीन लेखक ल्येफ़ तलस्तोय ने भी च्येख़फ़ के विश्वस्तरीय महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखा था — यथार्थ को च्येख़फ़ अपनी ख़ास नज़र से देखते हैं और फिर उसे इतनी कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं कि पाठक हक्का-बक्का रह जाता है। हाँ, वे उस बेमिसाल प्रतिभा के धनी हैं, जो किसी बेजोड़ कलाकार में ही पाई जाती है। उनके लेखन का महत्त्व इस बात में निहित है कि उनकी कहानियाँ न केवल उनके रूसी पाठकों को, बल्कि दुनिया के किसी भी कोने में बैठे पाठक के मन

को गहरे छू लेती हैं और उसे इतना विचलित कर देती हैं कि वह उस परिस्थिति के बारे में सोचने और विचारने के लिए बाध्य हो जाता है, जिस स्थिति का वर्णन उस कहानी में किया गया है, जो उसने अभी पढ़कर ख़त्म की है। और यही उनकी ख़ासियत है।

और अनतोन च्येख़फ़ के देहान्त के बाद बीते पिछले एक सौ बीस सालों ने च्येख़फ़ के बारे में तलस्तोय और गोरिकी के विचारों की पुष्टि की है। साल-दर-साल पूरी दुनिया में, भारत में भी च्येख़फ़ की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। विश्व साहित्य के विकास में भी उनकी भूमिका और उनके योगदान का ज़्यादा से ज़्यादा उल्लेख किया जाने लगा है। दुनिया भर में रूस के जिन तीन लेखकों का नाम अकसर लिया जाता है, उनमें, बस, फ़्योदर दसतायेव्स्की, ल्येफ़ तलस्तोय और अनतोन च्येख़फ़ ही शामिल हैं।

च्येख़फ़ के जीवनकाल में ही उनकी रचनाओं के अनुवाद विश्व की विभिन्न भाषाओं में छपने लगे थे। च्येख़फ़ ने आर्थिक दिक्क़तों की वजह से उन्नीस साल की उम्र में 1879 में पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्य कहानियाँ लिखना शुरू किया था और सिर्फ़ सात साल बाद 1886 में चेक भाषा में उनकी कहानियों के अनुवादों की पहली किताब प्रकाशित हो गई थी। पाठकों ने उनकी उस किताब को हाथों-हाथ लिया था और आठ महीने में ही उसकी तीन हज़ार प्रतियाँ बिक गई थीं। फिर 1890 में हंगरी में हंगेरियाई भाषा में उनकी कहानियों की किताब प्रकाशित हुई, जिसका शीर्षक था – कसक। इसके बाद अँग्रेज़ी, फ़्रांसीसी और जर्मन भाषाओं में भी उनकी कहानियाँ एक के बाद एक छपकर सामने आने लगीं।

हिन्दी में अनतोन च्येख़फ़ की कहानियाँ बहुत देर से सामने आईं। उन्नीस सौ पचास के दशक में सोवियत संघ के विदेशी भाषा प्रकाशन गृह ने कृष्ण कुमार के अनुवादों में उनकी पन्द्रह कहानियों का पहला संग्रह हिन्दी में प्रकाशित किया था, जिनमें से उनकी तीन प्रेम कहानियाँ इस समय आपके हाथों में हैं। ये सभी तीनों कहानियाँ चेख़फ़ की प्रमुख प्रेम कहानियाँ मानी जाती हैं।

इनमें पहली कहानी है – **'एक कलाकार की कहानी'** रूसी भाषा में अनतोन च्येख़फ़ ने इस कहानी का नाम रखा था – **परछत्ती वाला घर** (House with mezzanine)। च्येख़फ़ ने यह कहानी 1896 में लिखी थी। इस कहानी में च्येख़फ़ के एक चित्रकार मित्र उन घटनाओं को याद कर

रहे हैं, जो उनके साथ सात-आठ साल पहले घटी थीं। च्येख़फ़ ने कहानियाँ लिखने का अपना ही एक विशेष तरीका अपना लिया। 'परछत्ती वाला घर' नामक यह कहानी च्येख़फ़ के लेखन के उसी नए और विशिष्ट तरीके को पेश करती है।

ये कहानी केसे बनी, इसकी भी एक अजीब दास्तान है। 1889 के सितम्बर-अक्तूबर के महीने में च्येख़फ़ की बहन मरीना च्येख़वा ने उनकी मुलाक़ात नई-नई स्कूल टीचर बनी एक युवती लीका मिज़ीनवा से करवाई और यह ख़ूबसूरत, मेधावी और सौम्य युवती अकसर उनके घर आने-जाने लगी। 1891 की गर्मियों में च्येख़फ़ परिवार आराम करने के लिए अलिक्सीना गाँव में बने एक दाचा में गए थे। लीका मिज़ीनवा उनके साथ थी। वहीं उसकी मुलाक़ात जागीरदार कलअसोव्स्की से हुई, जिनका बगीमअवा नामक रियासत में बड़ा-सा महलनुमा घर था। जब कलअसोव्स्की को लीका से यह मालूम हुआ कि च्येख़फ़ उसी की रियासत के एक गाँव में आराम कर रहे हैं और एक साधारण से घर में रह रहे हैं तो उसने च्येख़फ़ को अपने महलनुमा मकान में आकर रहने का निमन्त्रण दिया। च्येख़फ़ ने उसका न्यौता स्वीकार कर लिया। कलअसोव्स्की का यह मकान ही परछत्ती वाला वह घर है, जिसका ज़िक्र इस कहानी में है। कलअसोव्स्की कहानी के पात्र बिलाकूरफ़ में बदल गया और लीका को च्येख़फ़ ने कहानी की नायिका लीदिया वलचानिनवा बना दिया।

'परछत्ती वाला घर' दरअसल यह एक अधूरे प्रेम की कहानी है। यह कहानी एक चित्रकार सुना रहा है, जो अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने के लिए अपने परिचित जागीरदार के घर आया हुआ है। लेकिन लम्बे समय तक उसे अकेले रहना पड़ता है। इसी दौरान उसकी मुलाक़ात वलचानिनफ़ परिवार से हो जाती है। माँ और दो बेटियों वाले इस परिवार में बड़ी बेटी काफ़ी सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता है, वहीं छोटी बेटी आलसी है, लेकिन घनघोर पाठिका है। बड़ी बेटी लीदिया के साथ जहाँ कथानायक का रिश्ता समाज के जीवन के सिलसिले में आपसी विचारों में असहमति को लेकर विकसित नहीं हो पाया, वहीं उसकी छोटी बहन जेन्या के साथ रिश्ते में आपसी प्रेम और सहानुभूति के बीज पैदा हो गए। जेन्या ने अपने इस प्रेम की बात लीदिया को बता दी। लीदिया के साथ चूँकि चित्रकार के नज़रिए में असहमति थी,

इसलिए वह अपनी छोटी बहन को ऐसे आदमी के साथ प्रेम करने से रोकना चाहती है। इसके लिए वह अपनी बहन को आगे की पढ़ाई करने के लिए तुरन्त यूरोप के एक देश में भेज देती है, जहाँ से जेन्या कभी वापिस रूस नहीं लौटती। लीदिया अपनी माँ येकातिरीना पाफ़लवना के साथ अकेले ही जीवन बिताने के लिए बाध्य हो जाती है।

इस कहानी में च्येख़फ़ ने तत्कालीन रूस के कुलीन वर्ग के जीवन को चित्रित किया है। च्येख़फ़ कुलीन वर्ग के जीवन को गहराई से नहीं जानते-समझते थे, क्योंकि वे ख़ुद ल्येफ़ तलस्तोय की तरह कुलीन वर्ग के नहीं थे। बेहद ग़रीबी में जीवन बिताने के बाद वे निम्न-मध्यवर्ग में शामिल हुए थे। इसलिए कुलीन वर्ग के जीवन का बड़ा ऊपरी-ऊपरी सा चित्रण इस कहानी में दिखाई देता है। तलस्तोय के उपन्यास 'आन्ना करेनिना' में जितनी गहराई से कुलीन वर्ग के जीवन को रचा गया है, वैसी गहराई इस कहानी में नहीं दिखाई देती। हाँ, च्येख़फ़ यह दिखाने में सफल हुए हैं कि निष्क्रियता और अकर्मण्यता रूस के तत्कालीन कुलीन वर्ग के प्रमुख गुण थे। कुलीन लोग शेख़ी बघारने और डींग मारने के अलावा और कुछ नहीं किया करते थे। अधिकांश रूसी बुद्धिजीवी वर्ग भी अपनी दार्शनिकता का प्रदर्शन करते हुए इतराने के अलावा और कुछ नहीं करते थे।

च्येख़फ़ ने प्रेम कहानियाँ कम ही लिखी हैं। उनकी कुल 466 रचनाओं में रूसी साहित्यविदों को बारह प्रेम कहानियाँ मिली हैं। उन बारह कहानियों में से तीन या चार कहानियाँ ही ऐसी हैं, जिन्हें स्पष्ट तौर पर प्रेमकहानी कहा जा सकता है। इस किताब में शामिल तीनों कहानियों में से उनकी दूसरी प्रेम कहानी भी ऐसी ही है। च्येख़फ़ की दूसरी प्रेम कहानी का शीर्षक है – **'कुत्ते वाली महिला'**। च्येख़फ़ ने ख़ुद ही इस कहानी को यह शीर्षक दिया था। हालाँकि हिन्दी में च्येख़फ़ की कहानियों के प्रमुख अनुवादक कृष्ण कुमार ने कहानी का अनुवाद करते हुए इस कहानी का नाम बदलकर 'रोमांस' कर दिया है। यह कहानी च्येख़फ़ ने 1898 में लिखी थी। तब च्येख़फ़ अपनी दमे की बीमारी की वजह से डॉक्टरों की सलाह पर यालता में जाकर रहने लगे थे। यालता–रूस के क्रीमिया प्रदेश का एक प्रमुख शहर है, जो समुद्र के किनारे बसा हुआ है। यह शहर रूस का पर्यटन-स्थल माना जाता है, चूँकि यहाँ की आबोहवा गर्म है। रूस में, जहाँ आम तौर पर साल में नौ महीने

भयानक ठण्ड पड़ती है, लोग गर्मियों में आराम करने के लिए इसी तरह के गर्म शहरों में चले जाते हैं और वहाँ अपनी छुट्टियाँ बिताते हैं। आम तौर पर जब स्त्री-पुरुष अकेले होते हैं, आराम करने के मूड में होते हैं, छुट्टियाँ बिता रहे होते हैं तो उनमें परस्पर आकर्षण पैदा हो जाता है और वे एक-दूसरे के साथ इश्क़बाज़ी करने लगते हैं। यह एक सामान्य मानवीय प्रवृत्ति है। फिर रूस में तो फ़्री-सेक्स का चलन है। सेक्स के मामले में रूसी लोग हम भारतीयों की तरह बहुत संकोची नहीं होते। किसी आरामगाह में या पर्यटन स्थल पर इस तरह के परस्पर आकर्षण को रूस में 'कुरोर्तनी रमान' यानी आरामगाह में होनेवाला प्रेम कहा जाता है।

यालता भी आरामगाह शहर है। सारे रूस के सैलानी आराम करने के लिए वहाँ पहुँचते हैं। च्येख़फ़ ने अपने यालता शहर का चाल-चलन देखकर 1898 में यह कहानी लिखी थी, जो उनकी सबसे प्रसिद्ध प्रेमकहानी मानी जाती है। कहानी का विषय ऊपरी तौर पर 'कुरोर्तनी रमान' यानी आरामगाह में पैदा होनेवाला परस्पर आकर्षण या प्रेम है, पर च्येख़फ़ की यह कहानी बहुत गहरी है। यह कहानी बताती है कि हमारा समाज अन्धा और बहरा है, उसे लोगों के प्यार की गहराई और सच्चाई से कोई लेना-देना नहीं होता। तब दो प्यार करने वालों के जीवन में सामाजिक निन्दा, चिमगोई और ठिठोलियों के डर से ना-उम्मीदी और लाचारी की हालत पैदा हो जाती है।

इस तरह यह कहानी दो विषयों को लेकर आगे बढ़ती है। पहला विषय है स्त्री और पुरुष के बीच परस्पर आकर्षण और प्रेम और दूसरा विषय है समाज में उस प्रेम के बारे में पैदा होने वाली प्रतिक्रिया। ख़ासकर तब, जब परस्पर प्रेम करने वाले दोनों व्यक्तियों का अलग-अलग परिवार भी हो और दोनों विवाहित भी हों। दोनों को ही यह फ़ैसला करना पड़ता है कि उनके लिए ज़रूरी क्या है – सामाजिक प्रतिष्ठा या निजी सुख और व्यक्तिगत सम्बन्ध।

इस संग्रह में शामिल तीसरी कहानी का नाम है – **डार्लिंग**। रूसी भाषा में च्येख़फ़ ने इस कहानी का नामकरण किया था – दूशेच्का यानी 'लाड़-प्यार से भरी स्त्री'। यह कहानी च्येख़फ़ की अन्तिम तीन-चार रचनाओं में से एक है, जो उन्होंने 1899 में लिखी थी। रूस में इसे च्येख़फ़ की बेहतरीन कहानी माना जाता है, जिसमें स्त्री के विभिन्न रूप दर्शाए गए हैं। किसी भी स्त्री

में ममता, आत्मीयता, स्नेह, ममत्व और अपनत्व का अथाह सागर होता है। डार्लिंग कहानी की नायिका भी ऐसी ही है, जो अपने भीतर की ममता और प्रेम दूसरों पर उँड़ेल देती है। वह खुद अपने लिए प्रेम नहीं चाहती, बल्कि दूसरों पर अपना प्यार, अपना मोह और नेह लुटा देती है। दूसरे लोगों को सुख देना ही उसका प्रमुख उद्देश्य है। वह इसीलिए जीवन जीती है ताकि दूसरों को सुखी बना सके। च्येख़फ़ ने अपनी इस कहानी में किसी स्त्री के प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण किया है और पाठक के मन में स्त्री जाति के प्रति गहरी सहानुभूति पैदा करने की चेष्टा की है।

इनके अलावा च्येख़फ़ की अन्य प्रेम कहानियों के नाम हैं- साहित्य का अध्यापक, एक छोटा-सा मज़ाक, इओनिच, तितली, गले में लटकी आन्ना, दुलहन, डिबिया में बन्द मनुष्य, करौन्दा और प्रेम के बारे में। इस तरह च्येख़फ़ ने कुल बारह प्रेम कहानियाँ लिखी हैं। उनकी प्रेम कहानियों का एक संग्रह हम जल्दी ही आपके सामने प्रस्तुत करेंगे। वैसे च्येख़फ़ की सभी प्रेम कहानियों का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है।

इन तीन कहानियों के हिन्दी अनुवादक कृष्ण कुमार के बारे में हमने जानकारी लेने की काफ़ी कोशिश की, लेकिन हमें अभी तक उनका कोई अता-पता नहीं मिला है। हो सकता है कि इस किताब के अगले संस्करण तक हमें कृष्ण कुमार जी के बारे में जानकारी मिल जाए और उनका कोई चित्र भी मिल जाए, तो हम अगले संस्करण में उन्हें प्रस्तुत करेंगे। हमें आशा है कि चेख़फ़ की ये कहानियाँ आपको पसन्द आएँगी।

अनिल जनविजय
मसक्वा विश्वविद्यालय, मसक्वा, रूस।

एक कलाकार की कहानी

यह छः या सात साल पहले की बात है जब मैं 'त' नामक सूबे के एक ज़िले में बिलाकूरफ़ नामक एक नौजवान ज़मींदार की ज़मींदारी में रहता था। यह व्यक्ति सुबह बहुत जल्दी उठता, किसानों का सा एक कोट पहनता, शाम को बीयर पीता और मुझसे हमेशा इस बात की शिकायत किया करता कि उसे कभी भी किसी से कोई हमदर्दी नहीं मिली है। वह बाग़ में बने हुए अपने बंगले में रहता था और मैं मालिक के पुराने मकान के एक बड़े कमरे में, जिसमें खम्भे लगे हुए थे। इस कमरे में एक बड़ा सोफ़ा, जिसपर मैं सोया करता था तथा एक मेज़, जिसपर मैं ताश खेला करता था, इनके अलावा और कोई सामान नहीं था। पुरानी अँगीठियों में हमेशा, यहाँ तक कि जब मौसम बिल्कुल शाँत होता तब भी, एक भनभनाहट की सी आवाज़ आया करती थी। कड़कते हुए तूफ़ानों में सारा घर हिल उठता था और ऐसा लगता था मानो टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा। इससे कुछ डर सा मालूम होता था, खासतौर से रात को जब अचानक बिजली की चमक से मकान की दसों बड़ी खिड़कियां चमक उठती थीं।

स्वभाव से ही हमेशा आलसी होने के कारण मैं कुछ भी काम नहीं करता था। मैं घण्टों तक बैठा हुआ खिड़की के बाहर आसमान, चिड़ियों, चौड़ी सड़क आदि की तरफ़ देखा करता था। डाक द्वारा जो कुछ भी पढ़ने का मसाला मिलता, सब पढ़ता और सोता रहता। कभी-कभी मैं घर से बाहर निकल जाता और शाम गहरी होने तक इधर-उधर घूमता रहता।

एक दिन जब मैं घर लौट रहा था तो अचानक एक ऐसी जगह जा निकला जो मेरे लिए अपरिचित थी। सूरज डूब रहा था और फूले हुए राई के खेतों पर शाम की परछाइयाँ लम्बी होने लगी थीं। पास-पास लगे हुए, पुराने बहुत ऊँचे फर के पेड़ों की दो लम्बी क़तारें मज़बूत दीवालों की तरह खड़ी हुई सड़क के दृश्य को अपूर्व और अवसादपूर्ण बना रही थीं। आसानी से घर की बाड़ लांघ कर मैं सड़क पर चलने लगा। चलते समय फर की नुकीली पत्तियों पर, जिनकी ज़मीन पर कोई दो इंच मोटी परत होगी, मेरे पैर फिसल पड़ते थे। चारों ओर स्तब्धता और अन्धकार का साम्राज्य था। केवल कहीं-कहीं ऊंचे पेड़ों की चोटियों पर सुनहली रोशनी काँप उठती थी और मकड़ी के जालों में पड़ कर इन्द्रधनुष का सा समाँ उत्पन्न कर देती थी। वहाँ एक तीखी, लगभग दम घोट देने वाली फर की गन्ध भर रही थी। उसके बाद मैं नींबू के पेड़ों वाली एक लम्बी सड़क पर मुड़ा। यहाँ भी सब कुछ सुनसान और पुराना था। पिछले साल की गिरी हुई पत्तियाँ मेरे पैरों के नीचे पड़ कर मानो कराह उठती थीं और शाम के धुंधलके में पेड़ों के बीच परछाइयाँ नाच उठती थीं। दायीं तरफ़ के पुराने बाग़ से गरुड़ पक्षी की धीमी असन्तुष्ट आवाज़ आई। यह चिड़िया खुद भी काफ़ी बुड्ढी होगी। परन्तु अन्त में नींबू के पेड़ों की सड़क समाप्त हुई। मैं एक पुराने दो मंज़िले सफ़ेद घर के बराबर चल रहा था जिसके आगे एक बरामदा था। वहाँ अचानक मुझे एक अहाता, एक बड़ा तालाब, एक स्नान-गृह, हरे बेदों का एक झुरमुट, और दूर किनारे पर एक गाँव दिखाई दिया। इस गाँव के ऊँचे और संकरे गिरजाघर के गुम्बद के ऊपर लगा हुआ क्रॉस डूबते हुए सूरज की रोशनी में चमक रहा था। एक क्षण के लिए मुझे ऐसा लगा कि मुझे ऐसा दृश्य दिखाई दे रहा है जो अत्यन्त प्रिय और चिर-परिचित सा है, मानो मैंने अपने बचपन में कभी इस दृश्य को देखा हो।

सफ़ेद पत्थर के फाटक पर जिसमें होकर अहाते से बाहर खेतों की ओर जाने का रास्ता था, दो लड़कियाँ खड़ी हुई थीं। इस फाटक के पुराने ढंग के ठोस खम्भों पर शेरों की मूर्तियाँ थीं। उन लड़कियों में से एक, जो बड़ी थी, दुबली-पतली, गोरे रंग की अत्यन्त सुन्दर लड़की थी। उसके भूरे बाल घने और लहरदार तथा मुंह छोटा और जिद्दी सा था। उसके मुख पर एक कठोर भाव झलक रहा था। उसने मेरी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। दूसरी लड़की जो अभी छोटी थी, अधिक से अधिक सत्रह या अठारह साल की, दुबली-पतली, और गोरी थी। उसका मुख चौड़ा और आँखें बड़ी थीं। जैसे ही मैं बगल से होकर गुज़रा, उसने ताज्जुब से मेरी तरफ़ देखा, अँग्रेज़ी में कुछ कहा और परेशान हो उठी। मुझे ऐसा लगा कि इन दोनों सुन्दर मुखड़ों से भी मैं बहुत दिनों से परिचित हूँ। और मैं यह अनुभव करता हुआ घर लौटा मानो मैंने कोई सुन्दर सपना देखा हो।

इस घटना के कुछ ही समय बाद जब मैं और बिलाकूरफ़ घर के पास टहल रहे थे, अचानक एक गाड़ी अहाते के भीतर, घास के ऊपर से होती हुई आई। उसमें उन्हीं लड़कियों में से एक लड़की बैठी हुई थी। यह बड़ी लड़की थी। वह कुछ किसानों के लिए चन्दा माँगने आई थी जिनकी झोपड़ियाँ जल गई थीं। अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक और विशद रूप में, बिना हमारी तरफ़ देखे हुए, उसने बताया कि सियानवा गाँव में कितने घर जल गए थे, कितने आदमी, औरतें और बच्चे बिना घर-द्वार के भटक रहे थे तथा सहायता-समिति ने, जिसकी कि वह सदस्या थी, काम शुरू करने के लिए कई उपाय बताए थे। हमारे दस्तख़तों के लिए चन्दे की लिस्ट हमारी तरफ़ बढ़ा कर उसने वापस ले ली और फ़ौरन विदा होने की तैयारी करने लगी।

"आप हमें बिल्कुल ही भूल गए प्योतर पित्रोविच," उसने बिलाकूरफ़ से हाथ मिलाते हुए कहा। "कभी अवश्य आइए और अगर महाशय 'न' (उसने मेरा नाम लिया) अपनी कला के प्रशंसकों से परिचय प्राप्त करने के इच्छुक हों और आकर हम लोगों से मुलाक़ात करना चाहें तो माँ को और मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।"

मैंने अपनी सहमति प्रकट की। जब वह चली गई तो प्योतर पित्रोविच मुझे उसके बारे में बताने लगा। उसने बताया कि वह लड़की एक अच्छे खानदान की है तथा उसका नाम लीदिया वलचानिनवा है और वह ज़मींदारी, जहाँ वह अपनी माँ और बहन के साथ रहती है, तालाब के दूसरे किनारे के गांव की तरह शिलकोफ़का कहलाती है। पहले उसका पिता मास्को में एक उच्च्य पदाधिकारी था और 'प्रिवी कौंसलर' के पद पर रहते हुए मरा था। हालाँकि वे काफ़ी धनवान थीं परन्तु गरमी और जाड़े भर कहीं दूसरी जगह न जाकर वहीं, अपनी ज़मींदारी में ही रहती थीं। लीदिया अपने ही गाँव के ग्रामसभा के स्कूल में अध्यापिका थी। उसे पच्चीस रूबल मासिक वेतन मिलता था। अपने वेतन के अतिरिक्त वह अपने ऊपर एक भी पैसा ख़र्च नहीं करती थी। उसे इस बात का गर्व था कि वह अपनी जीविका स्वयं चलाती थी।

"बड़ा मज़ेदार परिवार है," बिलाकूरफ़ बोला, "चलो, एक रोज़ उनके यहाँ चलें। वे तुम्हें देख कर बहुत खुश होंगी।"

एक छुट्टी वाले दिन दोपहर को हमें वलचानिनफ़ परिवार का ध्यान आया और हम लोग उनसे मिलने शिलकोफ़का पहुँचे। वे लोग—माँ और दोनों बेटियाँ— घर पर थीं। माँ जिसका नाम येकातिरीना पाफ़लवना था, किसी समय सुन्दर रही होगी परन्तु अब दमे की बीमारी, निराशा व अस्थिरता की शिकार थी और अवस्था से अधिक निर्बल हो चुकी थी।

उसने चित्रकला के बारे में बातें करके मेरा मनोरंजन करने का प्रयत्न किया। अपनी बेटी से यह सुन कर कि मैं शिलकोफ़का आ सकता हूँ उसने जल्दी से मेरे बनाए हुए प्राकृतिक दृश्यों के दो या तीन चित्रों की याद की थी जो उसने मास्को की नुमायश में देखे थे और अब मुझसे पूछने लगी कि मैं उनके द्वारा क्या प्रदर्शित करना चाहता था? लीदिया, या लीदा जैसे कि वे सब उसे पुकारते थे, मेरे बनिस्बत बिलाकूरफ़ से ज़्यादा बातें कर रही थी। गम्भीर होकर और बिना मुस्कराए उसने उससे पूछा कि वह ग्रामसभा में काम क्यों नहीं करता और वह ग्रामसभा की एक भी बैठक में उपस्थित क्यों नहीं हुआ।

"यह ठीक नहीं, प्योतर पित्रोविच," उसने उसे डांटते हुए कहा, "यह ठीक नहीं है, यह बहुत बुरी बात है।"

"यह सच है, लीदा, यह सच है," माँ ने स्वर में स्वर मिलाया, "यह ठीक नहीं है।"

"हमारा पूरा ज़िला बालागिन के हाथ में है," लीदा मेरी तरफ़ मुखातिब होकर कहने लगी, "वह ग्रामसभा के बोर्ड का चेयरमैन है और उसने ज़िले के सभी पदों को अपने भतीजों और दामादों में बाँट रखा है और वह जो चाहता है सो करता है। उसका विरोध होना ही चाहिए। नौजवानों को एक मज़बूत पार्टी बनानी चाहिए लेकिन आप देख रहे हैं कि हम लोगों के नौजवान कैसे हैं। यह शर्म की बात है प्योतर पित्रोविच!"

जब वे लोग ग्रामसभा की बातें कर रहे थे, छोटी बहन जेन्या खामोश थी। उसने गम्भीर वार्तालाप में कोई भाग नहीं लिया। उसके घर वाले अभी उसे बच्ची ही समझते थे और बच्चों की तरह ही वह अपने घरेलू नाम मिसूस द्वारा ही पुकारी जाती थी क्योंकि जब वह छोटी सी

बच्ची थी तब अपनी अँग्रेज़ी मास्टरनी को मिसेज़ के बजाय इसी नाम से पुकारा करती थी। वह पूरे समय तक मेरी तरफ़ जिज्ञासापूर्वक ताकती रही और जब मैंने एल्बम में लगे हुए चित्रों की तरफ़ देखा तो उसने मुझे बताया : "ये चाचा हैं ... ये धर्म पिता हैं" ये बातें उसने चित्रों पर उंगली फेरते हुए बताईं। जब वह बता रही थी तो उसने एक बच्चे की तरह मुझे अपने कन्धों से स्पर्श किया और मुझे उसके कोमल उभार रहित वक्ष, उसके सुन्दर कन्धों, उसकी चोटी और पटके से अच्छी तरह कसी हुई पतली छोटी सी देह को नज़दीक से देखने का मौक़ा मिला।

हम लोगों ने टेनिस और गेंद बल्ला खेला, बाग में घूमे, चाय पी और फिर देर तक बैठे खाना खाते रहे। अपने उस विशाल खम्भों वाले खाली कमरे की अपेक्षा मुझे यह छोटा सा सुखदायी मकान अधिक अच्छा लगा जिसकी दीवालों पर चित्र नहीं थे और जहाँ नौकरों को 'तू' के बजाय 'तुम' कहा जाता था। मुझे वहाँ की प्रत्येक वस्तु में नवीनता और ताज़गी दिखाई दी। इसके लिए लीदा और मिसूस धन्यवाद की पात्र थीं। वहाँ की हरेक चीज़ से सुरुचि प्रकट हो रही थी। खाना खाते समय लीदा फिर बिलाकूरफ़ से ग्रामसभा के बारे में बातें करने लगी। साथ ही उसने बालागिन और स्कूली पुस्तकालयों की भी चर्चा की। लीदा एक उत्साही और सच्ची लड़की थी जिसके अपने सिद्धान्त थे और उसकी बातें सुनने में बड़ी अच्छी लगती थीं हालांकि वह बहुत ज़्यादा और कुछ ऊँची आवाज़ में बोलती थी — शायद इस वजह से कि वह स्कूल में बातें करने की आदी थी। दूसरी तरफ़ प्योतर पित्रोविच, जिसने अपने विद्यार्थी जीवन से ही किसी भी बातचीत को वाद-विवाद की तरफ़ मोड़ देने की आदत डाल रखी थी, बड़े उलझे हुए ढंग से क्लिष्ट और लम्बी-चौड़ी भूमिका बाँध कर निश्चित रूप से अपने को चतुर और प्रगतिशील विचारों वाला सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा था। बातचीत

करने में हाथ फटकारते समय उसने चटनी की प्याली लुढ़का दी जिससे मेज़पोश पर चटनी का एक बड़ा ताल सा बन गया परन्तु मेरे सिवा और किसी ने भी इस तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

जब हम घर की तरफ़ चले तो चारों तरफ़ अंधकार और शांति का साम्राज्य था।

"कितने सभ्य हैं, इस बात से नहीं कि उन्होंने चटनी नहीं फैलाई, बल्कि इस बात से कि जब दूसरे ने ऐसा किया तो उन्होंने उसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया", बिलाकूरफ़ ने गहरी साँस लेते हुए कहा। "बेशक, एक बहुत सभ्य और सुसंस्कृत परिवार है! अच्छे लोगों से मेरा मेल-जोल नहीं रहा है, बिल्कुल नहीं रहा! यह सब केवल काम के ही कारण है — केवल काम के।"

उसने बताया कि अगर कोई आदर्श ज़मींदार बनना चाहता है तो उसे कितनी सख़्त मेहनत करनी पड़ती है। और मैंने सोचा कि वह कितना सुस्त और काहिल आदमी है! जब कभी वह किसी गम्भीर विषय पर बातें करता तो बहुत कोशिश करने पर भी ए-ए-ए का उच्चारण करता रह जाता था। वह जिस तरह बोलता था, उसी तरह काम भी करता था — धीरे-धीरे, हमेशा देर से और समय निकल जाने पर। मुझे उसकी व्यावहारिक योग्यता पर बहुत थोड़ा विश्वास था, शायद केवल इस कारण से कि जब मैं उसे डाक में छोड़ने के लिए खत देता तो वह उन्हें हफ़्तों अपनी जेब में डाले फिरता था।

"सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है," वह मेरे साथ-साथ चलता हुआ बड़बड़ाता रहा, "सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है कि आदमी काम तो करता है परन्तु उसे किसी से भी हमदर्दी नहीं मिलती, किसी से भी नहीं।"

2

मैं वलचानिनफ़ परिवार में आने जाने लगा। हमेशा की तरह मैं बरामदे की सबसे नीची सीढ़ी पर बैठा हुआ था। मैं अपने आपसे बहुत असन्तुष्ट हो उठा था। मैं इस विचार से दुखी था कि मेरी ज़िंदगी इतनी जल्दी और बिना किसी आकर्षण के बीती जा रही है और मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो मैं अपने सीने में से दिल को निकाल डालूं जो इतना भारी होता जा रहा था। और इसी बीच मैंने बरामदे में बातचीत, जनानी पोशाकों की सरसराहट और किसी किताब के पन्नों के पलटे जाने की आवाज़ सुनी। मैं जल्दी ही इस बात को सोचने का आदी हो चला था कि दिन में लीदा के पास मरीज़ आते थे, वह किताबें दिया करती थी और कभी-कभी बिना टोप के एक छाता लिए गाँव में चली जाती थी और शाम को ग्रामसभा के और स्कूलों के बारे में ऊंची आवाज़ में बातें किया करती थी। वह दुबली, पतली, सुन्दर, निश्चित रूप से कठोर लड़की जिसका मुख छोटा परन्तु सुडौल था, हमेशा जब कभी गम्भीर विषयों पर बातें छिड़ जाती थीं रूखेपन के साथ बोल उठती थी :

"ये आपके मतलब की बातें नहीं हैं।"

वह मुझे पसन्द नहीं करती थी। मैं उसे इसलिये नापसन्द था क्योंकि मैं प्राकृतिक दृश्यों का चित्र बनाने वाला चित्रकार था और अपने चित्रों में किसानों के दुखों का चित्रण नहीं करता था और यह कि, जैसा कि उसका विचार था, मैं उन बातों की तरफ़ से उदासीन था जिसमें उसकी गम्भीर आस्था थी। मुझे याद है कि जब मैं बैकाल झील के किनारे यात्रा कर रहा था, मेरी मुलाकात बूर्यात जाति की एक लड़की से हुई थी जो घोड़े पर सवार थी और चीनी नमूने की नीली कमीज़ और

पाजामा पहने हुई थी। मैंने उससे पूछा कि वह अपनी नलकी मुझे बेचेगी। जब हम लोग बात कर रहे थे तो वह मेरे यूरोपियन चेहरे और टोप की तरफ़ नफ़रत से देख रही थी और क्षण भर में ही मुझसे बात करने में ऊब उठी। उसने अपने घोड़े को चाबुक मारा और उसे दौड़ाती हुई चली गई। बिलकुल उसी तरह लीदा भी मुझे भिन्न विचारों का समझने के कारण नफ़रत करती थी। उसने बाहरी तौर पर मेरे प्रति अपनी अरुचि को कभी भी प्रकट नहीं होने दिया था और मैं इसका अनुभव करता था। बरामदे की सबसे नीची सीढ़ी पर बैठा हुआ मैं चिड़चिड़ा उठा और बोला कि जब कोई स्वयं डाक्टर नहीं है तो किसानों की डाक्टरी करना उन्हें धोखा देना है और यह कि अगर पास में दो हज़ार हैक्टर ज़मीन हो तो कोई भी आसानी से उदार और दानी बन सकता है।

दूसरी तरफ़ इस समय उसकी बहन मिसूस निर्द्वन्द्व थी। वह भी मेरी ही तरह अपना समय आरामतलबी में बिताया करती थी। जब वह सुबह सोकर उठती तो फ़ौरन एक किताब उठा लेती और बरामदे में पड़ी हुई एक गहरी आराम कुर्सी पर बैठ कर पढ़ने लगती। उसके पैर ज़मीन से कुछ ऊपर उठे रहते। या वह अपनी किताब लेकर नीबू के कुंजों में जा छिपती या बाहर खेतों की तरफ़ निकल जाती। वह अपना पूरा दिन किताब पर ध्यान लगाये हुए काट देती। कोई भी व्यक्ति थकी हुई, धुंधली आँखों तथा उसके चेहरे के अत्यधिक पीलेपन को देख कर अनुमान लगा सकता था कि निरन्तर की इस पढ़ाई ने उसके दिमाग़ को कितना थका डाला है। जब मैं आता तो वह थोड़ा सा शर्माती, अपनी किताब बन्द कर देती और अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से मेरे चेहरे की तरफ़ देखती हुई, जो कुछ भी घटना घटी होती, बड़े उत्साहपूर्वक सुनाती —

मिसाल के तौर पर यह कि नौकरों के बड़े कमरे की चिमनी में आग लग गई या यह कि एक आदमी ने तालाब से बहुत बड़ी मछली पकड़ी थी आदि। साधारण दिनों में वह आम तौर से एक हल्का ब्लाऊज़ और एक गहरा नीला घाघरा पहनती। हम दोनों साथ-साथ घूमने जाते। मुरब्बा बनाने के लिए चेरी इकट्ठी करते, नाव पर घूमते। जब वह किसी फल को तोड़ने के लिए उछलती या नाव की पतवार चलाती तो उसकी पतली और दुबली बाहें कमीज़ की पारदर्शक आस्तीनों में से दिखाई देने लगतीं। या मैं कोई चित्र बनाता और वह मेरे पास खड़ी हुई मुग्ध होकर उसे देखती रहती।

जुलाई के अन्त में एक इतवार को मैं सुबह नौ बजे से लगभग वलचानिनफ़ परिवार से मिलने के लिये आया। मैं सफ़ेद कुकुरमुत्तों की तलाश में, घर से काफ़ी दूर रहते हुए बाग़ में घूमने लगा। इन गर्मियों में सफ़ेद कुकुरमुत्ते बहुत पैदा हुए थे। मैं उन्हें ढूंढ़ता फिर रहा था और लकड़ियों से इन जगहों पर निशान लगा रहा था जहाँ मुझे कुकुरमुत्ते मिले थे ताकि बाद में जेन्या के साथ आकर उन्हें ले जा सकूं। हवा में गर्मी थी। मैंने जेन्या और उसकी माँ को छुट्टियों के दिन वाली हल्की पोशाक पहने हुए गिरजे से घर लौटते हुए देखा। जेन्या अपनी टोपी पकड़ कर उसे हवा में उड़ने से बचा रही थी। उसके बाद मैंने उन्हें बरामदे में चाय पीते हुए सुना।

मुझ जैसे लापरवाह आदमी के लिए, जो अपनी आरामतलबी के लिए सन्तोषजनक कारण ढूंढ़ने की कोशिश करता रहता है, गर्मियों में अपने ग्रीष्म-भवनों में रहते हुए छुट्टियों के दिनों की सुबह, एक विशेष आकर्षण रखती है। जब हरियाली से परिपूर्ण उद्यान, जिसमें अभी ओस की नमी छाई रहती है, सूरज की रोशनी में चमकता और प्रसन्नता से

जगमगाता रहता है, घर के पास उगे हुए मिनजेनेट और करवीर के फूलों की सुगन्ध से वातावरण महकता रहता है, जब नौजवान गिरजे से वापस लौट बाग़ में बैठ कर नाश्ता करते होते हैं उनकी पोशाकें सुन्दर और आकर्षक होती हैं और जब हरेक इस बात को जानता है कि ये सब स्वस्थ, सन्तुष्ट और सुन्दर व्यक्ति दिन भर कुछ भी काम नहीं करेंगे तो हरेक की यह इच्छा होती है कि हमारा सम्पूर्ण जीवन इसी तरह व्यतीत होता। इस समय मेरे मन में भी यही विचार उठ रहे थे और मैं इस बात के लिए तैयार होकर बाग़ में घूमने लगा कि मैं पूरे दिन, गर्मियों भर इसी तरह निरुद्देश्य और बेकार घूमता रहूँ।

जेन्या एक डलिया लिए बाहर आई। उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था मानो वह जानती थी कि मैं उसे बाग़ में मिलूंगा या उसे इस बात का पूर्वाभास था। हम लोगों ने कुकुरमुत्ते इकट्ठे किए और बातें कीं और जब उसने एक सवाल पूछा तो मेरा चेहरा देखने के लिए कुछ क़दम आगे बढ़ आई।

"कल गाँव में एक चमत्कार हो गया", उसने कहा। "वह लंगड़ी औरत पेलागेया साल भर से बीमार थी। किसी भी डाक्टर या दवाई से कोई फ़ायदा नहीं हुआ था। परन्तु कल एक बुढ़िया आई और उसने उसके ऊपर कुछ मन्त्र सा पढ़ा और वह ठीक हो गई।"

"यह कोई बड़ी बात नहीं है," मैं बोला। "तुम्हें सिर्फ़ बीमार आदमियों और बुढ़ियों में ही चमत्कार नहीं ढूंढ़ना चाहिये। क्या तन्दुरुस्ती चमत्कार नहीं है? और क्या ज़िन्दग़ी स्वयं चमत्कार नहीं है? जो कुछ भी हमारी समझ से परे है, वह चमत्कार है।"

"और क्या तुम उससे भयभीत नहीं होते जो हमारी समझ से परे है?"

''नहीं! समझ में न आने वाली घटनाओं का सामना मैं बहादुरी से कर सकता हूं और मैं उनसे प्रभावित भी नहीं होता। मैं उन सबसे ऊपर हूँ। मनुष्य को चाहिये कि वह अपने को शेर, चीते, तारे तथा प्रकृति की सब वस्तुओं से श्रेष्ठ समझे तथा उन चीज़ों से भी जो चमत्कारपूर्ण दिखाई देती हैं तथा उसकी समझ से परे हैं। अगर वह ऐसा नहीं समझता तो वह मनुष्य नहीं है बल्कि एक चूहा है जो प्रत्येक वस्तु से डरता रहता है।''

जेन्या को विश्वास था कि कलाकार होने के नाते मुझे बहुत कुछ मालूम है और जो बात मैं नहीं जानता उसके विषय में ठीक अनुमान लगा सकता हूँ। वह मुझसे इस बात की अपेक्षा करती थी कि मैं उसका प्रवेश इस चिरंतन और सौंदर्य के साम्राज्य में करा दूं, उस उच्च लोक में, जहाँ, जैसा कि उसका अनुमान था, मैं उन्मुक्त होकर विचरण करता हूं। वह मुझसे ईश्वर, शाश्वत जीवन ओर उस चमत्कार के विषय में बातें करती रही। और मैं, जो इस बात को मानने के लिए कभी भी तैयार नहीं था कि स्वयं मैं तथा मेरी कल्पना मृत्यु के पश्चात नष्ट हो जायेगी, बोल उठा : ''हाँ, मनुष्य अमर है!'' ''हाँ, हमारे लिये शाश्वत जीवन सुरक्षित है।'' उसने सुना, विश्वास किया और प्रमाण नहीं माँगा।

जब हम लोग घर की तरफ़ जा रहे थे, वह अचानक रुक गई और बोली:

''हमारी लीदा विलक्षण स्त्री है, है न? मैं उसे बहुत प्यार करती हूँ और उसके लिए किसी भी क्षण अपने प्राण देने के लिए तैयार हो जाऊंगी। परन्तु वह बताओ'' — जेन्या ने अपनी उंगलियों से मेरी बाँह छूते हुए पूछा, ''यह बताओ, तुम उससे हमेशा बहस क्यों करते रहते हो? तुम चिड़चिड़ा क्यों उठते हो?''

''क्योंकि वह ग़लती पर है।''

जेन्या ने सिर हिलाया और उसकी आँखों में आँसू भर आये।

''यह बिल्कुल समझ से बाहर है!'' उसने कहा।

उसी समय लीदा कहीं से लौट कर आई थी। सुन्दर, छरहरी देहलता वाली वह युवती बरामदे की सीढ़ियों पर धूप में खड़ी तथा हाथ में चाबुक पकड़े एक आदमी को कुछ आज्ञा दे रही थी। ज़ोर से बोलते उसने जल्दी से दो-तीन बीमार गाँव वालों को संभाला फिर चेहरे पर व्यस्तता और परेशानी के भाव लिए वह कमरों में घूमती फिरी, एक बाद दूसरी अनेक दराज़ें खोलीं और ऊपर चली गई। बहुत देर में उसके घर वाले उसे ढूंढ़ने में सफ़ल हो सके और उसे खाने के लिए बुलाया। वह खाने की मेज़ पर उस समय आई जब हम लोग शोरबा खत्म कर चुके थे। इन सब छोटी-छोटी बातों की याद मुझे मधुर लगती है और उस पूरे दिन की बातें मुझे विस्तारपूर्वक याद हैं यद्यपि उस दिन कोई खास बात नहीं हुई थी। भोजन के बाद जेन्या एक गहरी आराम-कुर्सी पर लेट कर पढ़ने लगी। मैं बरामदे की सबसे निचली सीढ़ी पर बैठा हुआ था। हम लोग खामोश थे। आसमान बादलों से ढंका हुआ था और धीरे-धीरे पानी पड़ने लगा था। मौसम गर्म था, हवा बन्द हो गई थी और ऐसा लगता था कि यह दिन कभी खत्म ही नहीं होगा। येकातिरीना पाफ़लवना बाहर बरामदे में आई। उसकी आँखें अभी तक नींद से बोझल थीं। उसके हाथ में पंखा था।

''ओह, माँ,'' जेन्या ने उसका हाथ चूमते हुए कहा, ''तुम्हारे लिए दिन में सोना अच्छा नहीं है।''

वे दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करती थीं। जब एक बाग़ में जाती तो दूसरी बरामदे में खड़ी हो जाती और पेड़ों की तरफ़ देख कर पुकारती,

''ओ-ओ-जेन्या!'' या ''माँ तुम कहाँ हो?'' वे हमेशा एक साथ प्रार्थना करती थीं। दोनों के विश्वास एक से थे। और जब वे आपस में बातें नहीं करती होती थीं तब भी एक दूसरे के मन की बात को पूरी तरह समझ जाती थीं। मनुष्यों के बारे में उनकी धारणा भी एक सी थी। येकातिरीना पाफ़लवना शीघ्र ही मुझसे हिलमिल गई और मुझे प्यार करने लगी और जब मैं दो-तीन दिन तक उनके यहाँ नहीं जा पाता तो तुरन्त किसी को भेज कर मेरा कुशल-क्षेम पुछवा लेती। वह भी मेरे चित्रों को उत्साहपूर्वक देखती थी। मिसूस की ही तरह, उसी तत्परता और स्पष्टता से वह मुझे सब बातें बता देती और अपने पारिवारिक रहस्यों को पूर्ण विश्वास के साथ मुझसे कह देती।

उसके हृदय में अपनी बड़ी लड़की के प्रति पूर्ण श्रद्धा थी। लीदा स्नेह की बातें पसन्द नहीं करती थी। वह सिर्फ़ गम्भीर विषयों पर ही बातें करती थीं। वह अपना जीवन बिल्कुल भिन्न प्रकार से बिताती थी और अपनी माँ और बहन के लिए उसका व्यक्तित्व इतना पवित्र और रहस्यपूर्ण था जितना कि जलसेना के प्रधान एडमिरल का मल्लाहों के लिए होता है जो हमेशा अपने केबिन में बैठा रहता है।

''हमारी लीदा विलक्षण स्त्री है,'' माँ कभी-कभी कह उठती, ''है न?''

अब भी, जब पानी धीरे-धीरे बरस रहा था, हम लोग लीदा की बातें कर रहे थे।

''वह एक विलक्षण लड़की है,'' उसकी माँ ने कहा और फिर आगे षडयन्त्रकारियों की तरह, धीमी आवाज़ में उसकी तरफ़ देख सहम कर बोली : ''तुम्हें उसके समान दूसरी लड़की आसानी से नहीं मिल सकती। सिर्फ़ एक बात से, तुम जानते हो, मैं ज़रा परेशान हो उठी हूँ। स्कूल,

अस्पताल, किताबें – यह सब तो बिल्कुल ठीक हैं परन्तु हमें अति नहीं करना चाहिये। वह तेईस वर्ष की हो चुकी है। यह समय है जब उसे अपने विषय में गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिये। अपनी किताबों और अस्पतालों से डूबे रहते हुए उसे बाद में ही पता चलेगा कि बिना परवाह किये जीवन हाथ से निकल चुका है ... उसे शादी कर लेनी चाहिये।''

जेन्या ने, जो ज़्यादा पढ़ने से पीली पड़ गई थी तथा जिसके बाल बिखर रहे थे, अपना सिर ऊपर उठाया और अपनी माँ की तरफ़ देखते हुए इस तरह कहा मानो अपने आपसे कह रही हो :

''माँ सब काम भगवान की मर्ज़ी से होते हैं।''

और फिर वह अपनी किताब में खो गई।

बिलाकूरफ़ अपना किसान का कोट और कढ़ी हुई कमीज़ पहने आया। हम लोग टेनिस और गेंद बल्ला खेलते रहे। उसके बाद जब अंधेरा होने लगा तो बहुत देर तक भोजन पर बैठे रहे। फिर लीदा स्कूल, बालागिन आदि के बारे में बातें करती रही कि बालागिन ने पूरे ज़िले को अपने अंगूठे के नीचे दबा रखा है। जब उस शाम को मैं वलचानिनफ़ परिवार को छोड़कर वापस लौटा तो मुझे हृदय में इस लम्बे, आरामतलबी में कटे हुए दिन का एक ऐसा अवसादमय अनुभव हो रहा था कि इस दुनिया में हरेक चीज़ का अन्त अवश्य होता है चाहे वह कितनी ही बड़ी क्यों न हो। जेन्या हमें बाहर फाटक तक छोड़ने आई और शायद इस कारण से कि वह आज पूरे दिन, सुबह से लेकर शाम तक मेरे साथ रही थी मुझे उसके बिना सूना-सूना सा लगने लगा और यह कि वह सुन्दर परिवार मेरे बहुत नज़दीक आ चुका था और उन गर्मियों में पहली बार मेरे मन में चित्र बनाने की इच्छा ज़ोर मारने लगी।

''यह बताओ कि तुम इस तरह की रूखी नीरस ज़िन्दगी क्यों बिता

रहे हो?'' घर लौटते हुए मैंने बिलाकूरफ़ से पूछा। ''मेरी ज़िंदगी नीरस और कठोर इसलिए है क्योंकि मैं एक कलाकार हूँ, एक विचित्र व्यक्ति। अपने जीवन के प्रारम्भ से ही मैं द्वेषी, स्वयं से असन्तुष्ट और अपने कामों के प्रति संदिग्ध रहा हूँ। मैं हमेशा ग़रीब रहा हूँ। साथ ही एक घुमक्कड़ की ज़िन्दगी बिताता हूँ परन्तु तुम – तुम तो एक स्वस्थ, साधारण स्थिति के, ज़मींदार और सज्जन व्यक्ति हो। तुम इस तरह की नीरस ज़िन्दगी क्यों बिताते हो? तुम जीवन के भोगों के प्रति इतने उदासीन क्यों हो? उदाहरण के लिए यही बताओ कि तुम लीदा या जेन्या से प्रेम क्यों नहीं करते?''

''तुम भूल गये कि मैं एक दूसरी औरत को प्यार करता हूँ,'' बिलाकूरफ़ ने जवाब दिया।

वह ल्युबोव इवानोवना के बारे में कह रहा था जो उसके साथ ही मकान में रहती थी। मैं हर रोज़ इस औरत को देखता था जो बहुत भारी, गोल-मटोल और शानदार थी तथा हमेशा अपने साथ छाता लिये, राष्ट्रीय रूसी पोशाक और माला पहने, एक मोटी बतख की तरह बाग़ में घूमा करती थी और नौकर लगातार उसे खाना खाने या चाय पीने के लिए पुकारा करता था। तीन साल पहले उसने गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने के लिए यहाँ एक बंगला लिया था और अब हमेशा के लिए बिलाकूरफ़ के बंगले में रहने लगी थी। वह उससे दस साल बड़ी थी और उस पर बड़ा कठोर शासन करती थी। यहाँ तक कि जब वह घर से बाहर जाता, उसे उस औरत से इजाज़त लेनी पड़ती थी। कभी-कभी वह मर्दों जैसी गहरी सिसकियाँ ज़ोर-ज़ोर से भरा करती थी और तब मुझे उससे यह कहलाना पड़ा कि अगर वह बन्द नहीं हुई तो मुझे ये कमरे छोड़ देने पड़ेंगे। वह मान गई।

जब हम घर पहुँचे तो बिलाकूरफ़ सोफ़े पर बैठ गया और घुन्नाता हुआ सोचने लगा। मैं कमरे में इधर से उधर चहलक़दमी करने लगा। मेरे हृदय में एक कोमल भावना उत्पन्न हो रही थी मानो मैं किसी से प्रेम करने लगा हूँ। मैं वलचानिनफ़ परिवार के बारे में बातें करना चाह रहा था।

''लीदा तो ग्रामसभा के ही किसी सदस्य को प्रेम कर सकती है जो उसी की तरह स्कूलों और अस्पतालों में रुचि रखता हो,'' मैंने कहा। ''ओह, उस तरह की लड़की की ख़ातिर किसी के लिए ग्रामसभा में जाना तो साधारण सी बात है, बल्कि कोई भी उसके लिए लोहे के जूते पहनना भी मंज़ूर कर लेगा जैसा कि परियों की कहानी में कहा जाता है। और मिसूस? कितनी प्यारी है वह मिसूस!''

बिलाकूरफ़ ने ए-ए-ए की आवाज़ करते हुए उस युग की व्याधि – निराशावाद के विषय में लेक्चर देने के लिए एक लम्बी चौड़ी भूमिका बांधनी शुरू की। वह आत्मविश्वासपूर्वक इस तरह बातें करता था कि मानो मैं उसका विरोध कर रहा हूँ। सैकड़ों मीलों तक फैला हुआ निर्जन, थका देने वाला, जला हुआ स्तेपी का मैदान भी किसी में इतनी ऊब नहीं पैदा कर सकता जितना कि वह आदमी जो बैठ कर बातें करता है और जिसके बारे में इस बात का पता नहीं रहता कि वह कब उठ कर जाएगा।

''यह निराशावाद और आशावाद का प्रश्न नहीं है,'' मैंने चिड़चिड़ाते हुए कहा, ''यह एक साधारण सी बात है कि सौ में से निनानवे आदमियों में बुद्धि नही होती।''

बिलाकूरफ़ ने समझा कि यह तीर उस पर छोड़ा गया है और बुरा मान कर चला गया।

3

"राजकुमार मालोज़्योमोवो में ठहरा हुआ है और उसने तुम्हें सलाम कहलवाया है," लीदा ने अपनी माँ से कहा। वह अभी भीतर आई थी और अपने दस्ताने उतार रही थी। "उसने मुझे बहुत सी नई खबरें सुनाईं ... उसने प्रतिज्ञा की है कि वह मालोज़्योमोवो में डाक्टरी-सहायता- केन्द्र खोलने के प्रश्न को प्रान्तीय धारासभा में फिर उठायेगा। परन्तु उसका कहना है कि सफलता की बहुत कम आशा है।" और मेरी तरफ़ मुड़ कर उसने कहा : "माफ़ कीजिये, मैं हमेशा भूल जाती हूं कि इन बातों में आपकी रुचि नहीं है।"

मुझे बुरा लगा।

"मेरी रुचि क्यों नहीं है?" अपने कन्धों को सिकोड़ते हुए मैंने पूछा। "आप मेरी राय जानने की परवाह नहीं करती परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस समस्या में मेरी गहरी रुचि है।"

"हाँ?"

"हाँ! मेरी राय में मालोज़्योमोवो में डाक्टरी-सहायता-केन्द्र बिल्कुल व्यर्थ है।"

मेरी चिड़चिड़ाहट का उसपर प्रभाव पड़ा। उसने आँखें सिकोड़ते हुए मेरी तरफ़ देखा और पूछाः

"तो फिर क्या ज़रूरी है? प्राकृतिक दृश्य?"

"प्राकृतिक दृश्य भी नहीं। कुछ भी ज़रूरी नहीं है।"

उसने दस्ताने उतारना समाप्त कर अभी डाक से आये हुए अख़बार को खोला। एक मिनट बाद उसने शान्तिपूर्वक कहा — उसकी ध्वनि से स्पष्ट हो रहा था कि वह अपने को संयत करके बोल रही है।

"पिछले हफ़्ते आन्ना बच्चा पैदा होने में मर गई। अगर यहाँ पास में ही कोई डाक्टरी-सहायता-केन्द्र होता तो वह बच जाती। और मैं सोचती हूँ कि प्राकृतिक दृश्यों को चित्रित करने वाले कलाकारों को भी इस विषय पर अपनी राय प्रकट करनी चाहिये।"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस बारे में मेरी अपनी निश्चित राय है," मैंने जवाब दिया। उसने अपने सामने अख़बार की आड़ कर ली मानो मेरी बातें सुनना न चाहती हो, "मेरे ख़्याल में, वर्तमान परिस्थितियों में ये स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय, डाक्टरी-सहायता-केन्द्र आदि जनता की गुलामी की ज़ंजीरों को और अधिक मज़बूत बनाते हैं। किसान एक लम्बी ज़ंजीर में पकड़े हुए हैं और आप लोग उस जंजीर को नहीं तोड़ते बल्कि उसमें और नई कड़ियाँ जोड़ते रहते हैं — इस बारे में मेरा यही विचार है।"

उसने आँखें उठा कर मेरी तरफ़ देखा और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराई और मैं अपने महत्वपूर्ण विचारों को उसे सूत्र रूप में समझाने की कोशिश करने लगा।

"जो असली चिन्ता की बात है वह यह नहीं कि आन्ना बच्चा पैदा होने में मर गई परन्तु यह है कि ये सब आन्नाएं, मात्राएं, पेलागेयें आदि सुबह मुंह-अंधेरे से लेकर रात हो जाने तक कठिन परिश्रम करती हैं, अपनी ताक़त से ज़्यादा मेहनत करने की वजह से बीमार पड़ जाती हैं, वे जीवन भर अपने बीमार और भूखे बच्चों की चिन्ता में कांपती रहती हैं, जीवन भर उनका इलाज होता रहता है और बीमारी और मौत के डर से वे मुरझा कर जल्दी ही बुड्ढी हो जाती हैं और गन्दगी और बदबू में सड़ती हुई मर जाती हैं। उनके बच्चे भी जब बड़े हो जाते हैं तो उसी कहानी को दुहराते हैं और इस तरह यह क्रम सैकड़ों हज़ारों

वर्षों से इसी तरह चलता आता है। इसके बन्धन में जकड़े हुए करोड़ों व्यक्ति जानवरों से भी गयी-बीती ज़िन्दगी बिताते हैं — जिसमें रोटी के सिर्फ़ एक टुकड़े की चिन्ता और भय निरन्तर बना रहता है। उनकी इस भयानक स्थिति का सबसे प्रधान कारण यह है कि उन्हें कभी भी आत्म चिन्तन का समय नहीं मिल पाता और न वे अपनी स्थिति और स्वरूप के विषय में ही सोच पाते हैं। सर्दी, भूख, जानवरों का भय, मेहनत का भार आदि बर्फ़ के पहाड़ की तरह उनकी आत्मिक उन्नति के सम्पूर्ण मार्गों को अवरुद्ध कर देते हैं — और यही वह चीज़ है जो मनुष्य को पशुओं से श्रेष्ठ और भिन्न बनाती है और सिर्फ़ यही वह चीज़ है जो जीवन को भोगने के योग्य रूप प्रदान करती है। तुम लोग अस्पतालों और स्कूलों द्वारा उनकी मदद करने की कोशिश करते हो परन्तु ऐसा करके तुम उन्हें गुलामी की जंजीरों से मुक्त नहीं करते। इसके विपरीत तुम उन्हें और भी जकड़ देते हो। उदाहरण के तौर पर तुम उनमें नये विद्वेष की भावना जगा देते हो जिससे उनकी ज़रूरतें और भी बढ़ जाती हैं। यह बात तो कहना ही व्यर्थ है कि इसके लिए उन्हें ग्रामसभाओं को छालों और किताबों के वास्ते ज़्यादा पैसा देना पड़ता है और इस तरह उन्हें पहले से भी ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है।''

''मैं आपसे बहस नहीं करना चाहती,'' अख़बार को नीचे रखते हुए लीदा ने कहा। ''मैं यह सब पहले भी सुन चुकी हूँ। मैं सिर्फ़ एक बात कहूँगी। कोई भी आदमी हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ सकता। यह ठीक है कि हम लोग मानवता की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं और सम्भव हो सकता है कि हम लोग बहुत सी गल्तियाँ भी कर रहे हों परन्तु हम जो कुछ कर सकते हैं उतना तो करते ही हैं और हम जो

कुछ कर रहे हैं वह उचित है। किसी भी सभ्य व्यक्ति के लिए सबसे श्रेष्ठ और सबसे पवित्र कार्य अपने पड़ोसियों की सेवा करना है और हम लोग अपनी शक्ति भर उनकी सेवा करने की कोशिश करते हैं। आप इसे पसन्द नहीं करते, परन्तु कोई भी व्यक्ति प्रत्येक को सन्तुष्ट नहीं कर सकता।''

''यह सच है, लीदा,'' उसकी माँ बोली, — ''यह सच है।''

लीदा के सामने वह हमेशा सहमी हुई सी रहती थी और जब लीदा बोलती थी तो हताश सी होकर उसकी तरफ़ ताका करती थी। उसे इस बात का डर लगा रहता था कि वह कहीं बेकार की और बेमौक़े की बात न कह जाय। वह उसका कभी खण्डन न कर, हमेशा उसकी हाँ में हाँ मिलाया करती थी। ''यह सच है, लीदा — यह सच है।''

''किसानों को पढ़ना-लिखना सिखाना, गन्दे नियमों और स्वरों वाली किताबें पढ़ाना और डाक्टरी-सहायता-केन्द्र खोल देना आदि से मृत्यु संख्या में या अज्ञान में कमी नहीं की जा सकती — उसी तरह जिस तरह आपकी इन खिड़कियों से आती हुई रोशनी से इस बड़े बाग़ को रोशन नहीं किया जा सकता,'' मैंने कहा। ''आप उन्हें कुछ भी नहीं देती। इन किसानों की ज़िन्दगी में दखलन्दाज़ी करके आप सिर्फ़ उनमें नई-नई चीज़ों की इच्छाएं पैदा कर देती हैं और उनकी मेहनत पर नये कर लग जाते हैं।''

''आह! भगवान भला करे! परन्तु कुछ न कुछ तो करना ही चाहिए,'' लीदा क्रुद्ध होकर बोल उठी। उसकी आवाज़ से कोई भी यह भांप सकता था कि वह मेरे विचारों को बेकार समझ रही थी और उनसे घृणा करती थी।

''मनुष्यों को कठोर शारीरिक श्रम से मुक्त कराना ही होगा,'' मैंने

कहा – "हमें उनका बोझा हल्का करना होगा। उन्हें चैन की सांस लेने दो जिससे कि वे अपनी पूरी ज़िन्दगी भट्टी झोंकने, कपड़े धोने और खेत सम्हालने में ही न लगा दें। उन्हें अपनी आत्मा के बारे में, ईश्वर के विषय में सोचने का भी अवसर मिले – उन्हें अवसर मिले कि वे अपनी आत्मिक शक्ति को उन्नत कर सकें। मनुष्य का सबसे प्रधान कर्त्तव्य आत्मिक शोध है – सत्य की निरन्तर खोज और जीवन का वास्तविक अर्थ समझना। उनके लिए पशुओं की तरह कठोर परिश्रम करना बंद कर दो, उन्हें अपने को स्वतन्त्र अनुभव करने दो, और तब आप लोग देखेंगे कि ये अस्पताल और ये किताबें उनके लिए कितना गहरा मज़ाक थीं। एक बार जब आदमी अपने सच्चे कर्त्तव्य को समझ लेता है, उस समय उसे सिर्फ़ धर्म, विज्ञान और कला के द्वारा ही सन्तुष्ट किया जा सकता है, इन छोटी-छोटी बातों से नहीं।"

"उन्हें परिश्रम से मुक्त कर दिया जाय?" लीदा हँसी। "परन्तु क्या यह सम्भव है?"

"हाँ है! उनके परिश्रम का एक हिस्सा अपने ऊपर उठा लो। यदि हम सब लोग, शहरी और देहाती, बिना किसी अपवाद के सभी उस परिश्रम को आपस में बाँटने को सहमत हो जायं जो मनुष्य जाति अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करती हैं तो शायद हम लोगों में से हरेक को हर रोज़ दो या तीन घंटे काम करना पड़ेगा। कल्पना कीजिये कि हम सब लोग – अमीर और ग़रीब – दिन में सिर्फ़ तीन घंटे ही मेहनत करेंगे और हमारा बाक़ी का समय हमारे लिए खाली रहेगा। आगे और कल्पना कीजिए कि अपने शरीर पर कम निर्भर रहने के लिए और कम मेहनत करने के लिए हम अपना काम करने के वास्ते मशीनों का आविष्कार करते हैं; इसके विपरीत हमें अपनी ज़रूरतों को

कम से कम कर देना चाहिए। हमें स्वयं अपने को तथा अपने बच्चों को इतना कठोर बना देना चाहिये जिससे वे भूख और ठंड से भयभीत न हों और यह कि हम हमेशा आन्ना, मावरा और पेलागेया की तरह हमेशा उनकी तन्दुरुस्ती के लिए चिन्तित न रहें। सोचिये कि उस समय हम लोग इलाज नहीं करायेंगे, अस्पताल, तम्बाकू की मिलें, शराबखाने नहीं खोलेंगे – हमारे पास कितना समय रहेगा! हम लोग सब मिल कर अपना बचा हुआ समय विज्ञान और कला की उन्नति में लगायेंगे। जिस तरह कि कभी-कभी किसान सब एक साथ मिलकर सड़कों की मरम्मत करते हैं, बिल्कुल उसी तरह हम सब मिलकर – एक समाज के रूप में – सत्य की खोज करने और जीवन की वास्तविकता का पता लगाने की कोशिश करेंगे और मुझे विश्वास है कि सत्य का पता बहुत जल्दी लग जायगा। मनुष्य इस निरन्तर, दुखदाई, त्रासदायक मृत्यु के भय से छूट जायगा और स्वयं मृत्यु से भी।"

"आप अपनी ही बातों का खण्डन कर रहे हैं", लीदा ने कहा। "आप विज्ञान की बात करते हैं और स्वयं ही प्रारम्भिक शिक्षा का विरोध करते हैं।"

"प्रारम्भिक शिक्षा – जब मनुष्य के पास पढ़ने के लिए सिर्फ़ सार्वजनिक गृहों पर लिखे हुए शीर्षक और कभी-कभी ऐसी किताबें होती हैं जिन्हें वह समझ नहीं पाता – ऐसी शिक्षा तो हम लोगों में रूरिक के समय से प्रचलित है, गोगोल का पेत्रुश्का इतने दिनों से पढ़ सकता है, फिर भी गाँव की दशा जो रूरिक के ज़माने में थी अब भी वैसी ही है। जिस चीज़ की ज़रूरत है वह प्रारम्भिक शिक्षा नहीं है परन्तु आत्मिक शक्ति को और विस्तृत करने की आज़ादी है। स्कूलों की ज़रूरत न होकर विश्वविद्यालयों की ज़रूरत है।"

"आप चिकित्सा का भी विरोध करते है।"

"हां, करता हूं। इसकी ज़रूरत सिर्फ़ प्राकृतिक सत्यों के रूप में बीमारियों का अध्ययन करने के लिए होगी, उनका इलाज करने के नहीं। अगर इलाज ही करना है तो बीमारियों का न करके कारणों का होना चाहिये। मुख्य कारण को हटा दो — शारीरिक परिश्रम को, और फिर कोई बीमारी ही नहीं रहेगी। मैं उस विज्ञान में विश्वास नहीं करता जो बीमारियों को ठीक करता है," मैं उत्तेजित होकर कहता गया। "जब विज्ञान ओर कला सत्य हैं तो उनका लक्ष्य क्षणिक, व्यक्तिगत उद्देश्य नहीं है परन्तु शाश्वत और सार्वभौमिक है। वे सत्य की खोज और जीवन की वास्तविकता का पता चलाती हैं। वे ईश्वर की, आत्मा की खोज करती हैं और जब उन्हें सामयिक आवश्यकताओं और बुराइयों से बाँध दिया जाता है, अस्पतालों और पुस्तकालयों तक सीमित कर दिया जाता है, वे जीवन को सिर्फ़ गतिहीन और उलझनों से परिपूर्ण बना देते हैं। हमारे पास असंख्य डाक्टर, औषधि बनाने वाले और वकील हैं, असंख्य मनुष्य पढ़ और लिख सकते हैं परन्तु हम लोग वनस्पति-शास्त्रियों, गणितज्ञों, दार्शनिकों, कवियों आदि के बिना भी पूर्ण हैं। हमारी बुद्धि, हमारी सम्पूर्ण आत्मिक शक्ति, अस्थाई और साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति में व्यय की जाती है। वैज्ञानिक, लेखक, कलाकार कठोर परिश्रम करते हैं। उन्हें धन्यवाद है कि हमारे जीवन की सुविधाएं दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं। हमारी शारीरिक आवश्यकताएं बढ़ती जा रही हैं फिर भी सत्य हमसे कोसों दूर है और मनुष्य अब भी अत्यधिक लालची और घृणित प्राणी बना हुआ है, प्रत्येक वस्तु अधिकांश लोगों के पतन में सहायक हो रही है और जीवन की पूर्णता का ह्रास होता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में कलाकार के कार्य का कोई मूल्य नहीं है और

जितना ही वह अधिक प्रतिभासम्पन्न है उतनी ही उसकी स्थिति और अधिक अद्‌भुत और मूर्खतापूर्ण बनती जा रही है क्योंकि जब कोई व्यक्ति उसके कार्य को देखता है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वह लालची और घृणित पशु के मनोरंजन के लिए कार्य कर रहा है और वर्तमान व्यवस्था का समर्थक है। मैं काम करने की चिन्ता नहीं करता और न काम करूंगा ... किसी से कुछ भी फ़ायदा नहीं; पृथ्वी को नर्क में डूब जाने दो!"

"मिसूस, कमरे से बाहर जाओ।" स्पष्ट रूप से यह सोचते हुए कि मेरे शब्द उस लड़की के लिए हानिप्रद सिद्ध हो सकते हैं, लीदा ने अपनी बहिन को आज्ञा दी।

जेन्या ने दुखी होकर अपनी माँ और बहन की तरफ़ देखा और कमरे से बाहर चली गई।

"ये बड़ी आकर्षक बातें हैं जिन्हें मनुष्य अपनी उदासीनता के औचित्य को सिद्ध करने के लिए कहा करते हैं," लीदा ने कहा। "स्कूलों और अस्पताओं की बुराई करना अधिक आसान है, बनिस्बत इसके कि पढ़ाना और इलाज करना।"

"यह सच है, लीदा — यह सच है," माँ ने हाँ में हाँ मिलाई।

"आप काम बन्द कर देने की धमकी देते हैं," लीदा ने कहा। "आप स्पष्ट रूप से अपने कार्य का बहुत अधिक मूल्य समझते हैं। अच्छा हो कि हम लोग बहस बन्द कर दें, हम लोग अभी एक दूसरे से सहमत नहीं हो सकते क्योंकि मैं इन अधूरे पुस्तकालयों और अस्पतालों को, जिनके विषय में आप इतनी द्वेषपूर्ण राय रखते हैं, सब प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों से अधिक मूल्यवान समझती हूँ।" और एकदम माँ की तरफ़ मुड़ कर वह बिल्कुल भिन्न स्वर में कहने लगी : "राजकुमार बहुत

बदल गया है, जब वह पिछली बार हमारे साथ था उससे अब बहुत दुबला हो गया है। उसे विशी भेजा जा रहा है।''

उसने मुझसे बातें करने से बचने के लिए ही अपनी माँ से राजकुमार के विषय में बातें करना शुरू कर दिया था। उसका चेहरा चमक उठा और अपने भावों को छिपाने के लिए वह मेज़ पर और नीचे झुक कर मानो उसकी निगाह कमज़ोर हो, अख़बार पढ़ने का बहाना करने लगी। वहाँ मेरी उपस्थिति उसके लिए असह्य हो उठी थी। मैंने नमस्कार किया और घर चला आया।

4

बाहर पूरी खामोशी छा रही थी। तालाब के दूसरे किनारे पर गाँव निद्रा में डूब चुका था। एक भी रोशनी दिखाई नहीं दे रही थी। तालाब के पानी में सिर्फ़ तारों की परछाई झलक उठती थी। शेरों वाले दरवाज़े पर जेन्या मेरे साथ चलने के लिए निश्चल खड़ी हुई थी।

''गाँव में सब लोग सो रहे हैं,'' अन्धकार में उसका चेहरा देखने का प्रयत्न करते हुए मैंने उससे कहा और मैंने देखा कि उसकी उदास निगाहें मुझ पर जमी हुई हैं। ''भटियारा और घोड़े चुराने वाले सो रहे हैं जब कि हम, सभ्य लोग, बहस कर रहे हैं और एक दूसरे को चिढ़ा रहे हैं।''

यह अगस्त की एक उदास रात्रि थी – उदास इसलिए कि पतझड़ का आभास होने लगा था। बैंगनी बादल के पीछे चाँद ऊपर निकल रहा था और सड़क पर तथा जाड़े से पहले बोए हुए अंधेरे में डूबे खेतों पर जो उसके किनारों पर फैले हुए थे, एक धीमी रोशनी छिटका रहा था। रह-रह कर तारे टूट रहे थे। जेन्या मेरे साथ सड़क पर चलने लगी।

उसने आसमान की तरफ़ देखने की कोशिश नहीं कि जिससे कि वह टूटते हुए तारों को न देख सके जिनसे किसी कारणवश उसे डर लगता था।

''मुझे यकीन है कि आपका मत ठीक है,'' रात की सीली हवा से काँपते हुए वह बोली। ''अगर सब लोग एक साथ मिल कर आत्मिक पूर्णता को प्राप्त करने की कोशिश करें तो वे लोग शीघ्र ही सब कुछ जान जायेंगे।''

''यह ठीक है। हम लोग उच्च प्राणी हैं और अगर हम लोग मानवी प्रतिभा की पूरी शक्ति का अन्दाज़ा लगा सकते और सिर्फ़ ऊँची बातों को प्राप्त करने के लिए ही जीवित रहते तो अन्त में हम लोग देवताओं जैसे बन जाते। परन्तु यह कभी नहीं हो सकता – मनुष्य जाति का यहाँ तक पतन हो जाएगा कि प्रतिभा का चिन्ह मात्र भी शेष नहीं रहेगा।''

जब फाटक आँखों से ओझल हो गया तो जेन्या रुक गई और उसने मुझसे हाथ मिलाया, ''नमस्कार'' काँपते हुए कहा। वह सिर्फ़ एक ब्लाऊज़ पहने हुई थी और जाड़े से जमी जा रही थी। ''कल सुबह आइए।''

मैं अकेले रह जाने के विचार मात्र से उदास हो उठा – स्वयं अपने से और दूसरे व्यक्तियों से असन्तुष्ट और दुखी हो उठा। और मैंने भी टूटते हुए तारों की तरफ़ न देखने की कोशिश की।

''एक मिनट और ठहरो,'' मैंने उससे कहा, ''मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ।''

मैं जेन्या को प्यार करता था। शायद मैं उसे इस वजह से प्यार करता था कि जब मैं आता तो वह मुझसे मिलती थी और जब मैं जाता था तो मुझे छोड़ने आती थी, क्योंकि वह मेरी तरफ़ कोमलता और

उत्साहपूर्वक देखती थी। उसका पीला चेहरा, सुडौल गर्दन, पतली बाहें, उसकी निर्बलता, उसकी आरामतलबी, उसका पढ़ना आदि कितना सुन्दर और मर्मस्पर्शी था। और उसकी बुद्धि? मैं समझता था कि उसकी बुद्धि औसत मनुष्यों की बुद्धि से तीव्र थी। मैं उसकी उदार और विस्तृत विचारधारा से मंत्रमुग्ध सा हो उठता था, सम्भवतः इसलिए कि वह कठोर और सुन्दर लीदा से भिन्न थी जो मुझे पसन्द नहीं करती थी। जेन्या मुझे पसन्द करती थी क्योंकि मैं एक कलाकार था। मैंने अपनी प्रतिभा से उसके हृदय को जीत लिया था। मेरी तीव्र अभिलाषा थी कि मैं सिर्फ़ उसी के लिए अपनी तूलिका का प्रयोग करूँ। और मैं स्वप्न देखता था कि वह मेरी नन्ही सी रानी हो और मेरे साथ उन वृक्षों, उन मैदानों, उस कुहरे, उस संध्या की लालिमा, उन अद्‌भुत और सुन्दर दृश्यों की स्वामिनि हो जिनके मध्य मैं स्वयं को नितान्त एकाकी और महत्वहीन समझता आया था।

''एक मिनट और ठहरो,'' मैंने उससे प्रार्थना की, ''मैं तुमसे भीख माँगता हूँ।''

मैंने अपना बड़ा कोट उतारा और ठंड से सिकुड़ते उसके कन्धों पर डाल दिया। एक आदमी के बड़े कोट में भद्दी और अद्‌भुत दिखाई देने के भय से वह हँसी और उसे फेंक दिया। उसी समय मैंने उसे अपनी भुजाओं में जकड़ लिया और उसके मुख, कन्धों और हाथों को अगणित चुम्बनों से भर दिया।

''कल तक के लिए विदा।'' वह फुसफुसाई और धीरे से, मानो रात्रि की निस्तब्धता को भंग करने में भयभीत हो, वह मेरे सीने से चिपट गई। ''हम लोग एक दूसरे से अपने रहस्य नहीं छिपाते। मुझे तुरन्त ही अपनी माँ बहन को बता देना चाहिये ... यह बड़ी भयानक बात है! मां

तो ठीक है : माँ तुम्हें पसन्द करती हैं – परन्तु लीदा!''

वह फाटक की तरफ़ भाग गई।

''नमस्कार,'' वह चिल्लाई।

और फिर दो या तीन मिनट तक मैं उसके दौड़ने की आवाज़ सुनता रहा। मैं घर नहीं जाना चाहता था ओर न कोई काम ही था जिसके लिए जाता। मैं कुछ देर तक हिचकिचाता हुआ स्तब्ध खड़ा रहा और धीरे-धीरे वापस लौटा, एक बार फिर उस मकान को देखने के लिए जिसमें वह रहती थी – प्यारा, साधारण सा मकान, जो ऐसा लगता था मानो अपनी ऊपरी मंज़िल की खिड़कियों द्वारा मेरी तरफ़ देख रहा है और इस सब व्यापार को समझ रहा है। मैं बरामदे की बगल से गुज़रा और पुराने घने वृक्ष की छाया में टेनिस-कोर्ट के पास एक बेंच पर बैठ गया और वहाँ से मकान की तरफ़ देखता रहा। सबसे ऊपरी मंज़िल की खिड़कियों में, जहाँ मिसूस सोती थी, एक हल्की रोशनी दिखाई दी जो बदल कर हल्के हरे रंग की हो गई – उन लोगों ने लैम्प को शेड से ढंक दिया था। परछाइयां हिलती हुई दिखाई देने लगी थीं ...। मेरे हृदय में कोमलता, शान्ति और अपने प्रति पूर्ण सन्तोष की भावना भर रही थी। मुझे इस बात का सन्तोष था कि मैं अपनी भावनाओं से प्रभावित हो उठा हूँ और किसी से प्रेम करने लगा हूँ। परन्तु उसी समय मुझे इस बात को सोच कर व्यग्रता सी होने लगी कि मुझ से कुछ ही कदम दूर, उस घर के एक कमरे में लीदा थी जो मुझे नापसन्द करती थी और शायद घृणा करती थी। मैं वहां बैठा हुआ सोचने लगा कि क्या जेन्या बाहर आएगी। मैंने ध्यान देकर सुना और मुझे लगा कि मैंने ऊपर बातें करने की आवाज़ें सुनीं।

एक घंटा बीत गया। हरी रोशनी बुझ गई। अब परछाइयां दिखाई नहीं दे रही थीं। चाँद ठीक मकान के ऊपर, दूर आसमान में चमक रहा था। उसकी चाँदनी सोते हुए बाग़ और रास्तों पर पड़ रही थी। घर

के सामने लगे हुए गुलाब और डेलिया के फूल साफ़ और एक ही रंग के दिखाई दे रहे थे। सर्दी बहुत तेज़ पड़ने लगी थी। मैं बाग़ से बाहर निकला, अपना कोट उठाया और चुपचाप घर की तरफ़ चल पड़ा।

जब दूसरे दिन खाना खाने के बाद मैं वलचानिनफ़ परिवार के यहाँ गया तो बाग़ की तरफ़ खुलने वाला शीशे का दरवाज़ा खुला पड़ा था। मैं बरामदे में बैठ गया और प्रत्येक मिनट इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि अभी जेन्या फूलों की क्यारियों में से, या किसी रास्ते से आएगी, या मुझे घर से आती हुई उसकी आवाज़ सुनाई देगी। फिर मैं ड्राइंग रूम में गया। वहाँ से खाना खाने के कमरे को देखा। वहाँ कोई भी नहीं था। खाना खाने के कमरे से बड़े हाल में जाने वाले गलियारे में मैंने दो चक्कर लगाए। इस गलियारे में कई दरवाज़े थे और उन दरवाज़ों में से एक से लीदा की आवाज़ आती हुई मुझे सुनाई दी।

''खुदा ने ... भेजा ... एक कौए,'' उसने ऊँची आवाज़ में शब्दों पर ज़ोर देते हुए, शायद इम्ला बोलते हुए कहा, – ''खुदा ने भेजा कौए के लिए पनीर का एक टुकड़ा ...। कौन है?'' उसने मेरे पैरों की आवाज़ सुन कर अचानक कहा।

''मैं हूँ।''

''आह! माफ़ कीजिए, मैं इस समय आपके पास नहीं आ सकती, मैं दाशा को सबक पढ़ा रही हूँ।''

''क्या येकातिरीना पाफ़लवना बाग़ में हैं?''

''नहीं, वह आज सुबह मेरी बहन के साथ पेंज़ा सूबे में हमारी मौसी के यहाँ चली गई हैं। और जाड़ों में शायद वे लोग विदेश चले जायं,'' उसने कुछ देर बाद कहा। ''खुदा ने भेजा ... कौए के लिए ... पनीर का एक टुकड़ा ... तुमने इतना लिख लिया?''

मैं हॉल में गया ओर तालाब और गाँव की तरफ़ सूनी निगाहों से ताकता रहा। और मेरे कानों में यह ध्वनि गूंजती रही – ''एक पनीर का टुकड़ा ... खुदा ने भेजा कौए के लिए ... पनीर का एक टुकड़ा।''

और मैं उसी रास्ते से वापिस लौट गया जिससे होकर पहली बार यहाँ आया था – पहले अहाते से होकर, घर के पास होता हुआ बाग़ में आया, फिर नींबू के पेड़ों वाली सड़क पर ... यहाँ तक आते-आते एक छोटा सा लड़का मेरे पास आया और मुझे एक पर्चा दिया। ''मैंने अपनी बहन को सारी बातें बता दीं और वह इस बात पर ज़ोर दे रही है कि मुझे तुम से अलग हो जाना चाहिए,'' मैंने पढ़ा, ''मैं उसकी आज्ञा न मान कर उसे चोट नहीं पहुँचाना चाहती। भगवान तुम्हें प्रसन्न रखेगा। मुझे माफ़ कर दो। काश कि तुम जान सकते कि मैं और माँ इस बात पर कितना रोए हैं!''

फिर इसके आगे फर के वृक्षों से छाई हुई अंधेरी सड़क थी, टूटी हुई चहारदीवारी ... खेतों में जहाँ तब ज्वार के फूल खिल रहे थे और चिड़ियाँ चहचहा रही थीं, अब गाय और घोड़े जिनके पैरों में रस्सी बंधी हुई थी चर रहे थे। ढलानों पर जाड़े से पहले बोए हुए अनाज के पौधों की चमकीली हरियाली छा रही थी। दिन भर कठिन परिश्रम करने के उपरान्त थकान अनुभव करने की सी भावना मेरे मन पर छाने लगी और मुझे उन सारी बातों पर लज्जा अनुभव हुई जो मैंने वलचानिनफ़ परिवार वालों से कही थीं और मुझे पहले की ही तरह अपना जीवन भार लगने लगा। घर पहुँच कर मैंने अपना सामान बाँधा और उसी शाम पीटर्सबर्ग के लिए रवाना हो गया।

फिर वलचानिनफ़ परिवार वालों से मेरी मुलाकात कभी नहीं हुई। जब मैं क्रीमिया की तरफ़ जा रहा था तो रास्ते में, रेल में बिलाकूरफ़

से मेरी मुलाक़ात हो गई। पहले की ही तरह वह एक कढ़ी हुई कमीज़ और किसान का कोट पहने हुए था और जब मैंने उससे उसका मिज़ाज पूछा तो उसने जवाब दिया कि भगवान को धन्यवाद है कि वह स्वस्थ है। वह बातें करने लगा। उसने अपनी पुरानी ज़मींदारी बेच कर ल्युबोव इवानोवना के नाम से दूसरी छोटी सी ज़मींदारी खरीद ली थी। वह वलचानिनफ़ परिवार के विषय में बहुत कम बता सका। उसने बताया कि लीदा अब भी शिलकोफ़्का में रह रही थी और स्कूल में पढ़ाती थी। उसने धीरे-धीरे अपने चारों तरफ़ ऐसे हमदर्द जवानों की टोली इकट्ठी कर ली थी जो अत्यन्त मज़बूत थी, और पिछले चुनावों में इन लोगों ने बालागिन को हरा दिया था जो उस समय तक सारे ज़िले को अपने अंगूठे के नीचे दबाए हुए था। जेन्या के बारे में उसने सिर्फ़ इतना बताया कि वह घर पर नहीं रहती और उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ है।

मैं अब उस पुराने घर को भूलता जा रहा हूँ और सिर्फ़ उस समय जब मैं चित्र बना रहा या पढ़ रहा होता हूँ, अचानक मुझे बिना किसी वजह के, खिड़की की उस हरी रोशनी तथा उस रात जब मैं अपने हृदय में प्यार लिए, जाड़े से हाथ मलता हुआ घर की तरफ़ लौट रहा था तो उस समय उठी हुई अपने कदमों की आवाज़ मुझे याद आने लगती है। और इससे भी कम, कभी-कभी उन क्षणों में जब मैं एकान्त के कारण दुखी और निराश हो उठता हूँ, मुझे हल्की-हल्की स्मृतियाँ सताने लगती हैं और धीरे-धीरे मैं यह अनुभव करने लगता हूँ कि वह भी मेरे विषय में सोच रही है, कि वह मेरी प्रतीक्षा कर रही है और यह कि हम लोग फिर मिलेंगे ...

मिसूस, तुम कहाँ हो?

1896

कुत्ते वाली महिला

चर्चा थी कि समुद्र के किनारे एक नया प्राणी आया है — एक छोटे कुत्ते के साथ एक महिला। द्मित्री द्मित्रिच गुरोव, जिसे उस समय तक यालता आए हुए एक पखवारा हो चुका था और इसलिए वह वहाँ अपना घर सा अनुभव करने लगा था, नये आने वालों में रुचि लेने लगा था। वेर्ने के मण्डप में बैठे हुए उसने समुद्र के किनारे औसत कद वाली एक महिला को घूमते हुए देखा जिसके बाल सुन्दर थे। वह बेरेट पहने हुए थी, पोमेरानियम जाति का एक सफ़ेद कुत्ता उसके पीछे-पीछे भागता फिर रहा था।

और फिर उसने उसे पार्क में और चौक में घूमते हुए दिन में कई बार देखा। वह अकेली घूम रही थी, हमेशा वही बेरेट पहने हुए और हमेशा उसी सफ़ेद कुत्ते के साथ। कोई नहीं जानता था कि वह कौन है और हरेक उसे केवल ''कुत्ते वाली महिला'' कह कर पुकारा करता था।

''अगर वह यहाँ अपने पति या मित्रों के साथ न होकर अकेली ही है तो उससे परिचय बढ़ाना अनुचित नहीं होगा,'' गुरोव ने सोचा।

गुरोव की अवस्था चालीस से कम थी परन्तु उसके बारह साल की एक लड़की और दो लड़के थे जो कॉलेज में पढ रहे थे। वह जब किशोर था तभी उसकी शादी हो गई थी — उसी समय जब वह कालेज की दूसरी श्रेणी का विद्यार्थी था और अब उसकी स्त्री उसकी ड्योढ़ी उमर की लगती थी। वह एक लम्बी, सीधी, काली भौंहों वाली, गम्भीर, भव्य

स्त्री थी और जैसा कि वह अपने बारे में कहा करती थी – बुद्धिमती भी। उसने बहुत पढ़ा था, अपने खतों में शब्दों के आख़िर में 'सख़्त निशान'* नहीं लिखती थी, अपने पति को दूमित्री न कहकर दिमित्री कहा करती थी और गुरोव मन ही मन उसे मूर्ख, संकीर्ण, और कुरूप समझा करता था, उससे डरता था और घर पर रहना पसन्द नहीं करता था। बहुत दिन पहले से ही वह उसके साथ विश्वासघात करने लगा था, अक्सर विश्वासघात करता रहता था और शायद इसी कारण, हमेशा औरतों की बुराई करता रहता था और जब कभी उसके सामने औरतों की बातें छिड़ जातीं वह उन्हें 'घटिया नस्ल' कह कर सम्बोधित करता था।

उसे ऐसा लगता था कि अपने कटु अनुभवों के कारण ही वह ऐसा हो गया है कि वह उनके बारे में जो चाहे कह सकता है और फिर भी वह उस 'घटिया नस्ल' के बिना दो दिन भी नहीं काट सकता था। पुरुषों के समाज में वह ऊब उठता था और ऊटपटांग बर्ताव करने लगता था। उनके साथ उसका बर्ताव उपेक्षापूर्ण और रूखा रहता था परन्तु जब वह स्त्रियों के समाज में होता तो अपने को स्वतंत्र अनुभव करता और जानता था कि उन लोगों के साथ किस तरह की बातें और व्यवहार करना चाहिए और जब वह चुपचाप बैठा रहता तब भी उन लोगों के साथ उसे अच्छा लगता। उसकी वेशभूषा में, उसके चरित्र में, उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में कोई चीज़ इतनी आकर्षक और लुभावनी थी जो औरतों को अपनी तरफ़ लुभाती थी और उन्हें अपनी तरफ़ कर लेती थी। वह इस बात को जानता था और कोई शक्ति उसे औरतों की तरफ़ खींचती हुई मालूम पड़ती थी।

---

* 'सख़्त निशान' प्राचीन काल में रूसी भाषा में अधिक उपयोग होता था। परन्तु मुश्किल होने के कारण अब वह बहुत कम लिखा जाता है। चेखोव के काल में प्रगतिशील बुद्धिजीवी उसे कम प्रयोग करने लगे थे।

बारम्बार के कटु अनुभवों ने उसे यह शिक्षा बहुत पहले ही दे दी थी कि भले आदमियों, ख़ास तौर से मास्को वालों के साथ – जो हमेशा बहुत सुस्त और अस्थिर विचारों के होते हैं – हर तरह की मित्रता, जो प्रारम्भ में जीवन को बहुत सुन्दर बना देती है और जो सुखदायक तथा आकर्षक घटना की तरह मोहक लगती है, निश्चित रूप से अन्त में भयंकर झमेले की एक नियमित समस्या बन जाती है और काफ़ी समय बाद वह परिस्थिति असहनीय हो उठती है। परन्तु किसी आकर्षक स्त्री के साथ पहली मुलाक़ात होते समय गुरोव के दिमाग से यह बात ग़ायब हो जाया करती थी। तब वह जीवन के आनन्द के लिए उत्सुक हो उठता था और उसे प्रत्येक वस्तु सरल और मनोरंजक लगने लगती थी।

एक दिन शाम को वह पार्क में बैठा हुआ भोजन कर रहा था। बेरेट पहने हुए वह महिला आहिस्ते से आकर उसकी बग़ल वाली मेज़ पर बैठ गई। उसकी आकृति, उसकी विशिष्ट चाल, उसकी पोशाक और बालों के बांधने के ढंग ने उसे यह बता दिया कि वह एक सम्भ्रान्त महिला है, कि वह विवाहित है, कि वह यालता में पहली ही बार और अकेली आई है, और यह कि यहाँ उसका मन नहीं लग रहा है ... चरित्रहीनता की जो कहानियाँ यालता जैसी जगहों के बारे में प्रचलित हैं, बिल्कुल झूठी है। वह उनसे नफ़रत करता था और जानता था कि ऐसी कहानियाँ अधिकतर ऐसे व्यक्तियों द्वारा गढ़ी गई है जो स्वयं ऐसे पापों में लिप्त हो जाते अगर वे इसके क़ाबिल होते। परन्तु जब वह महिला उससे तीन क़दम दूर दूसरी मेज़ पर बैठ गई, उसने सरलता से विजय प्राप्त करने की, पहाड़ों पर पिकनिक के लिए की गई यात्राओं की कहानियों को याद करना शुरू कर दिया और अचानक एक तीव्र असंयत प्रेम की भावना, एक अनजान स्त्री के साथ जिसका

वह नाम भी नहीं जानता, रोमांस आदि बातें उसके हृदय में उत्पन्न हो उठीं।

उसने पुचकारते हुए उस कुत्ते को अपनी तरफ़ बुलाया और जब वह उसके पास आया तो उसने उसकी तरफ़ उंगली हिलाई। कुत्ता घुर्राया। गुरोव ने फिर उसकी तरफ़ उंगली हिलाई।

उस महिला ने गुरोव की तरफ़ देखा और फ़ौरन आंखें नीची कर लीं।

''वह काटता नहीं है'', उसने कहा और शरमा गई।

''मैं उसे हड्डी का टुकड़ा दे सकता हूँ?'' उसने पूछा और जब उसने स्वीकृति दे दी उसने नम्रतापूर्वक पूछा, ''आपको यालता आए बहुत दिन हो गए क्या?''

''पाँच दिन!''

''और मैं भी यहाँ पन्द्रह दिनों से झक मार रहा हूँ।''

कुछ देर खामोशी रही।

''समय इतनी जल्दी गुज़र जाता है और फिर भी यहाँ इतनी नीरसता है!'' उसने उसकी तरफ़ बिना देखते हुए कहा।

''यह कहना तो सिर्फ़ फ़ैशन हो गया है कि यहाँ नीरसता है। बेलूयोव या झिद्रा जैसी छोटी जगहों के रहने वाले वहाँ नहीं ऊबेंगे और जब वे यहां आते हैं तो कहने लगते हैं, 'ओह, कितना मनहूस! ओह, इतनी धूल!' कोई भी सुन कर सोचेगा कि वे ग्रेनादा से चले आ रहे हैं।''

वह हँसने लगी। फिर दोनों चुपचाप खाना खाते रहे, अजनबियों की तरह। परन्तु भोजन के बाद वे साथ-साथ चलने लगे और उन लोगों में हल्की-फुल्की मज़ाक की ऐसी बातें होने लगीं जो सन्तुष्ट और मस्त

व्यक्तियों में होती हैं जिन लोगों को इस बात से कोई मतलब नहीं रहता कि वे कहां जाते हैं या किस तरह की बातें करते हैं। वे घूमते रहे और समुद्र पर पड़ने वाली उस अनोखी चमक के बारे में बातें करते रहे। पानी का रंग हल्के ताज़े बकाइन के रंग का सा था। और ऊपर चमकते हुए चांद की रोशनी पड़ने से उस में सुनहरी आभा आ गई थी। उन लोगों ने कहा कि दिन की गर्मी के बाद भी अभी कितनी ऊमस है। गुरोव ने उसे बताया कि वह मास्को से आया है, कि वह शब्दशास्त्रज्ञ है परन्तु एक बैंक में नौकरी करता है। उसने यह भी बताया कि उसे ओपेरा-गायक की शिक्षा दी गई थी पर उसने छोड़ दिया और यह कि मास्को में उसके दो मकान हैं ... और उससे गुरोव को यह मालूम हुआ कि वह पीटर्सबर्ग में रह कर बड़ी हुई थी परन्तु दो साल हुए, अपनी शादी के बाद 'स' नगर में रहने लगी है, कि वह यालता में एक महीने और रहेगी और यह कि उसका पति जो खुद भी छुट्टी मनाना चाहता था, शायद आए और उसे ले जाय। उसे इस बात का ठीक पता नहीं था कि उसका पति शाही महकमे में काम करता है या प्रान्तीय धारासभा में — और अपनी इस अज्ञानता से वह बहुत प्रसन्न हुई। और गुरोव को यह भी पता लगा कि उसका नाम आन्ना सेर्गेयेव्ना है।

बाद में होटल के अपने कमरे में बैठा हुआ गुरोव उसके बारे में सोचता रहा। उसने सोचा कि कल वह उससे ज़रूर मिलेगी; ऐसा होना अवश्यम्भावी है। जब वह बिस्तर पर सोने गया तो सोचने लगा कि कुछ ही दिनों पहले वह एक लड़की के रूप में स्कूल में पढ़ती होगी, उसकी अपनी बेटी की तरह सबक याद करती होगी। उसने उसकी लज्जा व संकोच को याद किया जो उसकी हंसी और अजनबियों से बातें करने

के उसके ढंग से स्पष्ट प्रकट हो रहे थे। शायद यह उसके जीवन में पहला अवसर था जब कि वह ऐसी परिस्थितियों में अकेली थी जिनमें उसका पीछा किया जा रहा था, देखा जा रहा था और बातें की जा रही थीं सिर्फ एक रहस्यपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति के लिये जिसे समझने में वह शायद पूरी तरह लापरवाह नहीं थी। उसने उसकी सुडौल, कोमल गर्दन और सुन्दर भूरी आंखों का ध्यान किया। "कुछ भी हो, इसके जीवन में कुछ दुःख अवश्य है," उसने सोचा और सो गया।

2

उनकी जान पहचान हुए एक हफ़्ता गुज़र चुका था। छुट्टी का दिन था। भीतर गर्मी थी जब कि सड़कों पर धूल का बादल उठ रहा था जो चलने वालों के टोप उड़ा ले जाता था। आज प्यास बहुत लग रही थी; गुरोव कई बार मंडल की तरफ़ गया और आन्ना सेर्गेयेव्ना पर ज़ोर डाला कि चल कर थोड़ा सा शर्बत, या आइस्क्रीम ली जाय। किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि समय कैसे काटें।

शाम को जब हवा कुछ कम हो गई तो वे दोनों समुद्र के किनारे स्टीमर देखने चल दिए। बन्दरगाह पर बहुत से आदमी घूम रहे थे। वे लोग गुलदस्ते लिए हुए किसी का स्वागत करने के लिए आए थे। यालता के सजे-धजे लोगों की दो विशेषताएं बिल्कुल स्पष्ट हो रही थीं: अधेड़ स्त्रियां नवयुवतियों जैसी पोशाकें पहने हुए थीं और वहां फ़ौजी जनरलों की बहुत बड़ी संख्या उपस्थित थी।

समुद्र उफन रहा था इसलिये स्टीमर सूरज डूबने के बाद आया और उसे जेटी तक आते-आते बहुत बड़ा चक्कर काटना पड़ा। आन्ना

सेर्गेयेव्ना ने अपनी दूरबीन की सहायता से स्टीमर और उस पर से उतरने वाले मुसाफ़िरों को देखा मानो अपनी जान पहचान वालों को ढूंढ रही हो। और जब वह गुरोव की तरफ़ मुड़ी, उसकी आंखें चमक रही थीं। उसने बहुत सी बातें कीं और ऊटपटांग सवाल पूछती रही। दूसरे ही क्षण वह यह भूल जाती थी कि उसने क्या पूछा था। फिर उसने अपनी दूरबीन भीड़ में खो दी।

उमंग में भरी हुई भीड़ छटने लगी। इतना अंधेरा हो गया था कि दूसरों के चेहरे देखना मुश्किल था। हवा पूरी तरह बन्द हो चुकी थी परन्तु गुरोव और आन्ना सेर्गेयेव्ना अब भी इस तरह खड़े थे मानो स्टीमर से आने वाले किसी का इन्तज़ार कर रहे हों। आन्ना सेर्गेयेव्ना अब खामोश थी और गुरोव की तरफ़ बिना देखे फूल सूंघ रही थी।

"आज शाम को मौसम कुछ अच्छा है," उसने कहा, "अब कहां चलना चाहिये? कहीं गाड़ी पर चला जाय?"

उसने कोई जवाब नहीं दिया।

तब गुरोव ने उसकी तरफ़ गौर से देखा और अचानक उसकी कमर में हाथ डाल दिये और उसके होंठों को चूम लिया। उसके चारों तरफ़ फूलों की सुगंध और नमी व्याप्त हो गयी। परन्तु उसने फ़ौरन ही अपने चारों तरफ़ देखा – इस बात की चिन्ता करते हुए कि कहीं किसी ने देख न लिया हो।

"चलो, तुम्हारे होटल चलें," गुरोव धीरे से बोला और दोनों जल्दी-जल्दी चलने लगे।

कमरे में घुटन सी थी और उसमें उस इत्र की खुशबू आ रही थी जो उसने जापानी दुकान से खरीदा था। गुरोव ने उसकी तरफ़ देखा और सोचने लगा : "दुनियां में कैसे-कैसे अजीब व्यक्तियों से मुलाक़ात हो

जाती है!'' अपने विगत जीवन की उसने ऐसी स्मृतियां संजो रखी थीं जिनमें लापरवाह, अच्छे स्वभाव वाली स्त्रियां उससे उल्लसित होकर प्रेम करती थीं और वह उन्हें जो आनन्द देता था, चाहे वह कितना ही क्षणिक क्यों न हो, उसका अहसान मानती थीं। उसे ऐसी स्त्रियों की भी याद थी जो उसकी पत्नी की तरह बिना किसी सच्ची भावना के, बेकार की बातें करती हुईं, प्रभावित होकर पागल की तरह प्यार करती थीं जिससे यह प्रकट होता था कि न तो यह वासना थी और न प्रेम बल्कि कुछ इनसे भी महत्त्वपूर्ण। उसे दो या तीन और स्त्रियों की याद आई जो बहुत सुन्दर परन्तु ठण्डे स्वभाव की थीं जिनके चेहरों पर एक लुटेरे जैसा भाव था – एक ऐसी तीव्र इच्छा थीं कि इस जीवन में जितना पाया जा सकता है उससे भी अधिक प्राप्त कर लें। ये चंचल, विचारहीन, मदोन्मत्त, और मूर्ख स्त्रियां अपनी जवानी खो चुकी थीं और जब गुरोव उनकी तरफ़ से उदास हो उठा तो उनकी सुन्दरता उसकी घृणा को उभार देती थी और उनकी पोशाकों पर लगे हुए गोटे की किनारियां उसे भद्दी लगने लगती थीं।

परन्तु इस मामले में अब भी लज्जा के लिए स्थान था, भोले यौवन का तीखापन था, एक विचित्र सी भावना थी। और उसमें एक ऐसी भय की सी भावना थी मानो किसी ने अचानक दरवाज़ा आ खटखटाया हो। लगता था कि आन्ना सेर्गेयेव्ना – कुत्ते वाली महिला – पूरे मामले को विशेष और गंभीर समझ रही है, जैसे उसका पतन हो गया हो। उसे यह बात अजीब सी लगी और अनकुसाहट होने लगी। उसका चेहरा लटक गया था और फीक़ा पड़ गया था और उस चेहरे के दोनों तरफ़ उसके लम्बे बाल दुख की सी मुद्रा में नीचे लटके थे। वह अत्यन्त निराश मुद्रा में बैठी सोच रही थी, एक पश्चातापग्रस्त व्यभिचारिणी की तरह जैसा कि एक पुरानी तस्वीर में दिखाया गया था।

''यह ठीक नहीं है,'' उसने कहा। ''अब तुम्हीं सबसे पहले मुझसे नफ़रत करने लगोगे।''

मेज़ पर एक तरबूज़ रखा हुआ था। गुरोव ने उसमें एक फांक काट ली और धीरे-धीरे खाने लगा। इसके बाद आधे घण्टे तक खामोशी छाई रही।

आन्ना सेर्गेयेव्ना प्रभावित कर रही थी। उसमें एक अच्छी भोली-भाली नारी की सी पवित्रता थी जिसने बहुत कम दुनिया देखी हो। मेज़ पर जलने वाली एकमात्र मोमबत्ती का धीमा प्रकाश उसके चेहरे पर पड़ रहा था फिर भी यह स्पष्ट था कि वह बहुत दुखी थी।

''मैं तुमसे कैसे नफ़रत कर सकता हूं?'' गुरोव ने पूछा। ''तुम नहीं जानती कि तुम क्या कह रही हो।''

''भगवान मुझे क्षमा करे,'' उसने कहा और उसकी आंखों में आंसू भर आये। ''यह बहुत भयंकर हैं''

''तुम ऐसा अनुभव करती प्रतीत हो रही हो कि तुम्हें क्षमा की आवश्यकता है।''

''क्षमा की आवश्यकता? नहीं! मैं एक बुरी, नीच औरत हूं, मैं अपने आपसे नफ़रत करती हूं और अपने कामों को उचित ठहराने की कोशिश नहीं करती। यह मैंने अपने पति को धोखा न देकर खुद अपने आप को धोखा दिया है। और सिर्फ़ अभी ही नहीं, बल्कि मैं अपने को बहुत दिनों से धोखा देती आ रही हूं। मेरा पति एक अच्छा और ईमानदार आदमी हो सकता है, परन्तु वह एक चपरासी है! मुझे नहीं मालूम कि वह वहां क्या करता है, उसका काम क्या है परन्तु मैं यह जानती हूं कि वह एक चपरासी है! मैं बीस साल की थी जब उससे शादी हुई थी। मैं अपने कौतूहल के कारण दुखी रही थी, मैं उससे कुछ और अच्छी चीज़ चाहती

थी। 'जीवन इससे कुछ भिन्न अवश्य होना चाहिए', मैं अपने आप कहा करती थी। मैं जीना चाहती थी, जीना! ... मैं कौतूहल से आक्रान्त थी ... तुम इसे नहीं समझ सकते, परन्तु, मैं भगवान को साक्षी करके कहती हूं कि मैं अपने को रोक नहीं सकी। मुझे कुछ हो गया था : मैं अपने ऊपर काबू रखने में असमर्थ रही। मैंने अपने पति से कहा कि मेरी तबियत खराब है और यहां चली आई ... और यहां मैं इस तरह घूमती फिर रही थी मानो मैं चौंधिया उठी थी, एक पागल जानवर की तरह ... और अब मैं एक गन्दी, घृणित स्त्री बन गई हूं जिससे कोई भी नफ़रत कर सकता है।''

गुरोव उसकी बातें सुनते-सुनते ऊब उठा था। वह उसकी सरल, शान्त बातें और इस पश्चाताप को जो इतना अप्रत्याशित और असंगत था, सुन कर चिड़चिड़ा रहा था। परन्तु अगर उसकी आंखों में आंसू न छलकते होते तो शायद वह यह सोचता कि वह मज़ाक कर रही है या एक्टिंग कर रही है।

''मैं समझा नहीं,'' उसने धीरे से कोमलतापूर्वक कहा, ''तुम क्या चाहती हो?''

उसने अपना चेहरा गुरोव के सीने में छिपा लिया और उससे चिपट गई।

''मेरा विश्वास करो, मेरा विश्वास करो! मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं ...'' वह बोली। ''मैं एक पवित्र और सच्ची ज़िन्दगी को प्यार करती हूं और पाप से मुझे घृणा है। मैं नहीं जानती कि मैं क्या कर रही हूं। भले आदमियों का कहना है : 'शैतान ने मुझे मार्गभ्रष्ट कर दिया है।' और अब मैं अपने बारे में कह सकती हूं कि शैतान ने मुझे मार्गभ्रष्ट कर दिया है।''

''हुश, हुश ... !'' वह बड़बड़ाया।

गुरोव ने उसकी स्थिर, भयभीत आंखों को देखा, उसे चूम लिया प्यार की बातें कीं, और धीरे-धीरे वह शान्त होती गई। उसकी प्रसन्नता लौट आई। दोनों हंसने लगे।

बाद में जब वे लोग बाहर आए तो समुद्र के तट पर एक भी आदमी नहीं था। शहर में खड़े हुए सरो के ऊंचे वृक्ष ही केवल प्राणवायु के समान अज्ञात वायु की उपस्थिति का आभास दे रहे थे, परन्तु समुद्र अब भी गरजता हुआ तट से टकरा रहा था। लहरों पर एक एकाकी नाव चली जा रही थी जिसमें से एक धुंधली, ऊंघती हुई सी लालटेन की रोशनी आ रही थी।

उन्होंने एक गाड़ी पकड़ी और ओरेअण्डा की तरफ़ चल दिए।

''मुझे बड़े कमरे में तुम्हारे उपनाम का पता अभी लगा है : बोर्ड पर लिखा हुआ था – फ़ोन डिडेरिट्स,'' गुरोव ने कहा, ''क्या तुम्हारा पति जर्मन है?''

''नहीं, मेरा ख्याल है कि उसका दादा एक जर्मन था और वह खुद एक कट्टर रूसी है।''

ओरेअण्डा में पहुंच कर वे लोग चर्च के पास एक जगह पर बैठ गये, नीचे समुद्र की तरफ़ देखा और खामोश बैठे रहे। सुबह की धुन्ध में से यालता मुश्किल से दिखाई दे रहा था, पहाड़ की चोटियों पर सफ़ेद बादल निश्चल ठहरे थे। पेड़ों की पत्तियां स्तब्ध थीं, टिड्डे झंकार रहे थे और समुद्र का उकता देने वाला भारी शब्द, नीचे से ऊपर उठता हुआ शान्ति का समाचार सुना रहा था – उस शाश्वत निद्रा को जो हमारी प्रतीक्षा कर रही है। इसी तरह यह उस समय भी गूंजता रहा होगा जब यहां यालता, ओरेअण्डा नहीं होंगे। उसी तरह अब भी गूंज रहा है और इसी तरह और उकता देने वाले ढंग से उस समय भी गूंजता रहेगा जब

हम में से कोई भी नहीं रहेगा। और इस निरन्तरता में, जो हमारे जीवन या मृत्यु से पूर्ण रूप से उदासीन है, शायद हमारी शाश्वत मुक्ति का सन्देश, पृथ्वी पर चलने वाले जीवन का अबाध व्यापार, पूर्णता की ओर अग्रसर होने का अथक प्रयास, छिपा हुआ है। ऊषा की सौम्यता में अत्यंत आकर्षक लग रही एक सुन्दरी बाला के पार्श्व में बैठे हुए और समुद्र, पर्वत, बादल तथा खुले आकाश के कारण आश्चर्यजनक रूप से आकर्षक तथा मोहक बने वातावरण के प्रभाव से शान्त और मुग्ध होते हुए गुरोव ने सोचा कि जब हम अपनी मानवीय श्रेष्ठता और जीवन के उच्च लक्ष्य को भूल जाते हैं तो ख्याल करो संसार की प्रत्येक वस्तु वास्तव में कितनी सुन्दर लगने लगती है : प्रत्येक वस्तु अतिरिक्त इसके कि जो कुछ हम सोचते हैं या अपने आप करते हैं।

एक आदमी घूमता हुआ उनके पास तक आया – शायद कोई चौकीदार हो – उनकी तरफ़ देखा और चला गया। इस बात में भी रहस्य और सुन्दरता नज़र आई। और साथ ही सुन्दर लगने लगा। उन्होंने फ़ेओदोसिया की तरफ़ से आता हुआ एक बिना रोशनी का स्टीमर देखा जो ऊषा के प्रकाश में चमक रहा था।

''घास पर ओस पड़ने लगी है,'' कुछ देर की चुप्पी के बाद आन्ना सेर्गेयेवूना बोली।

''हां, घर चलने का समय हो गया।''

वे शहर वापिस चले आये।

फिर वे रोज़ बारह बजे समुद्र के किनारे मिलते, दोनों समय साथ-साथ खाना खाते, घूमने जाते, समुद्र का सौन्दर्य देखते। उसने शिकायत की कि उसे ठीक से नींद नहीं आती, और उसका दिल बुरी तरह धड़का करता है। वह वही पुराने सवाल दुहराया करती, कभी ईर्ष्या

के कारण परेशान हो उठती और कभी इस डर से कि गुरोव उसकी पूरी तरह इज़्ज़त नहीं करता। और चौक में या पार्कों में, जब वे बिल्कुल अकेले होते, गुरोव उसे अपनी तरफ़ खींच कर चिपटा लेता और अत्यधिक उत्तेजित होकर उसे चुम्बनों से ढक देता। इस पूरी आरामतलबी ने, चमकती हुई सूरज की रोशनी में, बिल्कुल खुले में लिए गए इन चुम्बनों ने, जिनके बाद वह इस भय से चारों तरफ़ देखता था कि किसी ने देख तो नहीं लिया, गर्मी और समुद्र की गंध ने और उसके सामने से निरन्तर इधर से उधर घूमते हुए लकदक पोशाक पहने, खूब स्वस्थ व्यक्तियों आदि ने उसे एक नया आदमी बना दिया। उसने अन्ना सेर्गेयेवूना को बताया कि वह कितनी सुन्दर और कितनी आकर्षक है। वह पूरी तरह वासना में डूब चुका था। वह उसे छोड़कर एक कदम भी दूर नहीं हटता था जबकि वह अक्सर गम्भीर हो उठती और बराबर उससे इस बात की प्रार्थना किया करती कि वह यह स्वीकार कर ले कि वह उसकी इज़्ज़त नहीं करता, उससे ज़रा भी प्रेम नहीं करता और उसे सिर्फ़ एक बाज़ारू औरत समझता है। लगभग हर शाम को वे दोनों गाड़ी पर शहर से बाहर निकल जाते। कभी ओरेअण्डा की तरफ़ और कभी जल-प्रपात की ओर। और उनकी यह यात्रा सदैव सफल रहती। वहां के दृश्य उनको अत्यन्त सुन्दर और भव्य लगते।

वे लोग उसके पति के आने की उम्मीद कर रहे थे परन्तु उसका एक पत्र आया जिसमें यह लिखा था कि उसकी आंखों में कुछ खराबी आ गई है और उसने अपनी स्त्री से जल्दी से जल्दी घर लौट आने की प्रार्थना की थी। आन्ना सेर्गेयेवूना जाने की जल्दी करने लगी।

''यह अच्छी बात है कि मैं जा रही हूँ,'' उसने गुरोव से कहा। ''यह भाग्य का संकेत है!''

वह गाड़ी में बैठ कर गई और गुरोव भी उसके साथ चला। वे दिन भर चलते रहे। जब वह रेल के डिब्बे में बैठ गई और जब दूसरी घंटी

बजी, वह बोली :

"एक बार मुझे अपनी ओर देखने दो ... अपनी तरफ़ एक बार फिर देखने दो। हाँ, अब ठीक है।"

उसने आँसू नहीं बहाये परन्तु इतनी दुःखी थी कि बीमार सी मालूम पड़ रही थी और उसका चेहरा काँप रहा था।

"तुम्हारी याद करूँगी ... तुम्हारे बारे में सोचा करूँगी," वह बोली। "भगवान तुम्हारी रक्षा करे, खुश रहना। मेरे विषय में बुरी बात मत सोचना। हम हमेशा के लिए बिछुड़ रहे हैं – ऐसा ही होगा क्योंकि हम लोगों को मिलना ही नहीं चाहिए था। खैर, भगवान तुम्हारी सहायता करे।"

रेल तेज़ी से चली गई। उसकी रोशनियां जल्दी ही आँखों से ओझल हो गईं और एक मिनट बाद उसका शोर भी ग़ायब हो गया मानो सब चीज़ों ने एक साथ मिल कर उस मधुर उन्माद, उस पागलपन को जल्दी से जल्दी समाप्त कर देने का षडयंत्र रचा था। प्लेटफ़ार्म पर अकेला रह जाने पर दूर अन्धकार की तरफ़ देखते हुए गुरोव टिड्डों की झंकार और तार के खम्भों की झनझनाहट सुनता रहा, यह अनुभव सा करते हुए मानो वह अभी सोकर उठा हो। और उसने सोचा कि उसके जीवन में एक और नई कथा या घटना जुड़ गई और यह भी समाप्त हो गई। सिवाय स्मृति के इसका और कोई चिन्ह शेष नहीं बचा ... वह व्यग्र हो उठा। एक हल्के पश्चाताप की भावना ने उसे दुखी और बेचैन बना दिया। यह युवती जिससे अब उसकी मुलाकात फिर कभी नहीं होगी उसके साथ सुखी नहीं रही थी। उसने उसके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार किया था परन्तु फिर भी उसके बर्ताव, उसके स्वर और उसके दुलार करने में एक हल्के व्यंग की छाया थी – एक सुखी मनुष्य की भौंडी नम्रता जैसी और फिर वह उससे लगभग दूनी उम्र का था। हर समय

वह उसे दयालु, अद्भुत और महान कहा करती थी। यह साफ़ था कि वह उसे जो कुछ वह वास्तव में था, उससे भिन्न समझती थी। इस तरह उसने अज्ञात रूप से उसे धोखा दिया था।

स्टेशन पर पतझड़ की गन्ध छा रही थी। शाम की हवा में ठंडक थी।

"अब उत्तर की तरफ़ चलने का समय आ गया," प्लेटफ़ार्म को छोड़ते हुए गुरोव ने सोचा, "अब ठीक मौसम आ गया है!"

3

मास्को वाले घर में सब काम जाड़ों के मौसम के अनुसार चल रहा था। स्टोव गर्म रहते थे और सुबह जब बच्चे नाश्ता करके स्कूल जाने के लिए तैयार होने लगते थे, अंधेरा ही रहता था। नर्स उस समय कुछ देर के लिए लैम्प जला देती थी। पाला पड़ना शुरू हो गया था। जब पहली बरफ़ पड़ चुकी थी और पहले दिन बरफ़ पर चलने वाली बिना पहियों की गाड़ियाँ (स्लेज) चलनी शुरू हुई थीं तो चारों तरफ़ बरफ़ से ढकी हुई सफ़ेद ज़मीन, सफ़ेद छतें देखना और धीमी और सुगन्धी से भरी हुई साँस लेना बहुत अच्छा लगता था। ऐसा मौसम जवानी के दिनों को लौटा लाता था। नीबू और भोजपत्र के पुराने, तुषार से ढके हुए वृक्ष बड़ा सुन्दर प्रभाव डालते थे। ये वृक्ष सरो और खजूर के पेड़ों की अपेक्षा किसी के हृदय को अधिक आकर्षित करते हैं, और उनके पास बैठ कर कोई भी समुद्र या पहाड़ों को देखने की कामना नहीं करता।

गुरोव मास्को में पैदा हुआ था। वह मास्को जिस दिन पहुँचा, मौसम अत्यन्त सुन्दर था। चारों तरफ़ पाला पड़ा हुआ था और जब वह

अपना अन्दर फर लगा हुआ कोट और गर्म दस्ताने पहन कर पेत्रोव्का पर घूमने निकला और जब शनिवार की शाम की संध्या को उसने घण्टों की आवाज़ सुनी, तो उसकी अभी हाल की यात्रा और विभिन्न देखे हुए स्थानों का आकर्षण उसके लिए पूरी तरह नष्ट हो गया। धीरे-धीरे वह मास्को के वातावरण में पूरी तरह निमग्न हो गया। प्रतिदिन भूखे की तरह तीन अखबार पढ़ता और यह घोषणा करता कि वह अपने सिद्धान्त के आधार पर मास्को के पत्रों को नहीं पढ़ता। उसके मन में रेस्टोरेण्ट, क्लब, दावतों, वार्षिक उत्सवों आदि में जाने की तीव्र इच्छा उठने लगी थी और वह नामी वकीलों और कलाकारों का स्वागत सम्मान करने में और डाक्टरों के क्लब में एक प्रोफ़ेसर के साथ ताश खेलने में गर्व का अनुभव करने लगा था। वह पूरी भरी हुई प्लेट नमकीन मछली और गोभी उड़ा जाता था ...

उसने सोचा था कि दूसरे महीने आन्ना सेर्गेयेव्ना की मूर्त्ति उसकी स्मृति में धुंधली-धुंधली सी रह जायगी और कभी-कभी दूसरों की तरह, एक आकर्षक मुस्कान के साथ स्वप्न में आया करेगी परन्तु एक महीने से कुछ अधिक ही समय हो चुका था, जाड़े पूरी तरह आ चुके थे और हर चीज़ उसकी स्मृति में इस तरह स्पष्ट थी मानो वह आन्ना सेर्गेयेव्ना से अभी एक दिन पहले ही बिछुड़ा हो! और उसकी स्मृतियाँ दिन पर दिन और भी अधिक स्पष्ट होने लगीं। जब संध्या की निस्तब्धता में, वह अध्ययन कक्ष में से अपने बच्चों की सबक याद करने की आवाज़ें सुनता या जब रेस्टोरेण्ट में बजते हुए किसी गाने या वाद्य संगीत को सुनता या चिमनी में गरजते हुए तूफ़ान की आवाज़ होती, अचानक सब कुछ उसकी स्मृति में साकार होने लग जाता – समुद्र तट पर, और पहाड़ों पर सुबह की हल्की धुंध में और फ़ेओदोसिया

से आते हुए स्टीमर और उन चुम्बनों के दृश्य जो वहाँ घटित हुए थे। वह इन घटनाओं को याद करता और मुस्कराता हुआ बहुत देर तक अपने कमरे में इधर से उधर टहलता रहता। फिर उसकी स्मृतियां स्वप्न बन जातीं और उसकी कल्पना में गुज़रा हुआ समय आगे होने वाली घटनाओं से मिल कर एकाकार हो उठता। आन्ना सेर्गेयेव्ना स्वप्नों में उसके पास न आकर अब छाया की तरह सब जगह उसका पीछा करने लगी थी। जब वह अपनी आँखें बन्द कर लेता तो वह उसे इस तरह दिखाई देने लगती मानो उसके सामने ही रह रही है। वह उसे पहले से और भी ज़्यादा सुन्दर, कोमल और नौजवान लगने लगी थी। और वह स्वयं को भी उस समय से सुन्दर अनुभव करने लगा था जब यालता में रहता था। शाम को वह किताबों की अल्मारी से, अंगीठी से, कोनों से उसकी तरफ़ झांकने लगती। वह उसकी साँस लेने की आवाज़ और पोशाक की दुलार भरी सरसराहट सुनता। सड़क पर वह उसी की सी शक्ल जैसी स्त्री देखने के लिये चलती हुई औरतों की तरफ़ ताकता बैठा रहता।

अपनी स्मृतियों के रहस्य को किसी दूसरे व्यक्ति को बता देने की तीव्र अभिलाषा उसके हृदय को व्यथित करती थी। परन्तु अपने घर में अपने ही प्रेम की बातें करना असम्भव था और घर से बाहर कोई भी इस योग्य नहीं था। वह अपने किरायेदारों या बैंक के साथियों से इस बारे में बातें नहीं कर सका। और वह क्या बातें करता? क्या वह प्रेम करता था, तब? क्या आन्ना सेर्गेयेव्ना के साथ सम्बन्धों में सौन्दर्य, भावुकता, उपदेशात्मकता या साधारण आकर्षण जैसी कोई चीज़ थी? और उसके पास इसके अलावा और कोई भी चारा नहीं था कि वह दूसरों से प्रेम, औरतों आदि के बारे में वैसी ही उड़ती हुई सी बातें करता जिससे कोई भी इस बात का अनुमान लगाने में असमर्थ था कि उसका

मतलब क्या है। केवल उसकी स्त्री अपनी काली भौहें सिकोड़ती और कहती :

"स्त्रियों को फंसानेवाले व्यक्ति का सा पार्ट अदा करना तुम्हें बिलकुल नहीं जंचता, दिमित्री।"

एक शाम को डाक्टर के क्लब से एक अफ़सर के संग, जिसके साथ वह ताश खेल रहा था, बाहर आते हुए वह अपने को यह कहने से न रोक सका :

"काश कि तुम जानते कि यालता में कितनी आकर्षक स्त्री के साथ मेरा परिचय हुआ था!"

वह अफ़सर स्लेज-गाड़ी पर बैठ गया और हाँकने लगा, परन्तु अचानक मुड़ा और ज़ोर से बोलाः

"द्मित्री द्मित्रिच!"

"क्या है?"

"आज शाम को तुम ठीक कह रहे थे : मछली कुछ सड़ी हुई थी!"

इन शब्दों ने, जो इतने साधारण थे, किसी कारण से गुरोव के मन में घृणा उत्पन्न कर दी। यह रिमार्क उसे अत्यन्त निम्नकोटि का और फूहड़ प्रतीत हुआ। कैसे जंगली रीति-रिवाज, कैसे बेहूदे आदमी! कैसी मनहूस रातें, कैसे नीरस, आकर्षणहीन दिवस! ताश खेलने का उन्माद, शराबखोरी, हमेशा एक ही सी बातें करना। बेकार के काम और हमेशा उन्हीं की बातें करने में मनुष्य के समय का सबसे अच्छा हिस्सा, शक्ति का सबसे बड़ा भाग, समाप्त हो जाता है और अन्त में ऐसी ज़िंदगी बची रहती है जो नीच, संकुचित, बेकार और नगण्य है, और इससे बचने या दूर भागने का कोई रास्ता नहीं रह जाता – बिल्कुल उसी तरह जैसे कोई पागलखाने या जेल में डाल दिया गया हो।

गुरोव रात भर नहीं सो सका। वह घृणा से भर उठा था। और अगले

दिन, पूरे समय उसे सिरदर्द रहा। दूसरी रात भी उसे अच्छी तरह नींद नहीं आई, वह सोचता हुआ पलंग पर बैठा रहा या कमरे में इधर से उधर घूमता रहा। वह अपने बच्चों से, बैंक से परेशान हो उठा था। कहीं जाने या किसी से बातें करने की भी उसकी इच्छा नहीं हुई।

दिसम्बर की छुट्टियों में उसने बाहर जाने की तैयारी की। अपनी स्त्री से कहा कि वह अपने किसी युवक मित्र का कोई काम करने पीटर्सबर्ग जा रहा है – और – 'स' क़स्बे के लिए रवाना हो गया। किस लिए? वह इस बात को खुद भी ठीक तरह से नहीं जानता था। वह आन्ना सेर्गेयेव्ना को देखना और उससे बातें करना चाहता था – और अगर मुमकिन हो सके तो मिलना भी चाहता था।

वह 'स' सुबह पहुँचा और होटल का सबसे अच्छा कमरा तय कर लिया जिसका फ़र्श भूरे फ़ौजी कपड़े से ढका हुआ था। मेज़ पर एक कलमदान रखा हुआ था जो धूल से भूरा हो गया था। उस कलमदान पर घुड़सवार की एक मूर्ति जड़ी हुई थी जिसका सिर टूट गया था और टोप हाथ में था। होटल के दरबान ने उसे ज़रूरी खबरें बता दीं। फ़ोन-डिडेरित्स, 'ओल्ड गोन्चार्नी स्ट्रीट' पर अपने एक निज के मकान में रहता था। यह मकान होटल से ज़्यादा दूर नहीं था। वह अमीर था और शान से रहता था। उसके पास अपने घोड़े थे। क़स्बे का हरेक व्यक्ति उसे जानता था। दरबान ने उसके नाम का उच्चारण "ड्रिडेरित्स" किया था।

गुरोव आराम से धीरे-धीरे 'ओल्ड गोन्चार्नी स्ट्रीट' गया और घर का पता लगा लिया। घर के बिल्कुल सामने एक लम्बी, भूरे रंग की दीवाल थी जिस पर कीलें लगी हुई थीं।

"कोई भी ऐसी चहारदीवारी को छोड़कर भाग जाना चाहेगा," गुरोव

ने दीवाल और घर की खिड़कियों की तरफ़ देखते हुए सोचा।

उसने सोचा : आज छुट्टी है। शायद पति घर पर ही होगा। और इस समय मकान के अन्दर जाकर आन्ना सेर्गेयेव्ना को परेशान कर देने में किसी भी तरह कोई अक्लमन्दी नहीं है। अगर वह उसके लिए कोई चिट्ठी भेजता तो वह उसके पति के हाथ में पड़ सकती थी और तब सब खेल ही खत्म हो जाता। सबसे अच्छा यही है कि मौक़े का इन्तज़ार किया जाय। और वह दीवाल के सामने सड़क पर, इधर से उधर टहलने लगा और मौक़े का इन्तज़ार करने लगा। उसने एक भिखारी को फाटक के अन्दर जाते और कुत्तों को उसपर टूटते हुए देखा। फिर एक घण्टे बाद उसने पियानो बजने की आवाज़ सुनी। स्वर बहुत हल्के और अस्पष्ट थे। शायद आन्ना सेर्गेयेव्ना बजा रही थी। सामने का दरवाज़ा एकाएक खुला और एक बुढ़िया बाहर निकली। वही परिचित सफ़ेद पोमेरानियन कुत्ता उसके पीछे-पीछे चल रहा था। गुरोव उस कुत्ते को बुलाने ही वाला था परन्तु उसका दिल बुरी तरह धड़क उठा और उस उत्तेजना में वह कुत्ते का नाम ही भूल गया।

वह इधर से उधर टहला और उस भूरी चहारदीवारी से और भी ज़्यादा नफ़रत कर उठा। और अब वह चिड़चिड़ा कर यह सोचने लगा कि आन्ना सेर्गेयेव्ना उसे भूल चुकी है और शायद किसी दूसरे के साथ अपना मनोरंजन करने लगी है और यह कि एक नवयुवती के लिए ऐसा करना नितान्त स्वाभाविक है जिसके पास सुबह से लेकर शाम तक, इस मनहूस चहारदीवारी को ताकने के अलावा और कोई भी काम न हो। वह अपने होटल में वापस लौट आया और बहुत देर तक सोफ़े पर बैठा रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। फिर उसने खाना खाया और देर तक सोता रहा।

"यह कितनी बेवकूफ़ी और परेशानी से भरा काम है!" जब वह उठा और अंधेरी खिड़कियों की तरफ़ देखा, तो सोचने लगा। शाम हो गई थी। "यहां किसी वजह से मुझे ख़ूब गहरी नींद आई। अब रात को क्या करूँगा?"

वह बिस्तर पर बैठ गया, जिस पर एक मामूली सा भूरा कम्बल बिछा हुआ था, जैसा कि अस्पतालों में दिखाई पड़ता है, और वह गुस्से में भर कर अपने आपको बुरा भला कह उठा :

"उस कुत्ते वाली महिला के लिए इतनी परेशानी ... उस घटना के लिए इतनी बेचैनी ... तुम अच्छी मुसीबत में पड़ गए ... "

उसी सुबह स्टेशन पर बड़े-बड़े अक्षरों में छपे हुए एक इश्तिहार पर उसकी नज़र पड़ी थी। "गैशा" का पहली ही बार प्रदर्शन होने वाला था। उसने उसके बारे में सोचा और थियेटर की तरफ़ चल दिया।

"हो सकता है कि वह पहला खेल देखने आये", उसने सोचा।

थियेटर भरा हुआ था। सभी प्रान्तीय थियेटरों की तरह यहां भी झाड़-फानूसों से ऊपर कुहरा छा रहा था। बरामदे में शोरगुल और बेचैनी थी। सामने की पहली पंक्ति में, खेल शुरू होने से पहले पीठ पीछे हाथ बांधे हुए, उसी क़स्बे के शौकीन छैले खड़े हुए थे। गवर्नर वाले बॉक्स में गवर्नर की लड़की फ़र पहने हुए सामने की सीट पर बैठी थी और गवर्नर खुद पर्दे के पीदे छिपा हुआ था। केवल उसके हाथ दिखाई दे रहे थे। आरकेस्ट्रा वाले बहुत देर तक बाजों को ठीक करते रहे। रंगमंच का परदा हिल रहा था। उस पूरे समय तक जब तक कि दर्शक भीतर आते और अपनी-अपनी जगहों पर बैठते गए, गुरोव उनकी तरफ़ उत्सुक होकर देखता रहा। आन्ना सेर्गेयेवना भी भीतर आई। वह तीसरी पंक्ति में बैठी और जब गुरोव ने उसकी तरफ़ देखा तो उसका दिल सिकुड़ने लगा और उसे स्पष्ट रूप से यह अनुभव हो गया कि समस्त संसार में

कोई भी प्राणी उसके लिए इतना प्रिय, इतना अमूल्य और इतना महत्वपूर्ण नहीं है। वह एक छोटी सी नारी – जो किसी भी तरह विशिष्ट नहीं कही जा सकती, जो एक प्रान्तीय भीड़-भाड़ में खोई हुई सी लगती है, हाथ में एक भद्दी सी दूरबीन पकड़े हुए है – उसकी पूरी ज़िन्दगी पर छा गई है। वही उसका सुख और दुख है – केवल, एकमात्र वही सुख जिसकी वह अपने लिए कामना करता है। और उस रद्दी आरकेस्ट्रा और वायोलिन के हल्के स्वरों में, उसने सोचा कि वह कितनी सुन्दर है। उसने सोचा और स्वप्न देखने लगा।

एक लम्बा, झुक कर चलने वाला, छोटे से गलमुच्छे वाला युवक आन्ना सेर्गेयेव्ना के साथ भीतर आया था और उसके पास बैठ गया था। आते समय हरेक कदम पर वह अपना सिर झुकाता और बराबर सलाम करता हुआ सा प्रतीत हो रहा था। शायद यही उसका पति था जिसके विषय में यालता में रहते समय, अत्यन्त कठोर होकर आन्ना सेर्गेयेव्ना ने 'चपरासी' शब्द का प्रयोग किया था। और सचमुच इस व्यक्ति की लम्बी काया, गलमुच्छे और खोपड़ी पर का गंजा गोल चकत्ता कुछ-कुछ एक चपरासी के से विनीत भाव की झलक मारता था। उसकी मुस्कान में मिठास थी। उसके कोट के बटन के छेद में किसी विशिष्ट पद का सूचक एक बिल्ला लगा हुआ था जो ख़ानसामे के नम्बर जैसा लगता था।

पहला अवकाश होने पर पति सिगरेट पीने बाहर चला गया। वह अपने कक्ष में अकेली रह गई। गुरोव, जो खुद भी पास बैठा हुआ था, उसके पास गया और बलात मुख पर मुस्कान लाने का प्रयत्न करते हुए, कांपती आवाज़ में बोला :

"गुड ईवनिंग।"

उसने उसकी तरफ़ देखा और पीली पड़ गई; भयभीत होकर दुबारा उसकी तरफ़ देखा। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने पंखा और दूरबीन कस कर हाथ में पकड़ लिए जिससे यह स्पष्ट हो रहा था कि वह अपने को बेहोश होने से बचाने की कोशिश कर रही है। दोनों खामोश थे। वह बैठी थी, गुरोव खड़ा था। वह उसकी परेशानी को देख कर डर गया था और उसके पास बैठने का साहस नहीं कर पा रहा था। वायोलिन और बंशी बजने लगी। अचानक वह भयभीत हो उठा। ऐसा लगा कि वहाँ बैठे हुए सब लोग उनकी तरफ़ देख रहे थे। वह खड़ी हो गई और तेज़ी से दरवाज़े की तरफ़ बढ़ी। गुरोव उसके पीछे-पीछे चला और दोनों बदहवास होकर बरामदों में, ऊपर-नीचे सीढ़ियों पर चलने लगे ओर उनकी आँखों के सामने से न्याय, शिक्षा और नागरिक सेवा विभाग की पोशाकें पहने हुए व्यक्ति, जो सब बिल्ले लगाए हुए थे, गुज़रते रहे। उन्हें शालीन महिलाओं और खूँटियों पर टँगे हुए फर कोटों की झलक दिखाई पड़ी। ठंडी हवा में कड़ी तम्बाकू की गन्ध भरी हुई थी। गुरोव ने, जिसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था, सोचा :

"ओह, भगवान! ये लोग यहाँ पर क्यों हैं और यह आरकेस्ट्रा!.."

और उसी समय उसे याद आया कि उस समय, जब वह आन्ना सेर्गेयेव्ना को स्टेशन पर विदा करने आया, उसने सोचा था कि सब मामला ख़त्म हो चुका है और उन लोगों की मुलाकात फिर कभी नहीं होगी। परन्तु अब भी वे लोग मंज़िल से कितनी दूर थे।

सँकरी, अँधेरी सीढ़ियों पर जिनके ऊपर 'उच्च क्लास की तरफ़ रास्ता' लिखा हुआ था, वह रुक गई।

"तुमने मुझे कितना डरा दिया!" गहरी साँसें लेते हुए वह बोली। उसके चेहरे पर अभी भी पीलापन और परेशानी के भाव झलक रहे थे।

"ओह, तुमने मुझे कितना डरा दिया। मैं तो अधमरी हो गई। तुम क्यों आये हो? किस लिए?"

"परन्तु ज़रा समझने की कोशिश तो करो, आन्ना, कुछ तो सोचो ... " वह जल्दी से धीमी आवाज़ में बोला। "मैं तुमसे समझने की प्रार्थना करता हूँ ... "

उसने गुरोव की तरफ़ आतंक, विनय और प्रेम के साथ देखा और टकटकी बांध कर देखती रही जिससे वह उसकी मुखाकृति को अपनी स्मृति में और भी स्पष्ट रूप से उभार सके।

"मैं इतनी दुखी हूँ," वह उसकी तरफ़ बिना ध्यान दिये कहती गई। "मैं पूरे समय सिर्फ़ तुम्हारे ही बारे में सोचती रही। मैं केवल तुम्हारी याद में ही जीवित हूँ। और मैं तुम्हें भूल जाना चाहती थी, भूल जाना, परन्तु क्यों, ओह, तुम क्यों आये हो?"

उसके ऊपर वाले छज्जे पर स्कूल के दो लड़के खड़े हुए तम्बाकू पी रहे और नीचे की तरफ़ देख रहे थे; परन्तु गुरोव ने इस बात की कोई चिन्ता नहीं की। उसने आन्ना सेर्गेयेव्ना को अपनी तरफ़ खींच कर चुम्बन लेना प्रारम्भ कर दिया। उसने आन्ना के मुख, गालों और हाथों के अनेक चुम्बन लिए।

"क्या कर रहे हो, क्या कर रहे हो!" भय से उसे हटाते हुए वह चीख पड़ी। "हम लोग पागल हो गये हैं। आज चले जाओ; फौरन चले जाओ ... मैं तुमसे प्रत्येक पवित्र वस्तु के नाम पर प्रार्थना करती हूँ, विनती करती हूँ ... इधर आदमी आ रहे हैं।"

कोई सीढ़ियों पर ऊपर आ रहा था।

"तुम्हें फ़ौरन ही चला जाना चाहिये," आन्ना सेर्गेयेवेना फुसफुसाती सी आवाज़ में कहती रही।

"तुम सुन रहे हो, द्मित्री द्मित्रिच? मैं मास्को आऊँगी और तुमसे मिलूँगी। मैं कभी सुखी नहीं रह पाई हूँ और मैं कभी भी सुखी नहीं रह पाऊंगी, कभी भी नहीं! मुझे और ज़्यादा मत सताओ! मैं कसम खाती हूँ कि मैं मास्को आऊंगी। परन्तु इस समय हमें अलग हो जाना चाहिये। मेरे प्राण प्यारे, हमें अलग हो जाना चाहिए!"

उसने गुरोव का हाथ दबाया और उसकी तरफ़ देखती हुई तेज़ी से उतरने लगी। उसकी आँखों से गुरोव ने जाना कि वह सचमुच दुखी थी। गुरोव कुछ देर तक खड़ा रहा, कान लगा कर सुना और जब सब तरह की आवाज़ें शान्त हो गईं तो उसने अपना कोट ढूंढ़ा और थियेटर से बाहर निकल आया।

4

और आन्ना सेर्गेयेव्ना उससे मिलने मास्को आने लगी। दो या तीन महीनों में एक बार वह 'स' से चलती, अपने पति से यह कह कर कि वह अपनी एक भीतरी बीमारी के बारे में विशेष डाक्टर से मिलने जा रही है। उसका पति उसकी बात का यकीन कर भी लेता और नहीं भी करता था। मास्को में वह स्लाव्यन्स्की बाज़ार होटल में ठहरती और फ़ौरन एक लाल टोपी वाले आदमी को गुरोव के पास भेज देती। गुरोव उससे मिलने जाता और मास्को में कोई भी इस बात को नहीं जान पाता।

एकबार वह जाड़ों की एक सुबह आन्ना से मिलने इसी तरह जा रहा था (सूचना देने वाला पिछली शाम को, जब वह घर पर नहीं था, बुलाने आया था)। उसके साथ उसकी बेटी भी थी जिसे वह स्कूल ले जाना चाहता था। स्कूल उसी रास्ते पर था। बड़े-बड़े रूई के से गोलों

के रूप में बरफ़ गिर रही थी।

''तापमान बरफ़ जमने से भी तीन डिग्री ऊँचे है, और फिर भी बरफ़ पड़ रही है,'' गुरोव अपनी बेटी से बोला, ''पिघलने वाला तापमान सिर्फ़ जमीन पर ही है, वातावरण में ऊँचाई पर तापमान कुछ दूसरा मालूम पड़ रहा है।''

''और जाड़ों में बादल क्यों नहीं गरजते, पिताजी?''

उसने यह बात भी समझा दी। वह बातें करता रहा और पूरे समय यह सोचता रहा कि वह उससे मिलने जा रहा है ओर कोई भी प्राणी इस बात को नहीं जानता और शायद कभी जान भी न सकेगा। उसका जीवन दो तरह का है : एक खुला, स्पष्ट और उन सभी लोगों द्वारा जाना हुआ जो जानना चाहते हैं, जिसमें सापेक्षिक सत्य और सापेक्षिक असत्य का मिश्रण है, बिल्कुल उसी तरह का जैसा उसके मित्रों और जान-पहचान वालों का है। और दूसरा जीवन गुप्त है जिसके अपने रहस्य हैं! और किन्हीं विचित्र, शायद, घटनात्मक परिस्थितियों के योग के कारण, प्रत्येक वह वस्तु जो उसके लिए आवश्यक मतलब की ओर महत्वपूर्ण है, प्रत्येक वह वस्तु जिसके बारे में वह सच्चा है और अपने को धोखा नहीं देता, प्रत्येक वह वस्तु जिसने उसके जीवन को आवृत कर रखा है, दूसरे व्यक्तियों की निगाहों से छिपी हुई थी। और वह सब बातें जो वह दिखाने के तौर पर करता था, वे साधन जिनके द्वारा वह सत्य को छिपा लेता था — जैसे उदाहरण के लिए उसका बैंक में काम करना, क्लब में बहस करना, 'घटिया नस्ल' विषयक बातें करना, अपनी स्त्री के साथ वार्षिक उत्सवों में उपस्थित रहना आदि, ये बातें सबके लिए स्पष्ट थीं। वह इन कामों को सबके सामने करता था। वह दूसरों को भी अपने ही जैसा समझने लगा था। जो कुछ देखता था उसी में विश्वास नहीं कर लेता था और हमेशा इस बात में विश्वास करता था कि प्रत्येक व्यक्ति

अपना वास्तविक, अत्यधिक मनोरंजक जीवन रहस्य के पर्दे में मानो रात्रि के अन्धकार में छिपाए रहता है। सबका व्यक्तिगत जीवन रहस्यपूर्ण होता है ओर शायद यही कारण है कि सभ्य व्यक्ति इस बात के लिए अत्यधिक उत्सुक और व्यग्र रहता है कि उसके जीवन के व्यक्तिगत भाग की दूसरे लोग इज़्ज़त करें।

अपनी बेटी को स्कूल छोड़ कर गुरोव स्लाव्यन्स्की बाज़ार गया। उसने अपना अन्दर फर वाला कोट नीचे उतार दिया, ऊपर गया और धीरे से दरवाज़ा खटखटाया। आन्ना सेर्गेयेवूना उसकी प्रिय भूरी पोशाक पहने हुए, यात्रा की थकावट और दुविधा से परेशान पहली शाम से ही उसका इन्तज़ार कर रही थी। वह पीली पड़ गई थी। उसने गुरोव की तरफ़ देखा परन्तु मुस्काई नहीं और वह अभी कमरे में घुसा ही था कि वह उसके सीने से चिपट गई। उन लोगों के चुम्बनों के आदान-प्रदान की गति धीमी परन्तु गहरी थी, मानो उन लोगों की दो साल से मुलाक़ात ही नहीं हो पाई हो।

''कहो, कैसी हो?'' गुरोव ने पूछा। ''क्या खबर है?''

''ठहरो, मैं अभी बताऊँगी ... मुझसे बोला नहीं जा रहा।''

वह बोल नहीं सकी, रो रही थी। उसने गुरोव की तरफ़ पीठ फेरी और आँखों से रूमाल लगा लिया।

''उसे रोकर हल्का हो लेने दो। मैं बैठ कर इन्तज़ार करूँगा,'' उसने सोचा और एक आराम कुर्सी पर बैठ गया।

फिर उसने घंटी बजाई और चाय लाने की आज्ञा दी। जब वह चाय पी रहा था तो आन्ना उसकी तरफ़ पीठ किये हुए खिड़की के पास खड़ी रही। वह उत्तेजना के कारण और इस दुखद स्थिति का अनुभव करके रो रही थी कि उन दोनों का जीवन, दोनों के लिए ही कितना कठोर बन

गया था। वे लोग केवल छिप कर ही मिल सकते थे – दूसरे लोगों से अपने को छिपा कर, चोरों की तरह! क्या उनका जीवन बर्बाद नहीं हो रहा था?

"सुनो, अब रहने भी दो!" उसने कहा।

उसे यह साफ़ दिखाई दे रहा था कि उन लोगों का यह प्रेमव्यापार जल्दी ही समाप्त नहीं होगा, और यह कि उसे इसका अन्त नहीं दिखाई दे रहा था। आन्ना सेर्गेयेव्ना उसके ज़्यादा से ज़्यादा नज़दीक आती जा रही थी। वह उसकी पूजा करने लगी थी और उससे यह कहना तो कल्पना से भी परे था कि किसी न किसी दिन इसका अन्त अवश्यम्भावी है। दूसरी बात यह कि कहने पर वह इसका विश्वास भी नहीं करती।

वह उसके पास गया और उसका कन्धा पकड़ कर कुछ दुलार की खुश करने वाली बात कहने ही वाला था कि उसी समय उसे शीशे में अपनी परछाईं दिखाई पड़ी।

उसके बाल सफ़ेद होने शुरू हो गये थे और उसे यह बड़ा अजीब सा लगा कि वह इतनी अधिक उम्र का दिखाई देने लगा है और पिछले इन कुछ ही वर्षों में उसके रहन-सहन में इतनी सादगी आ गई है। वह कन्धे जिन पर उसके हाथ रखे हुए थे, गर्म थे और काँप रहे थे। उसे इस जीवन पर दया आने लगी जो अब भी इतना नया और प्यारा था परन्तु शायद वह भी उसी की तरह जल्दी ही नीरस होकर मुरझा जाने वाला था। वह उसे इतना प्यार क्यों करती थी? वह स्त्रियों की निगाहों में, जो कुछ वह वास्तव में था, उससे भिन्न दिखाई पड़ता था और वे उसके रूप में स्वयं उससे प्रेम न करके उस व्यक्ति से प्रेम करती थीं जिसकी वे अपनी कल्पना द्वारा उसमें स्थापना कर लेती थीं और जिसकी उत्सुकतापूर्वक वे जीवन भर तलाश करती रहती थीं। और बाद में जब

उन्हें अपनी भूल मालूम पड़ती तब भी वे उससे प्यार करती थीं। और उनमें से एक भी उसके साथ सुखी नहीं रही थी। समय बीतता गया। उसने उन स्त्रियों से परिचय बढ़ाया, उनके साथ रहा, अलग हुआ, परन्तु उसने कभी एक बार भी प्रेम नहीं किया था। इसे आप चाहे जो समझ लें, परन्तु यह प्रेम नहीं था।

अब, जब कि उसके बाल सफ़ेद होने लगे थे, वह गहरे और ठीक रूप से, सचमुच प्रेम करने लगा था – अपने जीवन में प्रथम बार।

आन्ना सेर्गेयेव्ना और गुरोव एक दूसरे को इस तरह प्यार करते थे जैसे कि एक ही घर के अत्यन्त नज़दीकी रिश्तेदार प्यार करते हैं, पति और पत्नी की तरह, सच्चे मित्रों की तरह। उन्हें ऐसा लगता था मानो भाग्य ने ही उन्हें एक दूसरे के लिए रचा हो और वे इस बात को समझने में असमर्थ थे कि क्यों उसकी पत्नी है और क्यों उसका पति है। और उनकी ऐसी स्थिति थी जैसे साथ-साथ उड़ते हुए पक्षियों के जोड़े को पकड़ कर उन्हें अलग-अलग पिंजरों में रहने के लिए बाध्य कर दिया गया हो। उन्होंने उन बातों के लिए एक दूसरे को क्षमा कर दिया जिनके कारण वे अपने बीते हुए जीवन के प्रति लज्जा का अनुभव करते थे। उन्होंने वर्तमान की बुराइयों के लिए भी एक दूसरे को क्षमा कर दिया और यह अनुभव करने लगे कि उनके इस प्रेम ने उन दोनों को बदल दिया है।

अपनी पिछली ज़िन्दगी में जब कभी वह निराशाजनक कमज़ोरी का अनुभव करता था तो उस समय तत्काल दिमाग़ में उत्पन्न हुए तर्कों द्वारा अपने को समझा लेता था, परन्तु अब वह तर्कों की चिन्ता नहीं करता था। वह हृदय में अत्यधिक करुणा का अनुभव करता था, वह सच्चा और दयालु बनना चाहता था।

"रोओ मत, मेरी प्यारी," उसने कहा। "तुम मन भर कर रो चुकी, इतना काफ़ी है अब आओ, बातें करें, कोई तरकीब सोचें।"

फिर वे लोग बहुत देर तक बैठे हुए सलाह-मशविरा करते रहे। उन लोगों ने सोचा कि इस चोरी से मिलने को किस तरह समाप्त किया जाय, इस धोखेबाज़ी, इस अलग-अलग शहरों में रहने को और बहुत दिनों तक एक दूसरे को न देख पाने की समस्या को केसे दूर किया जाय। इस असहनीय बन्धन से वे किस प्रकार छुटकारा पा सकें?

"कैसे? कैसे?" उसने अपना सिर पकड़ते हुए पूछा। "कैसे?"

और ऐसा लगा मानो अभी इस समस्या का हल मिल जाता है और तब नई और शानदार ज़िन्दगी शुरू होगी, और उन दोनों को यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि अभी उन्हें बहुत बड़ा, बहुत लम्बा रास्ता तय करना है और यह कि इसका सबसे कठिन और सबसे पेचीदा हिस्सा अभी शुरू ही हुआ है।

1899

डार्लिङ्ग

एक छोटे अफ़सर प्लेम्यान्निकोव की लड़की ओलेन्का, अपने पिछवाड़े वाले ओसारे में विचारों में खोई हुई बैठी थी। मौसम गर्म था। मक्खियाँ बराबर भिनभिनाती हुई परेशान कर रही थीं। वह यह सोच कर खुश हो रही थी कि जल्दी शाम हो जायगी। पूर्वाकाश में बरसने वाले काले बादल घिर रहे थे और रह-रह कर हवा का सीत भरा हुआ झोंका आ रहा था।

कुकिन, जो बाहर खुले मैदान में खेल दिखाने वाले, 'टिवोली' नामक, थियेटर का मैनेजर था, और जो इसी अहाते में छोटे घर में रहता था, बाग़ के बीच खड़ा हुआ आसमान की तरफ़ देख रहा था।

"फिर"! उसने निराश होकर कहा। "फिर पानी बरसने वाला है। रोज़ पानी बरसता है, मानो मुझसे घृणा करता है। मैं फाँसी लगा कर मर जाऊँगा! यह बरबादी है! हर रोज़ कितना नुकसान उठाना पड़ता है।"

उसने अपने हाथ फटकारे और ओलेन्का को सम्बोधन कर कहता गया :

"देखो न! हम लोग ऐसा जीवन बिताते हैं, ओल्गा सेमियोनोव्ना। इतना किसी को भी रुलाने के लिए काफ़ी है। कोई व्यक्ति काम करता है और अपनी पूरी कोशिश के साथ करता है, अपने को पूरी तरह घुला देता है, रात को सोना हराम हो जाता है और अच्छे से अच्छा काम

सोचने में अपने दिमाग को खपा डालता है। और नतीजा क्या निकलता है? पहली बात तो यही कि किसी के दर्शक अज्ञानी और जंगली हों। मैं उन्हें अच्छे से अच्छा खेल दिखाता हूँ, सुन्दर कठपुतली का तमाशा, मंजे हुए संगीत बजाने वाले कलाकार। परन्तु तुम सोचती हो कि क्या वे लोग यही चाहते हैं! वे इस तरह की चीज़ों को समझ ही नहीं पाते। उन्हें विदूषक चाहिए। वे लोग अश्लीलता की माँग करते हैं। और फिर मौसम को देखो! लगभग हर शाम को पानी बरसता है। दस मई को पानी बरसना शुरू हुआ था और पूरी मई और पूरे जून तक बरसता रहा। यह कितना भयानक है! दर्शक आते नहीं और मुझे पूरा किराया देना ही पड़ता है, कलाकारों को भी वेतन देना पड़ता है।''

दूसरी शाम को फिर बादल घिर आयेंगे और कुकिन पागल की सी हँसी हँसते हुए कहेगा :

''अच्छा, खूब बरसो! बाग़ को बहा दो, मुझे डुबा दो! इस लोक में और परलोक में भी मेरी तक़दीर को फोड़ दो! कलाकारों को मेरे ऊपर हावी हो जाने दो! मुझे सज़ा करा दो! साइबेरिया भेज दो! सूली पर चढ़ा दो! हा-हा-हा!''

और तीसरे दिन फिर वही बात ...

ओलेन्का शान्त होकर गम्भीरतापूर्वक कुकिन की बातें सुनती रहती और कभी-कभी उसकी आँखों में आँसू भर आते। अन्त में उसकी मुसीबतों ने उसके हृदय को छू लिया, वह उसे प्यार करने लगी। वह एक दुबला-पतला, छोटा सा आदमी था। उसका चेहरा पीला था और घुंघराले बाल माथे पर आगे की तरफ़ कढ़े रहते थे। वह पतली आवाज़ बोलता था। बोलते समय उसका मुँह केवल एक तरफ़ ही हिलता था। उसके चेहरे पर हमेशा निराशा के भाव छाए रहते थे। फिर भी उसने

ओलेन्का के हृदय में एक गहरे और सच्चे प्रेम की भावना उत्पन्न कर ली। वह हमेशा किसी न किसी को प्यार करती रहती थी और बिना प्यार किए ज़िन्दा नहीं रह सकती थी। बहुत पहले वह अपने बाप को प्यार करती थी जो अब एक अँधेरे कमरे में बैठा हुआ मुश्किल से साँस ले पाता था। उसने अपनी चाची से प्यार किया था जो हर दूसरे साल ब्रियांस्क से आया करती थी। और उससे पहले जब वह स्कूल में पढ़ती थी वह अपने फ्रांसीसी मास्टर को प्यार करती थी। वह एक सीधी कोमल हृदय वाली और दयालु लड़की थी। उसकी आँखें नम्र तथा कोमल और स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। उसके भरे हुए गुलाबी गालों, उसकी कोमल सफ़ेद गर्दन जिस पर एक मस्सा था, और कोई खुशी की बात सुनते समय उसके मुंह पर खेल जाने वाली कोमल, सरल मुस्कान आदि को देख कर आदमी सोचते ''हाँ, बुरी नहीं है,'' और मुस्करा भी उठते। और मेहमान महिलाएं बातें करते-करते, बरबस उसका हाथ पकड़ लेतीं और प्रसन्नता से खिल कर कह उठतीं ''तुम कितनी प्यारी हो!''

वह घर जिसमें वह अपने जन्म से लेकर अब तक रहती आई थी और जो उसके पिता ने उसके नाम वसीयत कर रखा था, शहर के सबसे अन्तिम छोर पर 'जिप्सी बस्ती' में था – ''टिवोली'' के पास। शाम को और रात को वह बैन्ड का संगीत और आतिशबाज़ी का छूटना सुना करती थी और उसे ऐसा लगता था कि वह कुकिन है जो अपने भाग्य से लड़ रहा है, अपने सबसे बड़े दुश्मन पर – उसे न चाहने वाली जनता पर भयंकर आक्रमण कर रहा है। उसके हृदय में एक मीठी गुदगुदी उठती। उसका मन सोने को नहीं करता था और जब सूरज निकलने पर वह घर लौटता, वह धीमे से अपने शयन-गृह की खिड़की पर थपकी देती और उस परदे के पीछे से सिर्फ अपना मुखड़ा और एक कन्धा दिखाती

हुई उसकी तरफ़ मित्रतापूर्ण भाव से मुस्करा उठती।

कुकिन ने उसके सम्मुख शादी का प्रस्ताव रखा और उन दोनों की शादी हो गई। जब उसने उसकी गर्दन और स्वस्थ, सुन्दर कन्धों को नज़दीक से देखा तो उसने हाथ ऊपर उठाये और बोला :

"तुम कितनी प्यारी हो!"

वह खुश था परन्तु चूंकि उसकी शादी वाले दिन चौबीस घंटे पानी बरसता रहा था इसलिए उसके चेहरे पर अब भी निराशा के भाव झलक रहे थे।

वे लोग सुन्दर जीवन बिताने लगे। वह "टिवोली" के कामों को सम्हालने के लिए उसके दफ़्तर में बैठ जाती, हिसाब लिखती और वेतन बाँटती। उसके गुलाबी गाल, उसकी मधुर, सरल, प्रसन्न, मुस्कराहट इस क्षण दफ़्तर की खिड़की पर दिखायी पड़ती तो दूसरे क्षण जलपान-गृह में या थियेटर के ग्रीन-रूम में। वह अब अपनी जान-पहचान वालों से कहने लगी थी कि ज़िन्दगी में सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख वस्तु थियेटर है और यह कि केवल नाटक के द्वारा ही कोई व्यक्ति जीवन में सच्चा आनन्द पा सकता है और सभ्य तथा मानव गुण सम्पन्न बन सकता है।

"परन्तु क्या तुम सोचते हो कि जनता इसे समझती है?" वह कहा करती। "वे सिर्फ़ विदूषक चाहते हैं। कल हम लोगों ने 'फ़ौस्ट' खेला था और लगभग सब जगहें खाली थीं, लेकिन अगर वानिच्का और मैं कोई अश्लील खेल दिखाते तो मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि पूरा थियेटर भर जाता। कल मैं और वानिच्का 'नर्क में ओरफियूस' दिखायेंगे। ज़रूर आना।"

और कुकिन थियेटर और अभिनेताओं के बारे में जो कुछ कहता वह उसी को दुहराती रहती। उसी तरह वह जनता के अज्ञान और कला के

प्रति उदासीनता के कारण उससे घृणा करती थी। वह रिहर्सलों में भाग लेती, अभिनेताओं की ग़लतियों को ठीक करती, गाने बजाने वालों के व्यवहार पर निगाह रखती और जब स्थानीय समाचार पत्रों में थियेटर के ख़िलाफ़ कोई बात निकलती तो उसपर आँसू बहाती और फिर सम्पादक के दफ़्तर में मामले को ठीक करने के लिए जा पहुंचती।

अभिनेता लोग उसे प्यार करते और 'वानिच्का और मैं', तथा 'डार्लिङ्ग' कह कर पुकारा करते। वह उनकी दशा देख कर दुखी होती और उन्हें छोटी-छोटी रक़में उधार दिया करती और अगर वे उसे धोखा देते तो एकान्त में बैठ कर आँसू बहा लेती परन्तु अपने पति से कभी शिकायत नहीं करती थी।

उनके जाड़े भी अच्छी तरह कट गए। शहर में उन्होंने जाड़े भर के लिये थियेटर ले लिया और थोड़े-थोड़े समय के लिए उसे एक छोटी उक्रइनी मण्डली या किसी जादूगर या किसी स्थानीय नाटक-मण्डली को किराए पर दे देते रहे। ओलेन्का मोटी हो गई। उसके चेहरे पर हमेशा सन्तोष की चमक दीखने लगी जबकि कुकिन दुबला और पीला पड़ता गया और हमेशा अपने भयंकर नुकसान की बातें करता रहा हालांकि उसके जाड़े बुरे नहीं कटे थे। वह रात को खाँसा करता और ओलेन्का उसे गरम रसभरी की चाय या नींबू के फूल का पानी पिलाया करती या उसके पैरों पर 'यू-डी-कोलोन' मल देती और उसे गरम दुशालों में लपेट रहती।

"तुम कितने प्यारे हो!" वह उसके बालों को थपथपाती हुई पूर्ण आत्मीयता के साथ कहा करती," तुम कितने सुन्दर और प्रिय हो!"

ईसाइयों के चालीस दिन के व्रत (लेन्ट) के दिनों में कुकिन अभिनेताओं की नई मण्डली इकट्ठी करने के लिए मास्को गया।

उसके बिना ओलेन्का की नींद हराम हो गई। वह रात भर अपनी खिड़की पर बैठी हुई तारों को गिना करती और अपनी तुलना मुर्गियों से करती जो रात भर जगती और बेचैन होती रहती है, जब उनका मुर्गा उनके पास नहीं रहता। कुकिन को मास्को में रुक जाना पड़ा और वहाँ से उसने लिखा कि वह ईस्टर तक वापस आएगा। साथ ही उसने "टिवोली" के बारे में कुछ हिदायतें भी भेजीं। परन्तु ईस्टर से पहले रविवार को शाम गहरी हो जाने पर ओलेन्का के दरवाज़े पर मनहूस खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी। कोई व्यक्ति दरवाज़े को बुरी तरह खटखटा रहा था मानो डण्डे मार रहा हो – खट-खट-खट! जैसे ही वह दरवाज़ा खोलने के लिए दौड़ी, ऊँघता हुआ मुर्गा उसके नंगे पैरों की ठोकर खा कर भाग गया।

"कृपया खोलिए," किसी ने बाहर से भारी आवाज़ में कहा : "आपका तार है।"

ओलेन्का ने पहले भी अपने पति द्वारा भेजे गए तारों को लिया था परन्तु इस बार किसी कारणवश वह भय से सुन्न पड़ गई। कांपते हाथों से उसने तार खोला और पढ़ा :

"इवान पेत्रोविच आज अचानक मर गया। फफंत्येष्ठि क्रिया के सम्बन्ध में आवश्यक आदेशों की तुत प्रतीक्षा है।"

तार में इसी तरह लिखा हुआ था – "फफंत्येष्ठि" और सबसे अधिक न समझ में आने वाला शब्द "तुत" था। इस तार पर उस नाटक कम्पनी के रंगमंच निर्देशक के हस्ताक्षर थे।

"मेरे प्यारे!" ओलेन्का रोने लगी। "वानिच्का, मेरे जीवन-सर्वस्व, मेरे प्यारे! मेरी तुम्हारी मुलाकात क्यों हुई थी। मैंने तुम्हें क्यों जाना और क्यों प्यार किया! तुम्हारी बेचारी भग्न-हृदया ओलेन्का तुम्हारे बिना

बिल्कुल अकेली है।"

कुकिन की अंत्येष्टि क्रिया मंगलवार को मास्को में की गई। ओलेन्का बुधवार को घर लौट आई और जैसे ही घर में घुसी, बिस्तर पर गिर पड़ी और इतने ज़ोर से धाड़ें मार-मारकर रोने लगी कि उसकी आवाज़ पड़ोस में और सड़क तक सुनाई पड़ती थी।

"बेचारी डार्लिंग!" पड़ोसियों ने कहा और उसकी रक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना की। "ओल्गा सेमियोनोव्ना, बेचारी डार्लिङ्ग! वह इसे कैसे बर्दाश्त करेगी!"

तीन महीने बाद ओलेन्का गिरजे से लौट कर घर आ रही थी – उदास और गहरे शोक में डूबी हुई। ऐसा हुआ कि उसका एक पड़ोसी, वासिली आंद्रेइच पुस्तोवालोव गिरजे से लौटता हुआ उसके साथ-साथ पीछे चलने लगा। वह इमारती लकड़ी के व्यापारी बाबाकाएव के यहाँ मैनेजर था। वह मूंज का टोप, सफ़ेद वास्कट और एक घड़ी की सुनहरी चेन पहने हुए था और एक व्यापारी की बनिस्बत देहाती सज्जन जैसा दिखाई दे रहा था।

"जो तक़दीर में लिखा होता है वही होता है, ओल्गा सेमियोनोव्ना," उसने अपने स्वर में सहानुभूति भरते हुए गम्भीरतापूर्वक कहा, "और अगर हमारा कोई प्रिय मर जाता है, वह सिर्फ़ इसीलिए होता है क्योंकि भगवान की ऐसी ही इच्छा थी। इसलिए हमको धीरज धर कर नम्रतापूर्वक इसे सहना चाहिए।"

ओलेन्का को उसके दरवाज़े तक पहुँचा कर उसने नमस्कार किया और चला गया। इसके बाद प्रतिदिन वह उसकी शान्त रोबीली आवाज़ सुनती रहती और जब भी अपनी आँखें बन्द करती उसकी काली दाढ़ी सामने आ जाती। वह उसे बहुत ज़्यादा पसन्द करने लगी। और स्पष्ट

रूप से उसने उसपर भी अपना प्रभाव डाल दिया था क्योंकि कुछ ही दिनों बाद, एक अधेड़ औरत जिससे उसकी बहुत मामूली सी जान-पहचान थी, उसके साथ काफ़ी पीने आई और अपनी जगह पर बैठते ही पुस्तोवालोव के बारे में बातें करने लगी। उसने कहा कि वह बहुत अच्छा आदमी है जिसके ऊपर कोई भी पूरा भरोसा कर सकता है और यह कि कोई भी लड़की उससे शादी करके खुश होगी। तीन दिन बाद पुस्तोवालोव खुद आया। वह ज़्यादा नहीं ठहरा — सिर्फ़ दस मिनट — और उसने ज़्यादा बातें भी नहीं कीं, लेकिन जब वह चला गया तो ओलेन्का उसे प्यार करने लगी — इतना ज़्यादा प्यार करने लगी कि वह रात भर वाक़ई बुखार में पड़ी हुई जागती रही और सुबह ही उसने उस अधेड़ औरत को बुलवा भेजा। फ़ौरन ही शादी तय हो गई और फिर वे दोनों परस्पर विवाह-सूत्र में बंध गए।

शादी के बाद पुस्तोवालोव और ओलेन्का परस्पर प्रेमपूर्वक रहने लगे।

आम तौर पर भोजन के समय तक वह दफ़्तर में बैठा रहता फिर काम से बाहर चला जाता। उस समय ओलेन्का उसकी जगह ले लेती और शाम तक दफ़्तर में बैठी हुई हिसाब-किताब और खरीद-फ़रोख़्त करती रहती।

"इमारती लकड़ी हर साल तेज़ होती जा रही है, कीमत बीस फ़ीसदी बढ़ गई है," वह अपने ग्राहकों और मित्रों से कहा करती। "तनिक सोचिए तो सही कि पहले हम यहीं की इमारती लकड़ी बेचा करते थे और अब वासिच्का को लकड़ी खरीदने के लिए मोगिलेव ज़िले तक जाना पड़ता है। और किराया!" वह भयभीत होकर अपने गालों पर दोनों हाथ रख कर कहती, "किराया!"

उसे ऐसा लगता कि यह इमारती लकड़ी का व्यापार युगों से करती आई है और यह कि जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण और आवश्यक वस्तु इमारती लकड़ी है। उसे "रुकावट" "खम्भा", "शहतीर", "लट्ठा", "नमूना", 'तख़्ता", "पट्टी", आदि शब्दों में एक आत्मीयता और आकर्षण दिखाई देने लगा था।

रात को जब वह सो रही होती तो स्वप्न में तख़्तों और शहतीरों के पहाड़ जैसे ढेर, और लकड़ी से भरे हुए गाड़ी के डिब्बों की लम्बी क़तारों को कहीं दूर जाते हुए देखती। वह सपना देखती कि छः इन्च मोटी और चालीस फुट लम्बी शहतीरों की एक पूरी फ़ौज दूर से लकड़ी के गोदाम की तरफ़ मार्च करती हुई आ रही है और यह कि लट्ठे, शहतीर, तख़्ते आपस में टकरा कर शोर उत्पन्न कर रहे हैं, गिर पड़ते हैं और फिर खड़े हो जाते हैं और एक दूसरे पर गिर कर ढेर पर ढेर लगाते चले जा रहे हैं। ओलेन्का नींद में चीख़ उठी, पुस्तोवालोव ने उससे नम्रतापूर्वक कहा, "ओलेन्का, क्या हुआ, डार्लिङ्ग? प्रार्थना करो!"

उसके पति के विचार उसके विचार थे। अगर वह यह सोचता कि कमरा बहुत गरम है या यह कि व्यापार मन्दा है तो वह भी यही सोचने लगती थी। उसका पति मनोरंजन को पसन्द नहीं करता था और छुट्टियों के दिन घर पर ही रहता था। वह भी ऐसा ही करती।

"तुम हमेशा या तो दफ़्तर में रहती हो या घर पर" उसके मित्रों ने उससे कहा: "डार्लिङ्ग, तुम्हें थियेटर या सर्कस देखने जाना चाहिये।"

"मेरे और वासिच्का के पास थियेटर जाने के लिए समय नहीं है", वह शान्तिपूर्वक उत्तर देती। "हमारी पास वाहियात बातों में बर्बाद करने के लिए समय नहीं है। इन थियेटरों से फ़ायदा ही क्या है?"

शनिवार के दिन वह और पुस्तोवालोव गिरजे में सांध्य-प्रार्थना के

लिए जाया करते और छुट्टियों वाले दिन सुबह की प्रार्थना में और जब वे गिरजे से घर लौटते तो साथ-साथ नम्र भाव से हल्के क़दम रखे हुए चलते। उन दोनों के चारों तरफ़ एक सुन्दर खुशबू उड़ा करती और ओलेन्का की रेशमी पोशाक में से मनमोहक सरसराहट की आवाज़ आती रहती। घर पर वे चाय पीते। चाय के साथ बढ़िया डबल रोटी और तरह-तरह के मुरब्बे खाते और बाद में समोसे खाये जाते। हर रोज़ बारह बजे के क़रीब उनके अहाते से चुकन्दर के शोरबे और भेड़ या बत्तख के गोश्त की, लार टपकाने वाली खुशबू उड़ा करती और उपवास वाले दिनों मछली की सुगन्ध आती रहती जिसे सूंघ कर उस दरवाज़े के सामने से होकर गुज़रने वाले हरेक मनुष्य को भूख लगने लगती। दफ़्तर में हमेशा समोवार उबलता रहता और ग्राहकों का चाय और बिस्कुटों से स्वागत किया जाता। सप्ताह में एक बार यह दम्पति नहाने के लिए जाते और लाल मुँह लिए हुए साथ-साथ वापिस लौटते।

"हाँ, हम लोगों को किसी चीज़ की कमी नहीं, भगवान को धन्यवाद है," ओलेन्का अपने परिचितों से कहा करती। "मैं चाहती हूं कि सब लोग मेरी ओर वासिच्का की तरह खुश रहें।"

जब पुस्तोवालोव लकड़ी खरीदने मोगिलेव ज़िले को चला गया तो ओलेन्का उसके बिना बहुत व्याकुल रहने लगी, रात भर जागती पड़ी रहती और रोती रहती। फ़ौज के घोड़ों का एक युवक डाक्टर स्मिरनिन जिसे उन्होंने अपना छोटा मकान किराए पर दे रखा था, कभी-कभी शाम को मिलने आ जाया करता था। वह उसके साथ बातें करता और ताश खेलता रहता था। इस बात से पति की अनुपस्थिति में उसका मनोरंजन हो जाता था। वह विशेष रूप से उसके घरेलू जीवन की बातें बड़ी रुचिपूर्वक सुना करती थी। वह विवाहित था और उसके एक लड़का भी

था परन्तु वह अपनी स्त्री से अलग हो गया था क्योंकि वह उसके प्रति सच्ची नहीं रही थी और अब वह उसे नफ़रत करता था तथा हर माह अपने लड़के के खर्च के लिए चालीस रूबल भेजा करता था। यह सब सुन कर ओलेन्का ने सिर हिलाया और गहरी साँस खींची। वह उसके लिए दुखी थी।

"खैर, भगवान तुम्हारी मदद करे," वह अलग होते समय उससे कहा करती जब उसे सीढ़ियों तक रोशनी दिखाने जाती। "मेरा मन बहलाने के लिए तुम्हारी मेहरबानी के लिए शुक्रिया। माता तुम्हारी तन्दुरुस्ती कायम रखे।"

वह हमेशा अपने पति की नक़ल करते हुए उसी की तरह, उसी शान्त और गर्वपूर्ण मुद्रा में, उसी बुद्धिमत्ता के साथ अपने विचार व्यक्त किया करती। और जब वह घोड़ों का डाक्टर नीचे दरवाज़े के बाहर गायब हो रहा होता, तो वह कहती :

"तुम जानते हो ब्लादीमीर प्लाटोनिच, अच्छा हो कि तुम अपनी स्त्री से समझौता कर लो। तुम्हें अपने बेटे की ख़ातिर उसे माफ़ कर देना चाहिए। तुम विश्वास रखो कि वह छोटा बच्चा सब समझता है।"

और जब पुस्तोवालोव वापस आया, ओलेन्का ने उसे घोड़ों के डाक्टर और उसके दुखमय पारिवारिक जीवन के बारे में धीमे शब्दों में सब कुछ बता दिया। दोनों ने गहरी साँसें भरीं, सिर हिलाए और उस लड़के के बारे में बातें कीं जो निस्सन्देह अपने पिता की याद करता होगा। किन्हीं विचित्र विचारों से प्रेरित होकर वे दोनों पवित्र मूर्त्तियों के पास गए और उनके सामने ज़मीन पर सिर टेक कर प्रार्थना की कि भगवान उन्हें बच्चे दे।

इस तरह पुस्तोवालोव परिवार छः साल तक पूर्ण शान्ति के साथ प्रेमपूर्वक रहता रहा।

लेकिन अफ़सोस! जाड़ों में एक दिन दफ़्तर में गरम चाय पीने के बाद वासिली आंद्रेइच बिना टोपी पहने हुए ही कुछ लकड़ी भेजने के लिए बाहर अहाते में चला गया। वहीं उसे सर्दी लग गई और वह बीमार पड़ गया। अच्छे डाक्टरों ने उसका इलाज किया परन्तु उसकी हालत बिगड़ती ही गई। चार महीने बाद वह मर गया। ओलेन्का एक बार फिर विधवा हो गई।

''मेरा कोई नही है, अब तुम मुझे छोड़ गए, प्रियतम,'' अपने पति की अंत्येष्टि क्रिया के बाद वह रोने लगी। ''मैं तुम्हारे बिना कैसे रह सकती हूं — इस दुखी और दीन दशा में। भले आदमियों, मेरे ऊपर रहम खाओ, मैं इस संसार में नितान्त अकेली हूँ।''

वह काली लम्बी पोशाक पहनने लगी; टोप और दस्ताने बिल्कुल पहनना बन्द कर दिया। वह बहुत कम बाहर निकलती। सिर्फ़ गिरजाघर या अपने पति की कब्र पर जाती और सन्यासिनी का जीवन बिताने लगी। छः महीने बाद ही उसने काली लम्बी पोशाक उतारी और खिड़कियों की झंझरियों को खोला। वह कभी-कभी अपनी महराजिन के साथ सुबह, सामान खरीदने के लिए बाज़ार जाती हुई दिखाई देने लगी परन्तु उसके घर में क्या हो रहा है, या वह कैसे रहती है इस बात का केवल अनुमान ही लगाया जा सकता था। लोग उसे बाग़ में घोड़ों के डाक्टर के साथ चाय पीते हुए देख कर अनुमान लगाते, जो उसे ज़ोर-ज़ोर से अख़बार पढ़ कर सुनाया करता। इस बात से भी उन्होंने अनुमान लगाया कि डाकखाने पर अपनी एक जान-पहचान की महिला से मुलाकात होने पर उसने कहा था :

''हमारे कस्बे में जानवरों की ठीक देखभाल नहीं होती और यही सब बीमारियों की जड़ है। हमेशा यही सुनाई देता है कि लोग-बाग दूध की वजह से बीमार पड़ते हैं या घोड़ों या गौओं से बीमारी फैलती है। घरेलू जानवरों की तन्दुरुस्ती का भी उतना ही ख्याल रखना चाहिए जितना कि आदमियों की तन्दुरुस्ती का।''

वह घोड़ों के डाक्टर के शब्द दुहराती और हर चीज़ के बारे में उसकी भी वही राय रहती जो उस डाक्टर की थी। यह स्पष्ट था कि वह किसी को बिना प्रेम किए एक साल भी नहीं रह सकती थी, और उसे उस छोटे मकान में अपनी नई खुशी मिल गई। किसी भी दूसरी स्त्री के विषय में यह कलंक की बात होती परन्तु ओलेन्का के बारे में कोई भी बुरी बात नहीं सोच सकता था। उसका प्रत्येक कार्य इतना स्वाभाविक जो होता था। न उस डाक्टर ने और न ओलेन्का ने ही किसी से अपने सम्बन्धों में हुए परिवर्तन का ज़िक्र किया और उन्होंने सचमुच इस बात को छिपाने की कोशिश की परन्तु असफल रहे, क्योंकि ओलेन्का किसी भी रहस्य को सुरक्षित रखने में असमर्थ थी। जब उस डाक्टर के पास, उसकी रेजीमेन्ट में काम करने वाले लोग आते और वह उनके लिए चाय ढालती या खाना परोसती तो जानवरों की प्लेग, पैर और मुँह की बीमारियों और चुँगी के कट्टीखाने के बारे में बातें करने लगती। वह बहुत परेशान हो उठता और जब मेहमान चले जाते तो वह उसकी बाँह पकड़ लेता और गुस्से से उबलते हुए कहता :

''मैंने तुमसे पहले ही मना कर दिया था कि जिस बात को तुम नहीं समझती उसके बारे में मत बोला करो। हम डाक्टर लोग आपस में बातें कर रहे हों तो बीच में बात मत किया करो। यह सचमुच बहुत परेशान कर देने वाली आदत है।''

ओलेन्का उसकी तरफ़ भय और आश्चर्य से देखती और परेशान होकर पूछती :

''मगर, वालोदिच्का, मैं क्या बातें करूँ?''

और आँखों में आँसू भर कर वह उससे चिपट जाती, उससे नाराज़ न होने की प्रार्थना करती और दोनों प्रसन्न हो उठते।

परन्तु यह प्रेम-व्यापार बहुत दिनों तक न चल सका। वह डाक्टर चला गया, अपनी फ़ौज के साथ हमेशा के लिए चला गया, जब उसका तबादला दूर – बहुत दूर साइबेरिया की तरफ़ – हो गया और ओलेन्का अकेली रह गई।

अब वह बिल्कुल अकेली थी। उसका बाप बहुत पहले मर चुका था। उसकी एक टूटी टाँग वाली आराम कुर्सी, धूल से ढकी हुई बरामदे में पड़ी रहती थी। ओलेन्का पतली और पीली पड़ गई थी और जब सड़क पर उसकी मुलाकात आदमियों से होती तो वे अब उसकी तरफ़ नहीं देखते थे जैसे कि पहले देखा करते थे और न उसकी तरफ़ देख कर मुस्कराते ही थे। यह साफ़ था कि उसकी ज़िन्दगी के सबसे अच्छे दिन गुज़र चुके थे और अब उसकी एक नई तरह की ज़िन्दगी शुरू हुई थी जिसके बारे में कोई भी कभी नहीं सोचता था। शाम को ओलेन्का ओसारे में जाकर बैठ जाती और ''टिवोली'' में बजते हुए बैन्ड को सुना करती ओर छूटती हुई आतिशबाज़ी को देखा करती परन्तु अब उनका उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वह अपने खाली अहाते की तरफ़ बिना किसी रुचि के देखती, किसी के बारे में न तो सोचती ही ओर न किसी बात की इच्छा करती और बाद में जब रात घिर आती, वह सोने चली जाती और अपने खाली अहाते का सपना देखती। वह खाती पीती भी इस तरह थी मानो यह काम अनिच्छापूर्वक कर रही हो।

और सबसे बुरी बात यह थी कि उसके किसी तरह के कोई अपने विचार नहीं थे। वह अपने चारों तरफ़ की चीज़ों को देखती और जो कुछ देखती उसे समझती, परन्तु उनके बारे में कोई धारणा बनाने में असमर्थ रहती और यह नहीं जानती थी कि उनके बारे में क्या बातें करे। किसी भी तरह की कोई धारणा न रखना कितना भयानक होता है! मिसाल के तौर पर जैसे कोई एक बोतल, या बारिश या एक किसान को अपनी गाड़ी हाँकते हुए देखता है परन्तु इस बात को कि बोतल, या बारिश या किसान किसलिए है और इनका क्या अर्थ है, नहीं बता सकता और एक हज़ार रूबल देने पर भी नहीं बता सकता। जब उसके साथ कुकिन, पुस्तोवालोव या वह घोड़ों का डाक्टर था ओलेन्का सब चीज़ों की व्याख्या कर सकती थी, जिस बात के बारे में भी चाहे अपनी राय प्रकट कर सकती थी। परन्तु अब उसके दिमाग और दिल में उसी तरह का सूनापन छा रहा था जैसा कि उसके अहाते में था। यह सब उतना ही कठोर और कड़वा था जितना कि मुँह में किसी कड़वी चीज़ का आ जाना।

धीरे-धीरे क़स्बा चारों ओर बढ़ने लगा। 'जिप्सी बस्ती' नामक गली सड़क बन गई और जहाँ ''टिवोली'' और इमारती लकड़ी का गोदाम था वहाँ अब नए मोड़ और नए घर बन गए थे। समय कितनी जल्दी गुज़र जाता है। ओलेन्का का घर पुराना पड़ने लगा, छत उधड़ने लगी, छप्पर एक तरफ़ को खिसक गया और सारे अहाते में कीड़े-मकोड़े घूमने लगे। ओलेन्का खुद सादा और अधेड़ सी लगने लगी। गर्मियों में वह ओसारे में बैठी रहती और उसकी आत्मा पहले की तरह शून्य और नीरस तथा कटुता से भरी रहती। जाड़ों में वह अपनी खिड़की पर बैठ जाती और बरफ़ की तरफ़ देखती रहती। जब वह बसन्त की सुगन्ध सूंघ लेती या गिरजे के घण्टों की ध्वनि सुनती, अचानक पूर्व स्मृतियों

का एक रेला उसे घेर लेता, उसके हृदय में मीठा-मीठा दर्द होने लगता और उसकी आँखें आँसुओं से छलछला उठतीं, परन्तु यह सब क्षण भर के लिए ही होता, फिर दुबारा सूनापन आ घिरता और जीवन की निस्सारता का भाव उमड़ने लगता। काली बिल्ली ब्रिस्का उससे अपना शरीर रगड़ती और 'घुर्र, घुर्र' का शब्द करती परन्तु ओलेन्का के ऊपर इस स्नेह प्रदर्शन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। यह वह चीज़ नहीं थी जिसकी उसे ज़रूरत थी! वह ऐसा प्यार चाहती थी जो उसके समस्त व्यक्तित्व, उसकी सम्पूर्ण आत्मा और संज्ञा को वशीभूत कर ले – जो उसे विचार दे सके, जीवन का एक उद्देश्य बता सके और उसके पुराने खून में स्फूर्ति पैदा कर सके। वह बिल्ली को झटकार कर अपने से दूर कर देती और खीझ कर कहती :

"भाग जा, मुझे तेरी ज़रूरत नहीं!"

और इसी प्रकार दिन पर दिन, वर्ष पर वर्ष बीतते चले गए जिनमें न आनन्द था और न विचार। जो कुछ भी मावरा महराजिन कहती वह मंजूर कर लेती।

जुलाई में एक दिन जब गर्मी ज़्यादा थी, शाम के समय, जबकि जानवर चर कर वापस लौट रहे थे और अहाते में धूल भर रही थी, किसी ने अचानक दरवाज़ा खटखटाया। ओलेन्का खुद दरवाजा खोलने गई और जब उसने बाहर देखा तो स्तब्ध रह गई : उसने स्मिरनिन, घोड़ों के डाक्टर को देखा जिसके बाल सफ़ेद हो गए थे और जो नागरिकों के से कपड़े पहने हुए था। अचानक सब कुछ याद हो आया। वह अवश होकर रो उठी और बिना एक भी शब्द कहे उसके सीने पर अपना सिर रख दिया। अपने भावों की उत्तेजना में उसने इस बात की तरफ़ गौर नहीं किया कि कैसे वे साथ-साथ घर में घुसे और चाय पीने बैठ गए।

"मेरे प्यारे व्लादीमीर प्लाटोनिच! कौन सा भाग्य तुम्हें यहाँ ले आया?" वह खुशी से काँपती हुई बड़बड़ाई।

मैं यहाँ हमेशा के लिए बस जाना चाहता हूँ, ओल्गा सेमियोनोव्ना," उसने उसे बताया। "मैंने अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया है और यहाँ रहने तथा अपने ही भरोसे अपने भाग्य को आजमाने आया हूँ। इसके अलावा अब मेरा लड़का स्कूल जाने लायक़ हो गया है। वह अब बड़ा हो गया है। मैंने अपनी स्त्री से समझौता कर लिया है, तुम जानती हो।"

"वह कहाँ है?" ओलेन्का ने पूछा।

"वह लड़के के साथ होटल में है और मैं मकान तलाश कर रहा हूँ।"

"ओह, मेरे प्यारे! मकान! मेरा घर क्यों नहीं ले लेते? इसमें तुम्हें आराम क्यों नहीं मिल सकता? क्यों, मैं कुछ भी किराया नहीं लूंगी!" ओलेन्का व्याकुल होकर चीख पड़ी और एक बार फिर रोने लगी। "तुम यहाँ रहना और छोटे मकान से मेरा काम मज़े से चल जायगा। ओह प्यारे! मैं कितनी खुश हूँ!"

दूसरे दिन छत पर रोग़न किया गया और दीवालों पर सफ़ेदी हुई और ओलेन्का कमर पर हाथ रखे हुए, हिदायतें देती हुई अहाते भर में घूमती फिरी। उसके चेहरे पर वही पुरानी मुस्कान नाच उठी थी और वह पूर्ण चैतन्य थी, मानो एक गहरी नींद से उठी हो। डाक्टर की बीबी आ गई – एक दुबली पतली, सादा स्त्री जिसके बाल छोटे और स्वभाव चिड़चिड़ा था। उसके साथ उसका बच्चा साशा था – एक दस साल का मोटा सा लड़का जो अपनी अवस्था से छोटा दिखाई दे रहा था। उसकी आँखें नीली थीं और फूले हुए गालों में गड्ढे पड़ते थे। वह लड़का अभी अहाते में घुसा ही था कि बिल्ली के पीछे दौड़ पड़ा और फ़ौरन ही वहाँ वातावरण में उसकी प्रसन्नता से भरी हुई उन्मुक्त किलकारी गूँज उठी।

"क्या यह तुम्हारी बिल्ली है, मौसी?" उसने ओलेन्का से पूछा।

"जब इसके बच्चे हों तो एक हमें ज़रूर देना। माँ चूहों से बहुत डरती हैं।"

ओलेन्का ने उससे बातें कीं और चाय पिलाई। उसका हृदय भावावेश से भर उठा और उसकी छाती में एक मीठा सा दर्द होने लगा मानो वह लड़का उसका अपना बच्चा हो। और शाम को जब वह मेज़ पर बैठ कर अपना पाठ याद करने लगा तो वह पास बैठी हुई उसकी तरफ़ अत्यधिक कोमलता और दया से देखने लगी और अपने आप बुदबुदा उठी :

"तुम कितने सुन्दर हो ... मेरे प्राण धन! ... इतनी सुन्दर छोटी सी जान और इतनी चतुर।"

"द्वीप ज़मीन का वह टुकड़ा होता है जो चारों तरफ़ पानी से घिरा रहता है," उसने ज़ोर से पढ़ा।

"द्वीप ज़मीन का वह टुकड़ा होता है," ओलेन्का ने दुहराया और यह पहली राय थी जिसे इतने सालों की खामोशी और विचारों के अकाल के बाद, उसने इतने विश्वास के साथ प्रकट किया था।

अब उसके अपने विचार थे। भोजन के समय उसने साशा के माँ बाप से बातें करते हुए बताया कि हाई स्कूलों में कितने कठिन पाठ पढ़ाए जाते हैं परन्तु यह कि फिर भी हाई स्कूल व्यावसायिक स्कूलों से अच्छे हैं क्योंकि हाई स्कूल की शिक्षा के द्वारा किसी के लिए भी जीवन का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। वह किसी भी लाईन में जा सकता है जैसे कि डाक्टरी या इंजीनियरिंग में।

साशा स्कूल जाने लगा। उसकी माँ अपनी बहन के पास खारकोव चली गई और फिर लौटकर नहीं आई। उसका बाप रोज़ जानवरों को देखने के लिए बाहर चला जाता था और कभी-कभी तीन-तीन दिन

तक बाहर ही रहता था। ओलेन्का को ऐसा लगा मानो साशा को पूरी तरह छोड़ दिया गया है, कि उसकी घर पर कोई पूछ नहीं है, कि वह भूखों मर रहा है। इसलिए वह उसे अपने साथ ले आई और अपने यहाँ एक छोटे से कमरे में रख लिया।

साशा छः महीने उसके साथ छोटे मकान में रहा। हर रोज़ सुबह होते ही ओलेन्का उसके सोने के कमरे में आती और उसे गहरी नींद में सोता पाती – चुपचाप गाल के नीचे हाथ रखे हुए। उसे उसको जगाने में दुख होता।

"साशेन्का," वह दुखी होकर कहती, "उठो प्यारे, स्कूल जाने का समय हो गया।"

वह उठता, कपड़े पहनता, प्रार्थना करता और फिर नाश्ता करने बैठ जाता, तीन गिलास चाय पीता ओर दो बड़े बिस्कुट और आधा मक्खन से भरा हुआ रोटी का टुकड़ा खाता। इस पूरे समय तक वह उनींदा रहता जिससे उसके मिज़ाज में चिड़चिड़ापन आ जाता।

"तुमने अपनी कहानी नहीं याद की, साशेन्का," ओलेन्का उसकी तरफ़ ऐसे देखती हुई कहती मानो वह बहुत लम्बी यात्रा पर जा रहा हो। "तुम्हारी वजह से मुझे कितनी मुसीबत उठानी पड़ती है! तुम्हें अपनी पूरी मेहनत से काम करना चाहिए, डार्लिंङ्ग और अपने मास्टरों की आज्ञा माननी चाहिए।"

"ओह, मुझे अकेला छोड़ दो!" साशा कह उठता।

फिर वह स्कूल जाने के लिए सड़क पर निकल आता। एक नन्हीं सी मूर्त्ति, एक बड़ी टोपी पहने और कन्धे पर एक बस्ता लटकाए हुए। ओलेन्का चुपचाप उसके पीछे चल देती।

"साशेन्का!" वह उसे पीछे से पुकारती और उसके हाथ में खजूर या मिठाई पकड़ा देती। जब वह स्कूल वाली सड़क पर पहुँच जाता तो

उसे एक लम्बी, तगड़ी औरत द्वारा अपना पीछा किए जाने पर शर्म आने लगती। वह मुड़ता और कहता :

"मौसी, तुम वापस चली जाओ, बाक़ी रास्ते मैं अकेला ही चला जाऊँगा।"

वह चुपचाप खड़ी हो जाती और तब तक उसकी तरफ़ देखती रहती जब तक कि वह स्कूल के फाटक में ग़ायब न हो जाता। आह! वह उसे कितना प्यार करती थी! उसके पहले के प्यारों में कोई भी इतना गहरा नहीं था। उसकी आत्मा ने कभी किसी भी भावना के सम्मुख इतनी तत्परतापूर्वक समर्पण नहीं किया था। न उसमें इतना त्याग और न इतनी प्रसन्नता ही थी जितनी कि अब, क्योंकि अब उसकी मातृ-भावना जागृत हो उठी थी। स्कूल की बड़ी टोपी और गालों में गड्ढे पड़ने वाले इस बालक के लिए वह अपनी पूरी ज़िन्दगी न्यौछावर कर सकती थी। वह इसके लिए अपनी ज़िन्दगी पूरी खुशी से और कोमतलतापूर्वक आँसू बहाते हुए दे सकती थी। क्यों? कौन बता सकता है क्यों?

जब वह साशा को आख़िरी बार देख लेती तो घर लौट आती – पूर्ण सन्तुष्ट और प्रसन्न, प्रेम से छलकती हुई। उसका चेहरा जो पिछले छः महीनों में सुन्दर दिखाई देने लगा था, मुस्कराता और चमकता रहता। उसके मिलने वाले लोग उसकी तरफ़ प्रसन्न होकर देखने लगते।

"गुड मार्निङ्ग, ओल्गा सेमियोनोव्ना, डार्लिङ्ग। कैसे मिज़ाज हैं, डार्लिङ्ग?"

"आज कल स्कूल में बड़े कड़े पाठ पढ़ाए जाते हैं," वह बाज़ार में खड़ी होकर बताने लगती। "यह बहुत कठिन है, कल पहले दर्जे में उनहोंने उसे एक कहानी ज़बानी याद करने के लिए दी थी और साथ

ही लैटिन का अनुवाद और एक रेखा गणित का सवाल। तुम जानते हो कि एक छोटे से बच्चे के लिए यह बहुत मुश्किल है।"

और वह मास्टरों, पढ़ाई और स्कूली किताबों के बारे में वही बातें करने लगती जो साशा कहा करता था। तीन बजे वे दोनों साथ-साथ खाना खाते, शाम को दोनों साथ-साथ सबक़ याद करते और रोते। जब वह उसे बिस्तर पर सुला देती तो बहुत देर तक खड़ी हुई उस पर क्रॉस का निशान बनाया करती और प्रार्थना किया करती। फिर वह अपने बिस्तर पर चली जाती और उस अस्पष्ट सुदूर भविष्य का स्वप्न देखती रहती जब साशा अपनी पढ़ाई समाप्त करके एक डाक्टर या इंजीनियर बन जायगा, उसके पास एक बड़ा मकान, एक गाड़ी और घोड़े होंगे, उसकी शादी हो जायगी और बच्चे होंगे ... वह इन्हीं बातों को सोचते-सोचते गहरी नींद में सो जाती और उसकी बन्द आँखों से आँसू बह-बह कर गालों पर ढुलक आते। काली बिल्ली उसकी बगल में लेटी हुई 'मर्र, मर्र' किया करती।

अचानक दरवाज़े पर खटखटाने की तेज़ आवाज़ हो उठती।

ओलेन्का चौकन्नी होकर उठ बैठती। उसकी साँस टंगी की टंगी रह जाती, दिल धड़क उठता। आधे मिनट बाद दुबारा खटखटाने की आवाज़ आती।

"ज़रूर खारकोव से तार आया होगा," वह सिर से पैर तक काँपती हुई सोचने लगती। "साशा की माँ ने उसे खारकोव से बुला भेजा मालूम पड़ता है ... ओह, भगवान रहम करो।"

वह हताश हो उठती। उसका सिर, उसके हाथ और उसके पैर सुन्न

पड़ जाते, और वह अनुभव करने लगती कि वह दुनियाँ में सबसे अभागी स्त्री है। लेकिन दूसरा मिनट बीत जाता, आवाज़ फिर सुनाई देती : अरे यह तो वह घोड़ों का डाक्टर था जो क्लब से लौट कर घर आया था।

"ओह, भगवान को धन्यवाद है!" वह सोचती।

और धीरे-धीरे उसके हृदय पर से बोझ हटने लगता और उसके हृदय में शान्ति छा जाती। वह साशा के बारे में सोचती हुई अपने बिस्तर पर चली जाती जो दूसरे कमरे में गहरी नींद में सो रहा था और कभी-कभी नींद में चीख उठता :

"मैं तुम्हें ठीक कर दूँगा। भाग जाओ! चुप रहो!"

1899

च्येख़फ़ एक अतुलनीय कलाकार है। जी हाँ, निश्चित रूप से अद्वितीय! वह जीवन के कलाकार हैं। उनकी रचनाओं का गुण यह है कि वह बोधगम्य और भावनाओं के निकट हैं, न केवल प्रत्येक रूसी के लिए, बल्कि प्रत्येक मानव के लिए ...।

लेफ़ तलस्तोय

मैंने आपकी ''महिला'' पढ़ी है... आप अपने छोटे अफ़सानों के ज़रिये बड़ा काम कर रहे हैं। आप लोगों में इस सोई-सोई सी अधमरी ज़िन्दगी के लिये कराहियत पैदा कर रहे हैं - नरक में जाये यह ज़िन्दगी!...आपकी कहानियां खुशनुमा शीशे के काम के इत्रदानों की तरह हैं, जिनमें ज़िन्दगी की तमाम खुशबुयें भरी हुई हैं। और यक़ीन मानिये एक तेज़ नाक हमेशा उनमें वह लतीफ़, तेज़ और स्वास्थ्यकर खुशबू पायेगी जोकि ''असली चीज़'' की खुशबू है। उनमें उसे वह सचे तौर पर क़ीमती और ज़रूरी चीज़ मिलेगी जोकि हमेशा आपके इत्रदानों में मौजूद रहती है।

म० गोरिकी

मूल्य: रूपये 150/-